
नई पीढ़ी के निर्माण का मासिक
नंदन
परी-कथा विशेषांक
अधिक पृष्ठ
जुलाई '९१
दस रुपए
हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन


Lay's
BRAND ®
Twin-Contest
...because
one
is not enough!
CONTEST 1
Send a funny joke, win a great prize
TEN
1st. prizes
1 School Bag
TWENTY
2nd prizes
1 T-shirt
100
Consolation Prizes
MEGA CONTEST
Complete the slogan in not more than 10 words and win the Mega Prize!
'Ek Bar Khaoge To Khate Reh Jaoge because ....'
1 MEGA PRIZE
25 Audio Cassettes of the latest hit songs!
No One Can Eat Just One
Terms and Conditions : Entries should be sent by ordinary post to Lay's Nandan Contest, Post Box No. 27, DLF Qutab Enclave, Phase I, Gurgaon - 122002 or by e-mail to fritolayfunsite@intl.fritolay.com. Entries eligible for prizes shall be selected by an independent panel of judges. Decision of the judges should be final. Employees/relatives of judges/Frito Lay India and its associate co.s are not eligible to take part in the contest. All rights in the entries shall rest in the Company. The Company shall not be liable for any loss of entries in post. Last date of entries is 31st October, 1999.
Mudra : FLI : 1630 N

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स

डायमंड कॉमिक्स

मई माह में पढ़ें















मुफ़्त पोस्टर







अन्य कॉमिक्स :

- मैण्ड्रेक-76
- जेम्स बॉण्ड-79

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और बचायें रु. 200/- वार्षिक

अंकुर बाल बुक क्लब घर बैठे **डायमण्ड कॉमिक्स** पाने का सबसे सरल तरीका है। आप गांव में हैं या ऐसी जगह जहाँ **डायमण्ड कॉमिक्स** नहीं पहुंच पाते। डाक द्वारा वी.पी.पी. से हर माह **डायमण्ड कॉमिक्स** के 5 नये कॉमिक्स पायें और मनोरंजन की दुनियां में खो जायें, साथ ही ढेरों इनाम पायें।

हर माह 5 कॉमिक्स (50/- रु. की) एक साथ मंगवाने पर 5/- **रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री (लगभग 6/-)**। लगातार 12 वी.पी. छुड़ाने पर 13वीं वी.पी. फ्री।

1 वर्ष में महीने	बचत (रु.)	कुल बचत (रु.)
12	5/- (छूट)	60.00
12	6/- (डाक व्यय)	72.00
1	50/- (13वीं वी.पी. फ्री)	50.00
सदस्यता प्रमाणपत्र व अन्य आकर्षक 'उपहार', स्टिकर और '**डायमण्ड पुस्तक समाचार**' फ्री		20.00
		202.00

सदस्य बनने के लिए आप केवल संलग्न कूपन को भरकर भेजें और **सदस्यता शुल्क** के 10 रु. मनी आर्डर के रूप में अवश्य भेजें। इस योजना के अन्तर्गत हर माह 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी, जिसमें 5 कॉमिक्स होंगी।

जी हाँ! मैं **"अंकुर बाल बुक क्लब"** का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूँ। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुडाने का संकल्प करता/करती हूँ।

नाम ______________________

पता ______________________

____

डाक ____________ जिला ____________

पिन कोड ______________________

सदस्यता शुल्क 10 रु. मनी आर्डर से भेज रहा/रही हूँ।

मेरा जन्म दिन ______________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

डायमंड कॉमिक्स (प्रा.) लि., ए-11, सेक्टर-58, नोएडा-201 301 (उ. प्र.)

बाल सभा


कुणाल


मानसी


स्वाति


सुरभि


कुश

पत्र मिला

☐ मई '९९ का प्राचीन-कथा विशेषांक बहुत अच्छा लगा। चित्र-कथाओं तथा एलबम ने मन मोह लिया। 'तेनालीराम' की सूझबूझ ने चकित कर दिया।

—जियाउल होदा, मोतिहारी

☐ दूसरी कक्षा में पढ़ती हूं। पहले मेरे भैया तथा दीदी ही 'नंदन' पढ़ते थे। अब तो मैं भी इसे पढ़ने लगी हूं। 'चीटू-नीटू' मुझे बहुत अच्छा लगता है।

—विभा वैश्य, लखनऊ

☐ 'नंदन' के नए अंक में 'कान में कहा', 'ठहर गया जल', 'आवाज का डर' आदि कहानियां बहुत रोचक थीं। एलबम में राधाकृष्ण मंदिर को पाकर मन मयूर नाच उठा।

—मुकेशकुमार, पाली (राज)

☐ प्राचीन-कथा विशेषांक में छपी सभी कहानियां लाजवाब और प्रशंसनीय थीं। आवरण पृष्ठ ने मन मोह लिया। यह अंक वास्तव में संग्रहणीय था।

—हेमंत दुबे, गया

☐ मुझे 'नंदन' कितना पसंद है, इसे शब्दों में नहीं लिख सकती। 'आप कितने बुद्धिमान हैं' तथा 'तेनालीराम' मेरा ही नहीं सारे घर का मनोरंजन करते हैं।

—नम्रता कौल, श्रीनगर

☐ बच्चों की सभी पत्रिकाओं में 'नंदन' बेजोड़ है। इसमें सबसे मनोरंजक और ज्ञानवर्धक सामग्री होती है। मई '९९ अंक में विशेष लेख 'भक्ति और कला का अनूठा संगम' ज्ञानवर्धक था।

—हरमिंदर सिंह, जालंधर

☐ 'इनकी माया : कहीं धूप कहीं छाया', 'श्री राधाकृष्ण मंदिर जैसी झांकियां, ढाई दर्जन कहानियां, दसियों स्तम्भ ! क्या कुछ नहीं था प्राचीन-कथा विशेषांक में। इस अंक को मैं हमेशा संभालकर रखूंगी।

—हेमलता, अल्मोड़ा

☐ ताजा अंक पढ़कर मन झूम उठा। 'लौट आई मां', 'जा वानर बन', 'दशरथ के राज में' कहानियां अच्छी थीं। चित्र-कथाओं के तो क्या कहने ! 'अजब-अनोखी दुनिया' में रोचक बातें थीं।

—रोमा बनर्जी, कलकत्ता

☐ 'चीटू-नीटू' ने खूब हंसाया। 'ठहर गया जल' कहानी बहुत अच्छी लगी। 'देखा शीशे में' चित्रकथा का संदेश दिल को छू गया।

—रमनकुमार, इलाहाबाद

☐ 'नंदन' यानी ज्ञान का भंडार। यही दुनिया की एकमात्र पत्रिका है जिसे पढ़ने से बालकों की कल्पना शक्ति का विकास होता है। यह बच्चों के लिए ही नहीं, अपितु बड़ों के भी मनोरंजन का सस्ता और सुलभ साधन है।

—कमल नारायणन, चेन्नई

☐ हाल ही में 'नंदन' पढ़ना शुरू किया है। 'कौन पहले आएगा', 'उसने वर मांगा', 'सतयुग का कुमार', 'गुफा से बाहर', 'हंसी की बात' जैसी कहानियां मन को छू गईं। काश ! मैं इस पत्रिका को और पहले से पढ़ रहा होता।

—कैलाश महापात्र, भुवनेश्वर

☐ मई '९९ अंक की कविताएं अच्छी लगीं। 'इस अंक में विशेष' के अंतर्गत छपी सामग्री मैं सबसे पहले पढ़ता हूं।

—राजेश माहेश्वरी, जूनागढ़

इनके पत्र भी उल्लेखनीय रहे : रामकुमार मौर्य, मेरठ; अविकुमार, महनार; रिंकू 'सूरज', नई दिल्ली; नरेश त्रिपाठी, वाराणसी; सागर भारद्वाज, नांगलोई, नई दिल्ली।

आगामी अंक

☐ **दो पृष्ठों की रंगीन झांकी—'अपना हिन्दुस्तान कहां, बसा हमारे गांवों में।'**

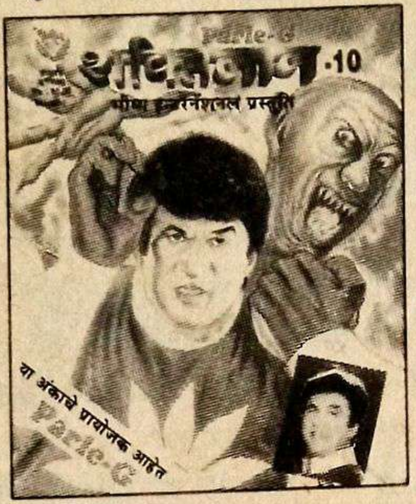
☐ जान गांव में कारखाना खोलना चाहता है। सूरदास की जमीन लेना चाहता है मगर वह तैयार नहीं होता। फिर क्या हुआ ? महान कथाकार प्रेमचंद के उपन्यास का सार 'विश्व की महान कृतियां' में।

☐ **तेनालीराम की सूझ और चीटू-नीटू का नया करिश्मा।**

डायमंड कॉमिक्स में हर माह पढ़िए

मुकेश खन्ना की भीष्म इन्टरनैशनल प्रस्तुति

शक्तिमान



हर सप्ताह दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले सीरियल शक्तिमान- एपिसोड- नं. 1 से डायमंड कॉमिक्स में रंगीन चित्रकथा के रूप में प्रकाशित किए जा रहे हैं। आप एपिसोड नं. 1 से पूरे सीरियिल का मजा ले सकते हैं।

पूर्व प्रकाशित शक्तिमान कॉमिक्स नं. 1 से 9 उपलब्ध, अपने निकट के बुक स्टॉल से प्राप्त करें या हमें लिखें।

मनोरंजन से भरपूर अनूठी पत्रिका

कॉमिक वर्ल्ड



विश्व प्रसिद्ध कॉमिक चरित्रों जैसे फैण्टम, मैण्ड्रेक, जेम्स बाण्ड, टार्जन, ब्लोंडी, डेनिस द मेनिस,टॉम एंड जैरी, फ्लैश गॉर्डन, आर्चीज़, गारफ़ील्ड, मौडेस्टी ब्लेज़ इत्यादि और सुप्रसिद्ध भारतीय कॉमिक चरित्र जैसे चाचा चौधरी, बिल्लू, पिंकी, रमन, मोटू-पतलू, छोटू-लंबू, हितोपदेश, पंचतंत्र, बेताल, तेनालीराम, अकबर-बीरबल आदि, साथ में अमर चित्रकथाएं जैसे गणपति, कृष्ण, युधिष्ठिर इत्यादि और ज्ञान-विज्ञान व मनोरजन से भरपूर देश-विदेश की खबरें, कार एंड बाईक्स, स्पोर्टस, फिल्म, पैन-फ्रैंडस, और ढेर सारी प्रतियोगिताएं, पहेलियां और अनेक सामग्री सब एक ही पत्रिका के 120 रंगीन पृष्ठों में हर माह पढ़ें, मात्र 20/- रुपए में।

वार्षिक सदस्यता ऑफर

बचत व इनाम एक साथ! अपने लिए वार्षिक सदस्यता लीजिए और कीजिए बचत ही बचत। साथ ही बनाइए दो और मित्रों को **कॉमिक वर्ल्ड** का सदस्य और पाइए मुफ्त में एक पार्कर पेन (मित्रों की सदस्यता के लिए आप इस फॉर्म की फोटोस्टेट कॉपी का प्रयोग कर सकते हैं।) बस फार्म भरकर सही स्थान पर (✓) का चिन्ह लगाइए।

जी हां, मैं **कॉमिक वर्ल्ड** की वार्षिक सदस्यता चाहता / चाहती हूं और ☐अंग्रेजी ☐हिंदी ☐बंगाली ☐मलयालम में अपने / मित्रों की सदस्यता के लिए डिमांड ड्राफ्ट / चैक नं.................... तिथि.................... का ☐800/- रुपए का (5 वर्ष) ☐500 रुपए (3 वर्ष) ☐ 360 रुपए (2 वर्ष) ☐ 200 रुपए (एक वर्ष) ☐ 'कॉमिक वर्ल्ड' देय नई दिल्ली के लिए भेज रहा हूं / रही हूं।

कृपया दिल्ली के बाहर से बनने वाले सदस्य अपनी सदस्यता रकम में 10/- रुपए अतिरिक्त जोड कर भेजें।

मेरा विवरण :

नाम :.. जन्मतिथि ....

पता : ....

....

....

पिन .... फोन .... हस्ताक्षर ....

मुफ्त

दो सदस्य बनाइए और पाइए एक पार्कर पेन

डायमंड कॉमिक्स (प्रा.) लि. ए-11, सेक्टर-58, नौएडा-201301 (उ.प्र.)

आओ बात करें

डाक बाबू का छोटा-सा घर। उस घर में एक बच्ची पैदा हुई। थोड़ी आमदनी थी। पर पहली बेटी हुई थी। पिता ने लड्डू बांटे। मां ने गीत गवाए। लड़की का नाम रखा—पारो। जैसा कि घरों में होता है, वैसे ही पारो बढ़ने लगी। फिर पढ़ने लगी। इसके बाद डाक बाबू के यहां कई बच्चे और हुए। आमदनी भी बढ़ी।

पारो बहुत शर्मीली-लजीली थी। कभी किसी से झगड़ती न थी। हां, सबकी मदद करने को हर समय तैयार रहती। पढ़ने में सबसे तेज थी। पर पिता उसे पढ़ाना नहीं चाहते थे। उन दिनों लड़की को बोझ समझा जाता था। फिर भी पारो खूब पढ़ी। एक दिन उसका ब्याह कर दिया गया। धीरे-धीरे पारो ने अपना घर बसा लिया। घर से उसे बहुत लगाव था। हर समय सजाने-संवारने में लगी रहती। घर से बाहर कम जाती थी।

पारो ने भी एक बेटी को जन्म दिया। गोरी-चिट्टी, दूध से धुली हो जैसे। वह और उसकी बेटी—यही थी पारो की दुनिया। उसकी बेटी बड़ी हुई। ब्याही और परदेस चली गई। पारो अकेली पड़ गई।

पति काम-धंधे में लगा रहता। अचानक एक दिन पारो पति से बोली—"मैं चली जाऊंगी तो तुम बहुत रोओगे।"

पति ने पूछा—"तुम कहां जाओगी?" पारो ने कुछ उत्तर नहीं दिया। बात आई-गई हो गई।

और अचानक एक दिन पारो छूमंतर हो गई। वह कहां गई, कैसे गई—कोई नहीं जान पाया। उसका पति हैरान-परेशान। वह रोता रहता। उसने काम-काज छोड़ दिया। कभी-कभी समय काटने को पढ़ा करता—जाने वाले कभी लौटकर नहीं आते। आती हैं बस उनकी यादें। उसे नहीं मालूम कि पारो की कथा भी परी-कथा ही है।

परियां घूमने-फिरने की शौकीन होती हैं। धरती और आकाश में कहां नहीं घूमतीं। कोई न कोई परी धरती पर आकर रहना चाहती। तब वह परी-रानी से अनुमति लेकर आ जाती। उसे अपना चोला छोड़ना पड़ता।

पारो ने चालीस साल धरती पर बिता लिए थे। उसे परी-लोक लौटना ही था। लेकिन उसका घर तो धरती पर छूट गया था। पति को क्या मालूम कि वह परी-लोक से आई थी। उसके बाल तो सुनहरे थे नहीं। उसके पास कोई जादुई छड़ी भी कभी नहीं देखी। वह तो डाक बाबू के घर में पैदा हुई मामूली लड़की थी।

पति ने घर को जस का तस सजाकर रखा। कुछ भी बदला नहीं। हर समय उसे लगता कि पारो लौट आएगी। क्योंकि उसे घर से बहुत प्यार था।

पारो अपने घर में आती थी। पर वह अब बोल नहीं सकती थी। किसी को दिखाई भी न देती। आती थी और चली जाती।

कई बरस बाद पारो की बेटी परदेस से लौटी। वह सुनहरे डिब्बे में बंद एक उपहार लेकर आई थी। मां के लिए, यानि पारो के लिए। पर पारो तो वहां थी ही नहीं। डिब्बा खोला गया। उसमें चांदी से बना नक्काशीदार घर था। दीवारों पर मोती-माणिक जड़े थे। रोशनी में खूब चमकते। अंधेरे में भी झिलमिल-झिलमिल करते रहते। मन बहलाने के लिए उस घर में मधुर संगीत भी बजता था। एक लड़की प्यानो बजाती। छोटी-सी एक गुड़िया उसकी धुन पर हाथ नचाती। थिरक-थिरककर नृत्य करती।

समय बीतता रहा। चांदी के उस घर पर लिख दिया—'पारो का घर'। भला पारो उस घर में कभी रही नहीं। उसका घर कैसे हुआ?

परी-कथा विशेषांक एक नई दुनिया में ले जाता है। एक से बढ़कर एक रोचक और रहस्य से भरी कहानियां। एकदम नया खेल-'परीलोक की सैर।' ....और राष्ट्रीय संग्रहालय की झांकी जहां बेशकीमती धरोहर संजोई गई है। लिखना, विशेषांक कैसा लगा?

—तुम्हारे भइया

जयप्रकाश भारती

परी-कथा विशेषांक

जुलाई '९९

वर्ष : ३५ अंक : ९

सम्पादक

जयप्रकाश भारती

नंदन



कहां क्या है

कहानियां

कविताएं

इस अंक में विशेष

स्तम्भ

आवरण : राजेश गौड़

सहायक सम्पादक : क्षमा शर्मा

वरिष्ठ उप-सम्पादक : डा. चन्द्रप्रकाश; उप-सम्पादक : डा. नरेन्द्र कुमार; विमल चतुर्वेदी; अनिलकुमार जायसवाल;

वरिष्ठ चित्रकार : नारायण बड़ोदिया



उड़ो हाथी, उड़ो

—जयप्रकाश भारती



किन्नौर में रहता था हीरामन। नाम से हीरामन, पर काम बढ़ई का। जंगल में जाता, लकड़ी काटता। लकड़ी छीलता और छोटे-छोटे खिलौने बना लेता। या फिर घरेलू काम की छोटी-मोटी चीजें। इस तरह उसका और उसकी पत्नी हिरमा का काम चल जाता।

एक बार झील किनारे हीरामन ने एक पेड़ देखा। पेड़ की लकड़ी से खुशबू आती थी। उसने सोचा—'क्यों न इस पेड़ की थोड़ी लकड़ी काट लूं। अच्छी-अच्छी चीजें बन जाएंगी। खुशबू के मारे ग्राहक चंदन की लकड़ी समझेंगे। अच्छे दाम मिल जाएंगे।'

दूसरे दिन मुंह अंधेरे ही हीरामन घर से निकल पड़ा। झील के निकट जा पहुंचा। उसने पेड़ पर आरा चलाना शुरू ही किया था कि आवाज आई—"पेड़ मत काटो, पेड़ मत काटो।" अचानक हीरामन की आंखें चौंधिया गईं। एक-एक करके दर्जन भर परियां झील में से निकल पड़ीं।

उनमें से एक बोली—"अरे हीरामन, इस पेड़ को क्यों काटते हो? यहां तो हम नाचती-गाती हैं। यह पेड़ हमें बहुत प्रिय है।"

हीरामन बोला—"क्यों न काटूं? लकड़ी काटकर मैं खिलौने बनाऊंगा। वे बिक जाएंगे तो मेरी रोजी-रोटी चलेगी।"

परियां उसकी खुशामद करने लगीं। हीरामन अपनी बात पर डटा रहा। उसे थोड़ा लालच भी आ गया था। एक परी बोली—"तुम हमारे इस पेड़ को मत काटो। हम तुम्हें कोई अनोखा उपहार देंगी। बोलो, तुम्हें क्या चाहिए?"

हीरामन तपाक से बोला—"चांदी के एक हजार सिक्के दे दो।"

परी ने कहा—"परी-लोक में चांदी के सिक्के तो चलते नहीं, वे हम कहां से लाएं?"

हीरामन ने सिर खुजलाया। फिर बोला—"तो मुझे एक किलो सोना ही दे दो।"

"सोना भी हमारे पास नहीं होता। हां, बढ़िया-बढ़िया फूल होते हैं, वे हम दे सकती हैं।" —परी बोली।

हीरामन ने उत्तर दिया—"फूल तो इस जंगल में क्या कम हैं! फिर मेरे वे किस काम के? कोई ऐसी चीज दो, जो काम आ सके।"



परी बहुत देर तक सोचती रही, ऐसी कौन-सी चीज है जो हीरामन के मन को भा जाए। अचानक उसे कुछ सूझा। बोली—"हाथी ले लो।"

हीरामन हंसा—"मेरे पास अपने खाने-पीने को है नहीं, हाथी को कौन खिलाएगा।" क्षण भर कुछ सोचता रहा, फिर कहा—"अच्छा, मैं अपनी घरवाली हिरमा से पूछकर कल बताऊंगा।"

हीरामन घर पहुंचा। वहां पत्नी हिरमा को सारी बात बताई। उसे पहले तो पति की बातों पर विश्वास ही नहीं हुआ। बहुत कहने-समझाने पर वह बोली—"तुम हाथी ले लो न। हाथी हम राजा को भेंट कर देंगे, वह हमें अच्छा इनाम देगा। कुछ तो दरिद्रता कम होगी।"

हीरामन को बात भा गई। बोला—"तुमने अच्छी सलाह दी।"

अगले दिन सवेरे ही हीरामन फिर आरा लेकर झील पर जा पहुंचा। परियां तो उसका इंतजार ही कर रही थीं। हीरामन ने कह दिया—"मुझे एक हाथी दे दो।"

परियां झटपट उड़ती हुई गईं। कुछ ही देर में वहां बढ़िया सफेद हाथी आ गया। उसे देख, हीरामन फूला न समाया। वह हाथी को अपने घर ले गया।

'बढ़ई के घर हाथी आया, हिरमा के घर हाथी आया।' —चारों तरफ शोर मच गया। क्या बच्चे क्या बड़े, हाथी देखने वालों का तांता लग गया। बात राजा के कानों तक जा पहुंची। राजा ने हीरामन को बुलाया। हीरामन हाथी को लेकर गया।

राजा बोला—"अरे हीरामन, इस हाथी को तुम कैसे पालोगे? इसे तुम हमें दे दो। तुम्हारे खाने-पीने का प्रबंध हम कर देंगे।" राजा ने धन के साथ कुछ बढ़िया कपड़े भी हीरामन और उसकी पत्नी के लिए दिए।

नगर में डोंडी पिटवाई गई—"कल राजा जी की सवारी हाथी पर निकलेगी। सारे घर और दुकानें सजाई जाएं।"

लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे। कोई कहता—"परी-लोक का हाथी आएगा, यह तो अच्छी बात है। घर-घर समृद्धि आएगी।" पर कोई-कोई टोक भी देता—"परी-लोक का हाथी है तो उड़ता भी होगा। पता नहीं क्या-क्या साथ उड़ा ले जाएगा।"

खूब चहल-पहल थी। हर आदमी उत्सुकता से सुबह होने का इंतजार कर रहा था।

दूसरे दिन ही शान-शौकत के साथ राजा की सवारी चली। आगे-आगे बाजा बज रहा था। राजा सफेद हाथी पर सवार था। लोग राजा के साथ ही हाथी को देखकर भी हैरान थे। हाथी पर मखमल की सुनहरी झूल थी। सोने की घंटियां मधुर आवाज कर रही थीं। राजा की यह सवारी जिधर से भी गुजरती, स्त्री-पुरुष फूल बरसाने लगते।

राजा खुश था, बहुत खुश। सवारी नगर सेठ की हवेली के आगे से गुजरी। तभी किसी की आवाज सुनाई दी—"अरे, परी-लोक का हाथी कहां है! इसके पंख तो हैं ही नहीं।"

राजा ने सुना तो सोच में पड़ गया। उसने सवारी को लौटने का हुक्म दे दिया। राजमहल पहुंचा। हीरामन को बुलवाया। हीरामन आया तो राजा को देखते ही सकपका गया। राजा बोला—"तुमने हमें धोखा दिया है। यह परी-लोक का हाथी कैसे हो



सकता है। इसके पंख कहां हैं ? अगर तुम पंख नहीं लाओगे तो कठोर दंड मिलेगा।"

हीरामन ने तरह-तरह से राजा को सफाई दी। लेकिन राजा तभी शांत हुआ, जब उसने कहा कि वह पंख लेकर आएगा।

हीरामन अगले दिन ही फिर झील पर जा पहुंचा। उसने पेड़ पर आरा चलाना शुरू किया, तभी परियां आ गईं। वे बोलीं—"अब तुम्हें क्या परेशानी है? तुमने तो वायदा किया था कि अब कभी इस पेड़ को नहीं काटोगे।"

हीरामन ने सारी आपबीती कह सुनाई। परियों ने बड़े-बड़े दो पंख उसे दे दिए। उससे वायदा कराया कि अब कभी वह कुछ मांगने नहीं आएगा।

हीरामन पंख लेकर दरबार में पहुंचा। सफेद-सफेद पंख देखकर राजा बहुत खुश हुआ। उसने हीरामन को मुहरों की एक थैली भेंट की। घोषणा करवाई कि राजा की सवारी कल फिर निकलेगी।

इस बार फिर बहुत ठाठ-बाट के साथ राजा की सवारी चली। जिधर देखो, उधर ही भीड़ टूटी पड़ रही थी। परी-लोक का हाथी सभी देखना चाहते थे। हर ओर राजा का जय-जयकार सुनाई दे रहा था। राजा भी खूब अकड़कर हौदे में बैठा था।

ठुम्मक-ठुम्मक चलते हुए, सेठ की हवेली पर सवारी जा पहुंची। वहां से फिर आवाज आई—"अरे पता नहीं, हाथी के पंख असली हैं या नकली ? हाथी उड़कर दिखाए, तब हम जानें।"

राजा को बात चुभी। उसने महावत से कहा कि हाथी को उड़ने का इशारा करो। महावत ने हाथी को अंकुश से हूला। हाथी ने पंख फैलाए और ऊपर उठने लगा।

राजा को खुद विश्वास न था कि हाथी उड़ सकता है। वह इसके लिए पहले से तैयार न था। हाथी जैसे-जैसे ऊपर को उड़ा, राजा भयभीत हो गया। उसने चिल्लाकर कहा—"रोको-रोको, उड़ाओ मत।"

महावत ने रोकने की भरपूर कोशिश की, लेकिन हाथी ऊपर को उड़ता ही चला गया। देखने वालों ने इसे हाथी का नया करतब समझा। वे खुशी से चिल्लाने लगे, तालियां बजाने लगे। पर हाथी उड़ता गया, उड़ता गया। नहीं मालूम कि वह आसमान में कहां गायब हो गया। ●



महेश भूपति

टेनिस में विश्व का श्रेष्ठ खिलाड़ी



मलुंगाई

— विमला मेहता

हजारों बरस पहले फिलीपींस देश के पहाड़ी कसबे बागियो में एक बूढ़ा रहता था। उसका नाम मलुंगाई था। उसकी पत्नी का नाम मगंदा था। उनके कोई संतान नहीं थी। पेड़-पौधों को ही अपनी संतान मान कर वे उनकी देखभाल करते थे।

बागियो में फूलों के अनेक वृक्ष थे। जून-जुलाई के माह में ये वृक्ष फूलों से लद जाते थे। परियों को वृक्ष प्रिय थे। रात में कई परियां झुंड बनाकर धरती पर आती थीं। भोर की किरणें फूटने से पहले ही परीलोक लौट जाती थीं।

इनमें लालपरी को धरती के खरगोश और तितलियां बहुत अच्छी लगती थीं। मनुष्य लोक की नदियों, तालाब और पहाड़ों में घूमना बहुत भाता था। वह मनुष्य लोक में अधिक समय बिताना चाहती थी परंतु परीलोक के नियमानुसार उसे सूरज उदय होने से पूर्व ही लौट जाना होता था।

एक दिन परी अपनी सहेलियों के साथ परीलोक लौटी तो देखा कि वह अपनी छड़ी धरती पर भूल आई है। वह बहुत चिंता में पड़ गई। दौड़ी-दौड़ी परी मां के पास पहुंची।

सारी बात सुनकर परी मां ने कहा—"तुमने लापरवाही से छड़ी मनुष्य लोक में छोड़ कर अपराध किया है। वह किसी के हाथ पड़ गई तो उसका दुरुपयोग हो सकता है। कल प्रातःकाल उसे ले

आना। यदि छड़ी सुरक्षित नहीं मिली, तो तुम फिर कभी धरती पर नहीं जा सकोगी।"

यह सुनकर परी की आंखों में आंसू आ गए। अगली रात वृक्षों के पास छड़ी नहीं थी। आस-पास देखा, सब जगह ढूंढ़ लिया, परंतु छड़ी नहीं मिली।

हार कर वह वहीं एक वृक्ष के नीचे बैठ गई। उसकी आंखों से मोती के समान आंसू बिखर रहे थे। पौ फटने में थोड़ा-सा समय शेष था।

इतने में एक वृद्ध व्यक्ति आया। बोला—"मेरा नाम मलुंगाई है। मैं खेती करता हूं। तुम्हें पहले कहीं देखा नहीं है। तुम कौन हो और क्यों रो रही हो?"

परी बोली—"मैं लाल परी हूं। सहेलियों के साथ इस सुंदर धरती पर खेलने आती हूं। रंग-बिरंगे फूल, पेड़-पौधे मुझे बहुत अच्छे लगते हैं। कल खेलते समय मेरी छड़ी खो गई है। वह नहीं मिली तो मैं फिर धरती पर कैसे आ सकूंगी! क्या तुम उसे ढूंढ़ने में मेरी मदद करोगे?"

मलुंगाई मुसकरा दिया। बोला—"कल मैं प्रातःकाल खेतों की ओर जा रहा था। राह में धीमा-धीमा मधुर संगीत सुनकर मैं ठिठक गया। देखा कि वहां एक अलौकिक सुंदर छड़ी पड़ी है। उसमें से सतरंगी रोशनी फूट रही थी। मैंने ऐसी वस्तु पहले कभी नहीं देखी थी। अतः मैंने उसे सुरक्षित स्थान पर छिपा दिया है।"

सुनकर परी खुशी से नाच उठी। झूमते हुए मधुर स्वर में बोली—"कृपा कर आप उसे लौटा दें।"

मलुंगाई ने पल भर कुछ विचार किया, फिर बोला—"तुम प्रतिदिन हमारी धरती पर आती हो। एक दिन मुझे भी परी लोक की सैर करा दो। फिर मैं तुम्हारी छड़ी लौटा दूंगा।"

परी ने कहा—"हम परियों के पास उड़ने की शक्ति है। हम तीनों लोकों में विचरण कर सकती हैं। यदि आप भी उड़ सकें, तो अवश्य चलिए। आपका स्वागत है।"

मलुंगाई ने निराश स्वर में कहा—"मैं उड़ तो नहीं सकता।" फिर तनिक सोचकर बोला—"तुम्हारे परीलोक में एक से बढ़कर एक सुंदर वस्तुएं होंगी। तुम हमारी इस दुनिया के लिए कोई उपहार ला सकती हो?"

परी बोली—"बाबा, मैं आपको क्या दूं? आपके यहां तो सब कुछ है, फिर भी मैं परी मां से पूछकर आ सकती हूं।"—कहकर वह उड़ गई।

दूसरी रात परी फिर धरती पर लौट कर आई। मलुंगाई वृक्ष के नीचे बैठा, उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। परी बोली—"बाबा! मां ने कहा है कि आप सोना, चांदी, हाथी, घोड़े, अन्न, वस्त्र कुछ भी मांग लें। मैं कल लेती आऊंगी। फिर तो छड़ी दे देंगे।"

मलुंगाई ने कहा—"मुझे यह सब कुछ नहीं चाहिए। मुझे तो अपनी धरती के लिए ऐसा उपयोगी वृक्ष चाहिए जिसका हर भाग काम में आ सके, जो मनुष्य जाति के लिए कल्याणकारी हो। गरीब व्यक्ति जिसके फल, फूल, तने और पत्तियों को बिना मूल्य दिए पा सकें, जो सरलता से उगाया जा सके और देखभाल करने की कोई आवश्यकता न हो। जो गुणकारी हो। जो हमारी सम्पूर्ण धरती पर फैले।"

परी ने कहा—"ऐसा वृक्ष तो परी मां ही दे सकती हैं। मैं कुछ नहीं जानती। कल मैं अवश्य लेकर आऊंगी। अब कृपा कर छड़ी लौटा दें।"

मलुंगाई सिर हिलाते हुए बोला—"क्षमा करना, मैं तो इस हाथ दे और इस हाथ ले वाले व्यवहार में विश्वास करता हूं। कल वृक्ष लाओ और छड़ी ले जाओ।"

उसने परीलोक जाकर अपनी मां को सारी बात बता दी। मां बोली—"यह तो ठीक नहीं हुआ। परीलोक और मनुष्य लोक के पेड़-पौधे तो कभी एक से नहीं हो सकते। फिर भी तुम अपनी दादी से पूछ लो।"

वह रोती-बिलखती दादी के पास आई। दादी ने प्यार से गोद में बिठाते हुए सारी कहानी सुनी। बोली—"कल मैं तुम्हारे साथ चलूंगी।"

दूसरे दिन लाल परी और उसकी दादी धरती पर आईं। वहां मलुंगाई नहीं था। दोनों ने आस-पास की झोंपड़ियों में देखा। एक टूटी-फूटी झोंपडी में

मलुंगाई व उसकी पत्नी मगंदा सो रहे थे। घर में साधारण उपयोग की वस्तुएं थीं। गरीबी का वातावरण था। यह देख, दादी चकित रह गई। बोली—"गरीब होते हुए भी इन लोगों ने धन नहीं मांगा। गाय, भैंस और हाथी-घोड़े नहीं मांगे। संतान नहीं मांगी, केवल एक गुणकारी वृक्ष मांगा है। वह भी गरीबों के उपयोग के लिए। ये बड़े परोपकारी प्राणी हैं। हमें इनकी मदद करनी चाहिए।"

थोड़ी ही देर में मलुंगाई और मगंदा नींद से जागे तो देखा, दो परियां दरवाजे पर खड़ी हैं।

मलुंगाई ने परियों से कहा—"आप कृपा कर भीतर पधारें।" परंतु परी ने कहा—"भोर की लाली फूटने वाली है। शीघ्र लौटना है। कृपा कर छड़ी लौटा दें। मैं कल्याणकारी वृक्ष अवश्य दूंगी, परंतु मेरी कुछ शर्तें तुम्हें माननी पड़ेंगी।"

मलुंगाई प्रसन्न होते हुए बोला—"आप आज्ञा दें।" दादी बोली—"तुम यह घटना किसी को बताओगे नहीं। छड़ी खोने एवं पौधा लगाने की बात गुप्त रखोगे। पौधे में पानी रात के अंधेरे में दोगे। सातवें दिन के पश्चात पानी देने की कोई आवश्यकता नहीं होगी।

"प्रतिज्ञा करो कि तुम इस पौधे के किसी भाग को बेचोगे नहीं। ग्यारह पूर्णमासी व्यतीत होने पर इस वृक्ष पर फूल लगेंगे। फल के स्थान पर मोटी, लम्बी फलियां लगेंगी। धीरे-धीरे यह वृक्ष पूरे देश में फैलता जाएगा।"

—"इस वृक्ष का क्या नाम होगा?" दादी हंस दी। बोली—"मलुंगाई, तुम्हारे कोई संतान नहीं है। अतः इस वृक्ष के नाम से तुम्हारा नाम अमर हो जाएगा।"

प्रसन्न होकर मलुंगाई झुक कर अभिवादन करने लगा। सिर उठा कर ऊपर देखा, तो वहां परियां नहीं थीं।

केवल एक नन्हा पौधा खड़ा मुसकरा रहा था। मानो कोई अबोध बालक मचल रहा हो। मलुंगाई ने पौधे को चूम लिया।

आज भी इस पेड़ को फिलीपींस में मलुंगाई कहते हैं। भारत में इसका नाम है सहजन। ●

फूल झरें घुंघरू बजें

—डा. वर्षा दास

रूपा और रीना सगी बहनें थीं। लेकिन दोनों के स्वभाव में आकाश-पाताल का अंतर था। रीना छोटी थी, पर बड़ी बातूनी। कोई न मिले तो हवा के साथ भी बातें कर लेती थी। और रूपा चुप रहती थी। इसलिए किसी से उसका झगड़ा भी नहीं होता था। लेकिन रीना के बारे में आए दिन शिकायतें आती रहतीं। स्कूल से भी और पड़ोसियों से भी।

रूपा खिड़की के पास घंटों बैठी रहती। एक दिन मां ने पूछा —"क्या बात है बेटी? इतनी देर से क्या देख रही हो?"

रूपा मां की ओर देखकर मुसकराई। कुछ बोली नहीं। मां ने फिर पूछा। रूपा ने पेड़ की ओर इशारा किया। मां ने सोचा —'मैं भी तो देखूं। यह बच्ची घंटों तक क्या देखती रहती है?'

मां रूपा के पास बैठ गई। खिड़की के सामने नीम का बहुत बड़ा पेड़ था। बस, मां ने तो इतना ही देखा। लेकिन रूपा कुछ और देख रही थी।

नीम के पेड़ पर एक घोंसला था। उसमें कबूतर के छोटे-छोटे बच्चे थे। वे उड़ नहीं पाते थे। उनके पंख अभी छोटे और कमजोर थे। उन बच्चों की मां सुबह-सुबह दाना चुगने के लिए चली जाती थी। लौटकर आती, बच्चों के मुंह में कुछ डालकर फिर उड़ जाती।

एक दिन रूपा ने उस घोंसले में एक सुंदर परी को देखा। वह भी कबूतर जितनी छोटी थी, लेकिन देखने में रीना जैसी सुंदर। नुकीली नाक, बड़ी-बड़ी आंखें, मोतियों जैसे दांत। हंसती तो फूल झरते। बोलती तो घुंघरू बजते। पलकें झपकाती, तो बिजली कौंध जाती। कबूतर के बच्चों की मां जब चली जाती, तब परी उनकी देखभाल करती। जब मां आ जाती, तब परी गायब हो जाती।



उस परी की रूपा से दोस्ती हो गई । रूपा कुछ न कहे,तब भी उसके मन की बात परी जान जाती । और परी जो कहती, रूपा सब समझ जाती ।

एक दिन रूपा ने सोचा —'क्या मैं भी इस परी की तरह कभी यहां, तो कभी वहां गायब हो सकती हूं ?' परी को इस बात का पता चल गया । उसने रूपा से कहा —"जरूर हो सकती हो ।"

रूपा उछल पड़ी । बोली —"अच्छा, तो मुझे अपने जैसा बना दो न !"

परी ने समझाया —"देखो रूपा, स्कूल तो रोज जाना पड़ेगा । इसलिए जिस दिन तुम्हारी छुट्टी होगी, उस दिन मैं तुम्हें साथ ले जाऊंगी । बहुत-कुछ दिखाऊंगी । ठीक है न ?"

रूपा तपाक से बोल उठी —"कल ही तो छुट्टी है । कल रविवार है । स्कूल बंद । मां और बापू रीना को साथ लेकर किसी के घर जाएंगे । घर में केवल दादी मां होंगी ।"

बात पक्की हो गई । रात भर रूपा सुबह होने का इंतजार करती रही । बार-बार घड़ी देखती । सुबह हुई तो मां-बापू के बाहर जाने का इंतजार करने लगी । बीच-बीच में खिड़की के पास आकर देख भी रही थी कि परी आ तो नहीं गई !

खैर, मां-बापू रीना को लेकर बाहर गए । इधर रूपा ने दादी मां को भी बता दिया कि वह कुछ घंटों के लिए एक सहेली के पास जा रही है । परी रूपा का इंतजार कर रही थी।उसके आते ही बोली–"अपनी आंखें बंद करो और सोचो, मुझे परी बनना है ।"

रूपा ने वैसा ही किया । अरे, यह कैसा चमत्कार ! वह भी कबूतर जितनी छोटी हो गई । उसके दोनों कंधों पर पंख निकल आए । अपने पंख फड़फड़ाकर, वह खिड़की से बाहर निकल गई और उड़कर परी के पास पहुंच गई ।

इतने ऊंचे पेड़ से रूपा ने अपना घर देखा, रास्ता देखा । पेड़ की डालों पर और भी कई घोंसले देखे । उसकी खुशी का ठिकाना नहीं था । इतने में कबूतर के बच्चों की मां आती दिखाई दी । परी ने रूपा का हाथ पकड़ा और दोनों उड़ गईं । ऊंचे आकाश में उड़ती गईं । बादलों को चीरती हुई, सनन-सनन बहती हवा से हाथ मिलाती हुई, रूपा और परी बहुत-बहुत दूर चली गईं ।

उसने परी से पूछा —"हम कहां जा रही हैं ?"

परी हंसकर बोली —"एक और दोस्त से मिलने ।"

रूपा ने नीचे धरती देखी । बहुत सुंदर थी । हरे खेत थे । फलों से लदे पेड़ थे । बगिया में रंगबिरंगे फूल थे । एक ऊंची पहाड़ी थी । उस पर एक छोटी-सी कुटिया थी । परी रूपा को उस कुटिया में ले गई । वहां रूपा जितनी एक लड़की सोई हुई थी । वह भी परी की तरह बहुत सुंदर थी । लेकिन नींद में भी उदास लग रही थी ।

परी ने चुपके से रूपा को बताया कि वह लड़की एक बहुत बड़े राजा की बेटी है । राजा के दुश्मन उसे यहां ले आए और बंद कर दिया । बेचारे राजा को मालूम ही नहीं है कि उनकी बेटी कहां है ?

तब रूपा ने परी के कान में कहा —"तुम तो अपने जादू से उसे उड़ा ले जा सकती हो । चलो, इसे घर ले चलें । रीना को एक और दीदी मिल जाएगी ।"

—"नहीं, नहीं । हम ऐसा नहीं कर सकते । राजा के

दुश्मनों ने सख्त पहरा लगाया हुआ है। राजकुमारी कुटिया से बाहर कदम रखेगी, तो वे उसी क्षण उसे मार डालेंगे। मैं यहां रोज आती हूं। राजकुमारी के साथ प्यार से गपशप करती हूं। उसे खूब हंसाकर चली जाती हूं। आओ, अब इसे जगाएं।"

परी ने धीरे से पुकारा —"राजकुमारी, देखो, मैं आ गई। और साथ में एक सहेली भी ले आई।"

राजकुमारी एकदम से उठी। परी ने उसे गले लगाया। रूपा भी राजकुमारी के पास बैठ गई। तीनों बहुत देर तक गपशप करती रहीं। रूपा ने अपने स्कूल की बातें बताईं। परी ने कबूतर के बच्चों की खबर दी। राजकुमारी ने बताया कि आज बगिया में कौन-कौन से फूल खिले थे। उस कुटिया की खिड़की पर कौन-कौन से पंछी आए थे।

यह सुनकर रूपा को एक बात याद आई। अपनी स्कूल की किताब में उसने पढ़ा था कि पुराने जमाने में कबूतर के गले में धागे के साथ चिट्ठी बांधकर कहीं भी पहुंचाई जा सकती थी। उसने राजकुमारी से कहा —"तुम भी कबूतर को चिट्ठी देकर अपने बापू को खबर पहुंचा दो। वे तुम्हें छुड़वा लेंगे।"

परी ज्यादा समझदार थी। उसने कहा —"चिट्ठी ले जाने वाले कबूतरों को तो बहुत-कुछ सिखाया जाता है। कोई ऐसा-वैसा कबूतर चिट्ठी नहीं ले जा सकता। कुछ और सोचो, रूपा।"

तीनों सोचने लगीं। रूपा को एक और बात सूझी —"ऐसा करते हैं कि राजकुमारी की चिट्ठी हम ही ले जाते हैं। राजा के महल में परी आराम से घुस सकती है। वह अंदर जाकर राजा की गोद में राजकुमारी की चिट्ठी डाल देगी। बताओ, यह तरकीब कैसी लगी?"

राजकुमारी और परी, दोनों को बात जंच गई। तीनों ने दिमाग लड़ाकर एक अच्छी-सी चिट्ठी लिखी। पहाड़ी के ऊपर कुटिया तक पहुंचने का रास्ता भी समझा दिया। फिर उस चिट्ठी को लेकर परी और रूपा उड़ते-उड़ते राजा के महल के पास पहुंचीं। वे एक ऊंचे पेड़ की डाल पर बैठ गईं। वहां से राजमहल के अंदर देखा जा सकता था। राजा-रानी बहुत ही दुखी लग रहे थे। बेटी की कोई खबर नहीं थी।

परी चुपके से अंदर घुसी और राजा की गोद में चिट्ठी डाल दी। राजा-रानी दोनों चौंक गए। उन्होंने सोचा कि शायद दुश्मन ने कोई और चाल चली है। लेकिन चिट्ठी पढ़कर दोनों के ही चेहरे खिल उठे। राजकुमारी के जाने के बाद आज पहली बार दोनों हंसे थे।

परी और रूपा, राजा-रानी को हंसते देखकर बहुत खुश हुईं। उन्हें मालूम था कि अब तो राजा अपनी बेटी को ले ही आएंगे।

इतने में राजमहल की घड़ी में घंटे बजे। शाम के पांच बज गए थे। रूपा को घर याद आया। मां-बापू और रीना लौट आए होंगे। दादी मां उसे चारों ओर ढूंढ़ रही होंगी। राजा-रानी अपनी बेटी को न पाकर कितने दुखी थे, यह तो रूपा ने अपनी आंखों से देखा था। दादी मां और मां-बापू का भी यही हाल होगा।

यह सोचते ही वह घर लौटने के लिए उतावली हो गई। उसने परी से पूछा —"क्या मुझे इसी क्षण अपने घर पहुंचा सकती हो? मैं मां, बापू और दादी मां को इस तरह दुखी नहीं होने दूंगी।"

परी हंस पड़ी। उसने कहा —"आंखें बंद करो, रूपा। अपने आप से कहो—'मैं रूपा बनकर अपने घर जाना चाहती हूं।' बस, तुम पहुंच जाओगी।"

रूपा ने झट से आंखें बंद कर लीं। वही कहा, जो परी ने बताया था।

सुर्रर्र... सब कुछ बदल गया।

रूपा को मां की आवाज सुनाई दी —"रूपा ओ रूपा, देखो, हम तुम्हारे लिए क्या लाए हैं?"

रूपा ने अपने कमरे से आवाज दी —"आई मां! और दौड़ी-दौड़ी मां के पास पहुंची। बोली—"दिखाओ तो, क्या लाई हो?"

अरे, यह क्या हुआ? रूपा ने तो मां की आवाज सुनते ही जवाब दे दिया। और आ भी गई। रूपा बदल गई थी। अधिक समझदार हो गई थी। मन ही मन उसने परी से कहा —'परी, तुम मेरी पक्की सहेली हो। अगली बार कहीं और चलेंगे।' ●

मैं दासी नहीं

—सविता चड्ढा

रामबाबू गांव के मुखिया थे। सारे गांव में उनका सम्मान था। वह दयालु और परोपकारी थे। रामबाबू के चार पुत्र थे, जो अपने पिता की तरह परिश्रमी और भले स्वभाव के थे।

जब इन चारों की शादी की बात चली, तो वींरेंद्र के अलावा तीनों बेटों को बहुत प्रसन्नता हुई। यह निर्णय किया गया कि चारों बेटों की शादी एक साथ की जाए। लड़कियों की खोज शुरू हो गई। कोई लड़की किसी कारण नापसंद कर दी जाती, तो किसी में कोई और दोष ढूंढ़ निकाला जाता। आखिर एक वर्ष बीत गया। रामबाबू काफी निराश हो गए।

एक दिन सुबह रामबाबू अपने खेतों में जा रहे थे। अचानक उन्होंने रास्ते में एक आलीशान शामियाना लगा देखा। शामियाने के बाहर सुंदर घोड़ागाड़ी और रंगीन वस्त्र पहने नौकर-चाकरों की फौज देख, उनका माथा ठनका। मुखिया को पता चला कि ये सोनपुर की राजकुमारियां हैं जो घूमने निकली हैं।

रामबाबू मन ही मन बहुत खुश हुए। घर आकर उन्होंने अपने बेटों को आदेश दिया—"इन तीनों राजकुमारियों को शादी के लिए राजी कर लो।" तीनों कारोबारी बेटों ने उसी पल से निगरानी शुरू कर दी। तरह-तरह की भेंटें तथा उपहार लेकर वे तीनों राजकुमारियों से मिले। उनकी सुंदरता से वे तीनों प्रभावित हुए। राजकुमारियों की सेवा में लगी दासी ने उनसे कहा —"इन तीनों की जिम्मेदारी महाराज ने मुझ पर डाली है। जब तक मैं न चाहूं, तुम इनसे शादी नहीं कर सकते। इसलिए पहले तुम्हें मेरे लिए एक सुंदर युवक तलाशना होगा, जो मुझसे शादी करे। उसके बाद ही इन तीनों की शादी हो सकती है।" तीनों ने सारी बात अपने पिता रामबाबू को बताई। उन्हें अपना सीधा-सादा बेटा वींरेंद्र याद आ गया। परंतु एक दासी से विवाह के लिए उसे कैसे राजी किया जाए?

आखिर रामबाबू तथा तीनों बेटों ने वींरेंद्र को सच्ची बात बताए बिना किसी तरह शादी के लिए मना लिया। वींरेंद्र की शादी उस दासी से कर दी गई। गांव में किसी को पता न चला कि वह युवती कौन है। लोगों ने देखा, उसका चेहरा दागों से भरा था। एक आंख के ऊपर एक गहरा काला निशान था। वह दिखने में बहुत साधारण थी।

अगले दिन अपनी-अपनी पसंद की राजकुमारी से उन तीनों भाइयों की शादी कर दी गई। गांव में उत्सव जैसा वातावरण बन गया। घर आकर तीनों राजकुमारियों ने न तो अपनी सास का आशीर्वाद लिया, न कोई अच्छी बात कही। बस, अपनी सुंदरता पर इतराती रहीं। कुछ ही दिनों में उन्होंने रामबाबू को सम्पत्ति के बंटवारे की इच्छा बताई। समझाने का कोई असर न हुआ, तो रामबाबू ने उन तीनों के लिए अलग घर बनवा दिए।

रामबाबू की पत्नी एक बार अचानक बीमार हो गई। तीनों धनी बेटों और उनकी पत्नियों को भी इसकी सूचना दी गई। वे लोग आए और तुरंत चले गए। वींरेंद्र की पत्नी ने सास की खूब जी-जान से सेवा की। आखिर रोग कम होने लगा।

एक दिन रामबाबू ने वींरेंद्र से कहा —"बेटा, तुमने हमसे कभी कुछ नहीं मांगा। वैसे तो सारी धन-संपत्ति तुम्हारे भाई ले जा चुके हैं। परंतु यह मकान और थोड़ी जमा-पूंजी है। इसे तुम रख लो। अब हम तीर्थ करने जाएंगे।"

वींरेंद्र की पत्नी ने पहली बार उस दिन रामबाबू से बात की। बोली —"पिता जी, मैं ही सोनपुर की राजकुमारी हूं। वे तीनों मेरी दासियां थीं। हमारी संपत्ति तो आप हैं। आप चाहें तो हमारे साथ सोनपुर चलकर रहें। वहां मैं स्वयं सारी उम्र आपकी सेवा करूंगी। आपने ही तो मुझे इतना सुंदर और सुशील पति दिया है।"

रामबाबू तथा उसकी पत्नी की आंखें भर आईं। वींरेंद्र की पत्नी को वह साधारण दासी समझ रहे थे, पर वह तो इतनी अच्छी है। •

सुनहरे फल

—दिनेश नंदिनी डालमिया

गांव में एक विधवा और उसकी तीन बेटियां रहती थीं। उनके नाम 'एक आंख', 'दो आंख' और 'तीन आंख' थे। दो आंख और तीन आंख मां की चहेती बेटियां थीं। एक आंख क्योंकि सौतेली थी, विधवा उससे नफरत करती थी। घर का सारा काम एक आंख करती थी। फिर भी अपनी मां और बहनों से दुत्कार और लताड़ ही पाती थी। एक दिन एक आंख कुएं से पानी भर रही थी। उसकी मां व बहनों ने उसे कुएं में धकेल दिया।

एक आंख को जब होश आया, तो उसने अपने आपको बहुत सुंदर बाग में पाया। चारों ओर रंगबिरंगे फूलों पर तितलियां थिरक रही थीं। हरे-भरे पेड़ हवा में झूम रहे थे। चिड़ियां चहचहा रही थीं। एक आंख उठकर इन दृश्यों का आनंद लेती हुई, इधर-उधर घूमने लगी। कुछ दूर ही चली थी कि एक घोड़ा भूख से तड़पता नजर आया। घास सामने थी, परंतु वह उस तक पहुंचने में असमर्थ था। एक आंख ने उसे घास खिलाई। प्यार से थपथपाया।

आगे चलने पर फूलों से लदा एक पेड़ मिला। जब एक आंख पास से गुजरी, तब पेड़ ने विनती की कि उसके फल तोड़कर उसका बोझ हलका कर दे। एक आंख ने पेड़ की सहायता की और आगे बढ़ गई। तभी कहीं से चीखें सुनाई दीं। उसने देखा कि चूल्हे में रोटियां सिक रही हैं। रोटियां ही पुकार रही थीं कि उन्हें जलने से बचा ले।

एक आंख ने रोटियों को चूल्हे में से निकाल लिया। शाम हो चली थी। वह पेड़ के नीचे बैठ गई। जल्दी ही उसे नींद आ गई। जब नींद खुली, तो उसने अपने सामने एक बुढ़िया को खड़े पाया।

बुढ़िया ने बड़े प्यार से एक आंख को उठाया। उसे अपने घर ले गई। घर छोटा और सुंदर था। चारों तरफ हरियाली थी। रंगबिरंगे फूल खिले थे। परंतु जब एक आंख अंदर गई, तो देखा कि चारों तरफ गंदगी फैली थी। सारा घर अस्त-व्यस्त पड़ा था। ऐसा लगता था, काफी समय से किसी ने झाड़ू भी नहीं लगाई है। एक आंख को तो काम करने की आदत थी। वह काम में जुट गई। थोड़े ही समय में सब कुछ ठीक कर दिया। पूरा घर चमक उठा।

यह देख, बुढ़िया बहुत खुश हुई। उसने एक आंख को अपने साथ ही रहने को कहा। वह बुढ़िया के साथ रहने लगी। वहां रहते हुए वह अपने दुःख-दर्द भूल गई। काफी समय गुजर गया।

बुढ़िया को मालूम हुआ कि वह घर जाना चाहती है, तो बड़े प्यार से उसे एक बकरी देकर विदा किया। बकरी में गुण था कि वह एक आंख की हर इच्छा पूरी कर सकती थी। बुढ़िया ने बकरी देते हुए कहा कि यदि बकरी मर जाए, तो उसे गाड़ देना।

जब एक आंख अपने घर पहुंची, तो उसकी मां और बहनें उसे पहचान न सकीं। एक आंख के रूप में बहुत निखार आ गया था। वह इतनी सुंदर लग रही थी कि उस पर निगाह नहीं ठहरती थी।

मां अक्सर एक आंख को याद किया करती थी क्योंकि उसकी दोनों लाड़ली बेटियां घर के काम में तनिक भी हाथ नहीं बंटाती थीं। वे काम कर-करके थक गई थीं। एक आंख को देखकर उन्होंने राहत की सांस ली और गले लगाया। फिर वही काम का सिलसिला शुरू हो गया। पर अब एक आंख के पास बकरी थी।

वह रोज घर के काम से निबट कर, बकरी को चराने के बहाने नदी के किनारे ले जाती थी। वहां उसके साथ खेलती थी। बकरी एक आंख को नित-नए पकवान खिलाती। नए कपड़ों का इंतजाम करती। एक आंख बहुत खुश रहती।

उसके नए कपड़े व खुशी देखकर मां को बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि एक आंख तो अपनी बहनों की उतरन ही पहना करती थी। उसने एक दिन दो आंख को एक आंख के पीछे-पीछे भेजा।

जंगल में नदी किनारे जाकर दो आंख सो गई। वह कुछ भी न देख पाई। मां ने दूसरे दिन तीन आंख

को भेजा। तीन आंख देखती रही। परंतु एक आंख की लोरी सुनकर वह भी सो गई। नींद तीन आंख को आई, परंतु उसकी तीसरी आंख खुली रह गई। जब तीन आंख ने मां को सब बताया, तो उसके दुःख का ठिकाना न रहा। उसने सोचा, क्यों न बकरी को मार डाले। दूसरे दिन एक आंख सामान लाने बाजार गई हुई थी। तब विधवा ने बकरी को मार डाला।

लौटने पर जब एक आंख को बकरी नहीं मिली, तो वह बहुत परेशान हुई। जब उसे मालूम पड़ा कि उसे मार दिया है, तो उसके दुःख का ठिकाना न रहा। उसने बकरी को ले जाकर एक जगह गाड़ दिया।

दूसरे दिन सवेरे सब चकित रह गए। आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। जहां बकरी गाड़ी थी, वहां एक बहुत सुंदर सुनहरे फलों से लदा पेड़ खड़ा था।

समय बीतता गया। एक दिन पड़ोसी देश का राजकुमार वहां से गुजरा। सुनहरे फलों से लदा पेड़ देखकर रुक गया। फलों को पाने की इच्छा से अपने आदमियों को पेड़ के मालिक का पता लगाने भेजा।

विधवा और उसकी दोनों लड़कियों ने अपने आपको पेड़ का मालिक बताया और फल तोड़ने



चलीं। फलों से लदी टहनियां जमीन छू रही थीं, लेकिन उनके हाथ बढ़ाते ही ऊपर हो जातीं और फल पहुंच से बाहर हो जाते। एक आंख जब काम खत्म करके बाहर आई, तो यह तमाशा देखकर आगे बढ़ी।

राजकुमार एक आंख को देखकर मुग्ध हो गया। उससे शादी करने का इरादा कर लिया। एक आंख ने जैसे ही पेड़ के पास पहुंचकर हाथ बढ़ाया, पेड़ की टहनियां नीचे झुक गईं। एक आंख ने फल तोड़कर राजकुमार को दे दिए। राजकुमार ने विवाह का प्रस्ताव रखा। फिर एक आंख से शादी कर ली।

विधवा को लगा कि उसकी बेटियों के साथ धोखा हुआ है। उन्हें सुंदर बनाने के लिए दोनों को कुएं में धकेल दिया। अब वह उनके आने का इंतजार करने लगी। लड़कियां बूढ़ी जादूगरनी के यहां पहुंचीं, जहां एक आंख पहुंची थी। पर वे न तो मेहनती थीं, न ही उनका स्वभाव अच्छा था, इसलिए कुछ न कर सकीं। किसी की मदद नहीं की। उनमें दयाभाव था ही नहीं। बुढ़िया के मिलते ही उसके साथ डांट-डपट करने लगीं और वापस जाने की जिद करने लगीं। बुढ़िया ने उन्हें वापस भेज दिया।

दोनों बहनें मां को देखते ही नाराजगी जाहिर करने लगीं। विधवा की समझ में कुछ न आया, क्योंकि वह लड़कियों को पहचान नहीं पाई। वे बहुत ही कुरूप हो गई थीं। दो आंख और तीन आंख को इस बात का पता ही नहीं था। पर मां के कहने पर जब शीशे में उन्होंने अपनी शक्ल देखी, तो बेहोश हो गईं।

होश में आने पर मां को सब बातें बताईं। तब उनकी समझ में आया कि चलते समय बुढ़िया ने 'जैसी करनी, वैसी भरनी' क्यों कहा था।

जब एक आंख को यह मालूम हुआ, तो उसने बुढ़िया के पास जाकर माफी मांगी और दोनों बहनों को ठीक करवाया। अब उन्हें अपनी भूल का अहसास हुआ। वे बहुत शर्मिंदा हुईं। कुछ समय बाद दोनों की शादी हो गई। वे सब खुशी की जिंदगी बसर करने लगे। ●

बन गया पहाड़



नजमा हेपतुल्ला

गुलमोहर बहुत गरीब लकड़हारा था। घने वन से, वह लड़कियां काटकर लाता था। उन्हें बेचकर थोड़ा-सा धन मिलता। उससे जैसे-तैसे घर का खर्च चलाता था। उसका बेटा था रघुबीर। रघुबीर की मां भी उससे बहुत लाड़ करती थी। एक दिन मां बोली— "बेटा, तुम्हारे पिता जी बीमार रहते हैं। उनकी मदद के लिए तुम भी जाया करो।"

अगले दिन रघुबीर भी पिता के साथ जंगल में गया। उनकी कुटिया से जंगल बहुत दूर था। वह चलते-चलते थक गया था। जंगल में पहुंचकर पिता लकड़ी काटने लगे। रघुबीर एक विशाल पेड़ के नीचे बैठ गया। पेड़ बहुत घना व छायादार था। पेड़ से सुंदर,लाल-लाल फूल धरती पर गिर रहे थे। रघुबीर को जैसे लाल बिछौना मिल गया था। वह थकावट के कारण गहरी नींद में सो गया।

एकाएक रघुबीर की आंखें खुलीं। वह दहशत से उठकर बैठ गया। शाम हो गई थी। पक्षी चहचहाते हुए घोंसलों की ओर जा रहे थे। एक पेड़ के नीचे लकड़ियों का गट्ठर व कुल्हाड़ी पड़ी थी। पिता जी कहीं दिख नहीं रखे थे। रघुबीर जोर से बोला— "पिता जी, पिता जी।"

तभी लाल फूलों वाले बड़े पेड़ पर उसकी निगाह पड़ी। वहां उसे एक लड़की दिखाई दी। रघुबीर को लगा,शायद वह कोई परी है। उसकी मदद कर सकती है। वह वहां जाकर बोला— "परी दीदी, मेरी मदद करिए।"

—"मैं तुम्हारी मदद जरूर करूंगी। परंतु मैं परी नहीं हूं। मैं कानन नगरी की राजकुमारी हूं। मेरा नाम इंद्राणी है। मैं अपने पिता राजा धर्मवीर के साथ, शिकार के लिए आई थी। इस पेड़ पर एक जादूगर राक्षस रहता है। मैं उसे पसंद आ गई। जादूगर ने जादू से थोड़ी-सी देर के लिए मुझे तितली बना दिया। तब से राक्षस ने मुझे बंदी बनाया हुआ है। वह मुझसे विवाह करना चाहता है। मैंने उसके सामने शर्त रखी थी कि अगर वह मुझे जादू सिखा दे, तो मैं उससे विवाह कर लूंगी। मैंने उससे काफी जादू सीख लिया है। थोड़ा अभी सीखना बाकी है।"

रघुबीर हैरान होकर इंद्राणी की बातें सुन रहा था। राजकुमारी ने उसके पास आकर सिर पर हाथ फेरा। बोली— "मेरा कोई भाई नहीं है। आज से तुम मेरे भाई हो।"

फिर इंद्राणी ने एक शीशे के बरतन में पानी भर दिया। बोली— "राक्षस जब सुबह पेड़ पर वापस आएगा, तब मैं तुम्हें जादू से मछली बनाकर इसमें रख दूंगी। कल उसके जाने के बाद फिर तुम्हें असली रूप में ले आऊंगी।"

"पर मुझे मछली क्यों बनाएंगी आप?"— रघुबीर ने उत्सुकता से पूछा।

"क्योंकि राक्षस हर आदमी को कांटेदार पौधा बना देता है। देखेगा, तो तुम्हें भी पौधा बना देगा। यहां से बचकर निकलने के लिए हमें एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। क्या पता, उसने तुम्हारे पिता जी को भी पौधा बना दिया हो।"— इंद्राणी ने बताया।

फिर वह आगे बोली— "राक्षस के विशाल पांव जहां पड़ते हैं। उस धरती की मिट्टी यदि तुम मेरे ऊपर छिड़क दोगे, तो मैं उसके बंधन से मुक्त हो जाऊंगी। फिर मैं जादू से पौधे बने आदमियों को, असली रूप में लाकर मुक्त कर दूंगी।"

"दीदी, मुझे बहुत भूख लगी है।"— रघुबीर ने कहा।

इंद्राणी ने तरह-तरह के फल उसे खाने के लिए दिए। रघुबीर फल खा रहा था, इतने में राक्षस आ गया। इंद्राणी ने जल्दी से उसे मछली बना दिया।

राक्षस गुस्से से बोला— "यहां कौन आया था? मुझे आदमी की 'बू' आ रही है।"

"नहीं,यहां कोई आदमी नहीं आया।"— इंद्राणी ने डरते हुए कहा।



एक दिन इंद्राणी राक्षस से जिद करने लगी— "किसी को पहाड़ कैसे बनाते हैं ? मुझे यह जादू सिखाओ ।" राक्षस थका हुआ था । उसने टालने की बहुत कोशिश की । परंतु इंद्राणी जिद पकड़े बैठी थी । राक्षस को पहाड़ बनाने का जादू उसे सिखाना ही पड़ा ।

अगली रात राक्षस पेड़ से उतरकर जाने लगा । इंद्राणी ने रघुबीर को मछली से लड़का बनाया । उसे मिट्टी लाने के लिए कहा । राक्षस के पांव के निशानों से रघुबीर मिट्टी ले आया । उसने मिट्टी इंद्राणी पर छिड़की । वह राक्षस के बंधन से मुक्त हो गई ।

अब वह पेड़ से नीचे उतरी । उसने जादू से पौधे बने आदमियों को पहले उनके असली रूप में बदला । सब लोग इंद्राणी को धन्यवाद देने लगे । फिर वे अपने-अपने घर चले गए ।

इधर रघुबीर के पिता परेशान थे । समझ नहीं पा रहे थे कि उनका बेटा कहां गया । वह वहां आकर चिल्लाए— "मेरा बेटा कहां है ?" इंद्राणी ने उन्हें सारी बात बताई । यह भी कहा कि कुछ दिन बाद रघुबीर घर लौट आएगा । फिर इंद्राणी वापस पेड़ पर चढ़ गई ।

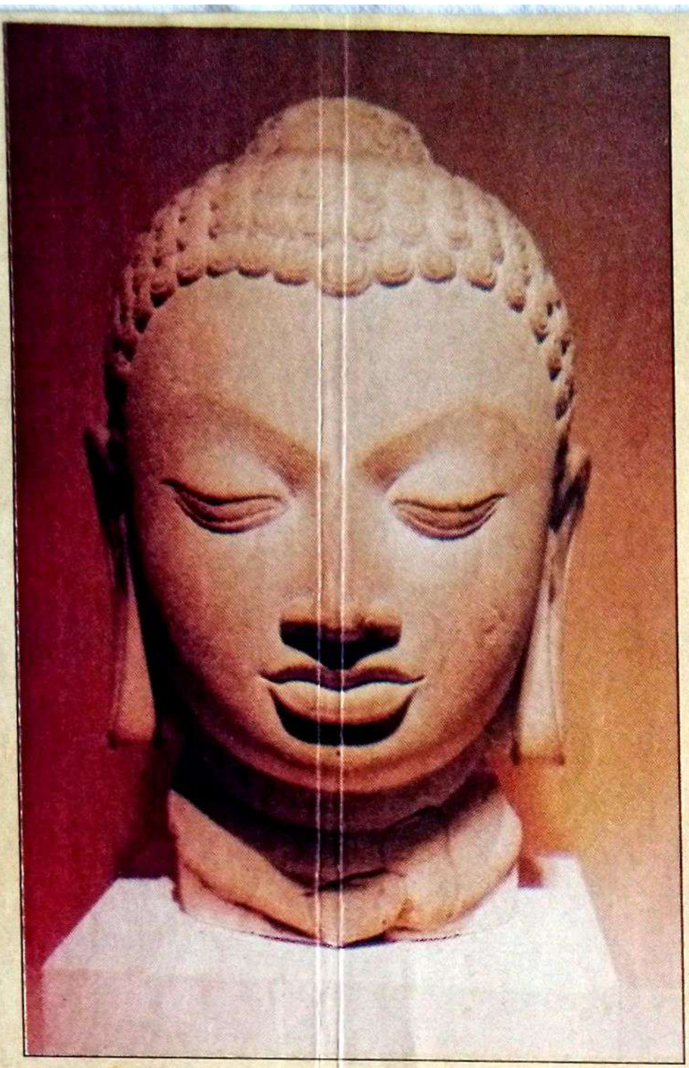
सुबह जैसे ही राक्षस वहां आया, इंद्राणी ने जादू से राक्षस को पहाड़ बना दिया ।

रघुबीर यह देखकर बहुत खुश हुआ । देखते ही देखते इंद्राणी के जादू से वहां एक सफेद घोड़ा आ पहुंचा । वह और रघुबीर घोड़े पर बैठ गए । घोड़ा सरपट दौड़ता हुआ महल की ओर चल दिया ।

इंद्राणी को जीवित देखकर, राजमहल में सब बहुत खुश हुए । रघुबीर व इंद्राणी की बहुत आवभगत की गई ।

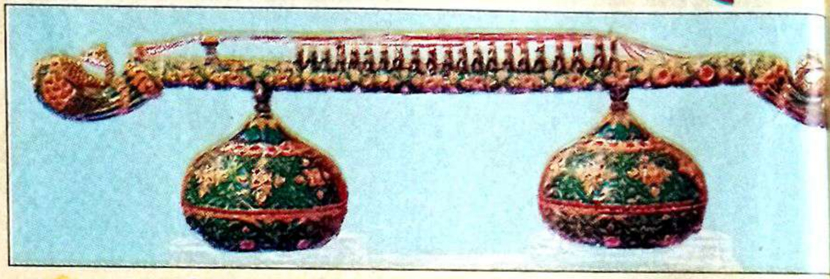
थोड़ी देर बाद इंद्राणी ने रघुबीर को घोड़े पर बिठाया । रघुबीर ने घर पहुंचकर उसके माता-पिता को पूरी कहानी सुनाई ।

राजकुमारी इंद्राणी ने उनकी कुटिया को सुंदर घर में बदल दिया । ●





परी कथाएं बिखरी हैं पग-पग पर यहां

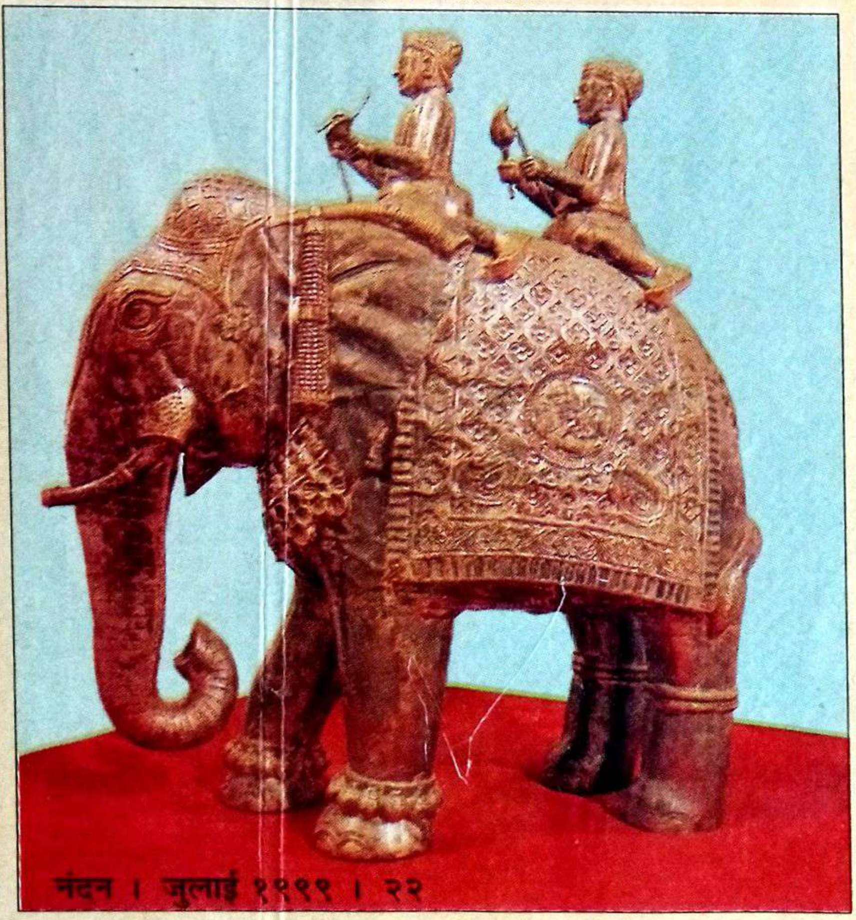


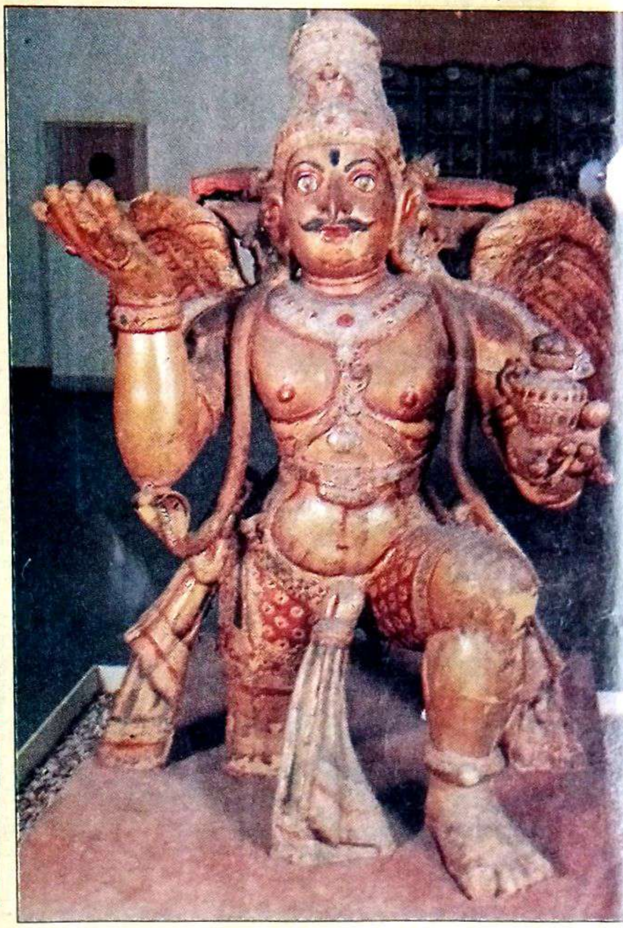
बलुआ पत्थर से बने बुद्ध

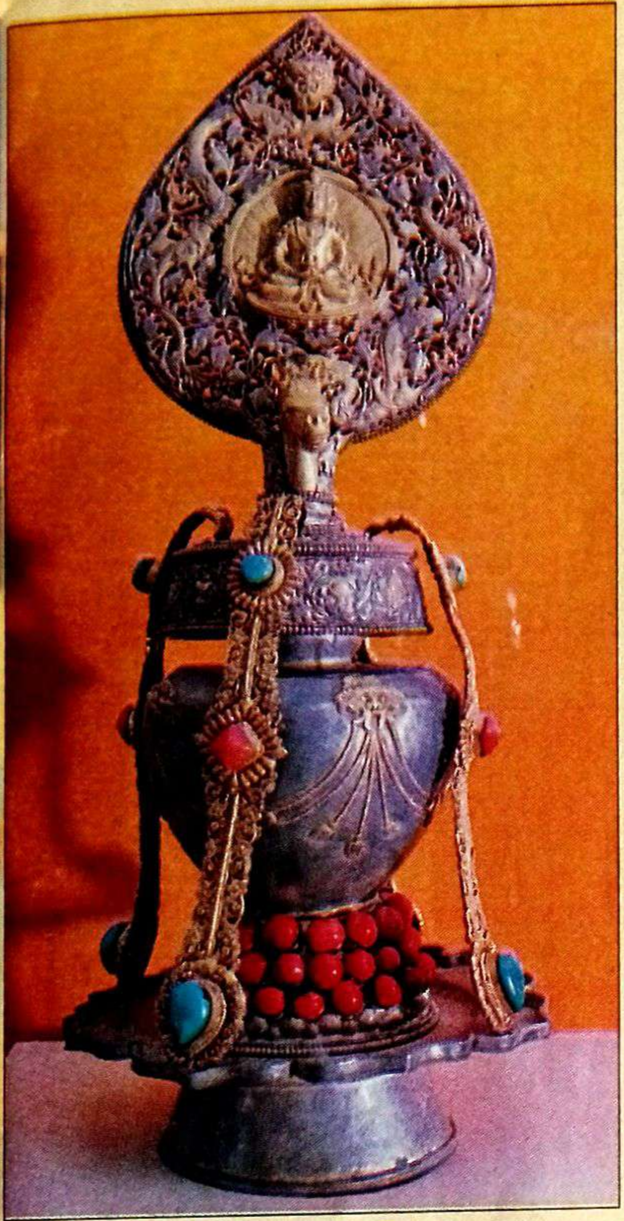
रत्न जड़ी वीणा

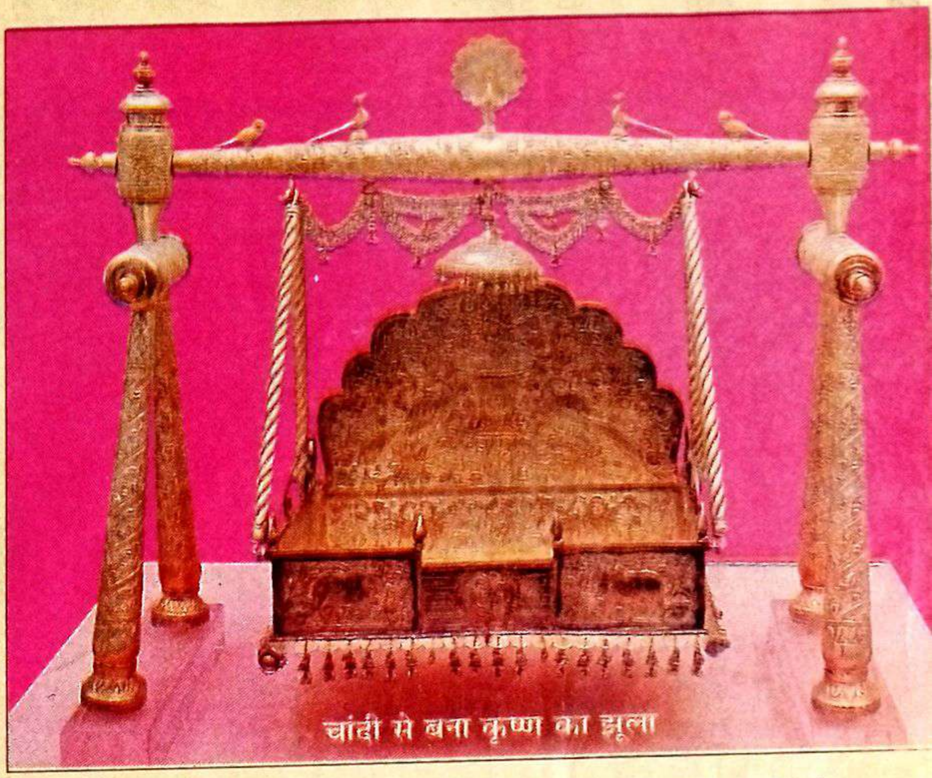
सजा-धजा हाथी : राजस्थान की कला

विष्णु की सवारी : काष्ठ से बना गरुड़









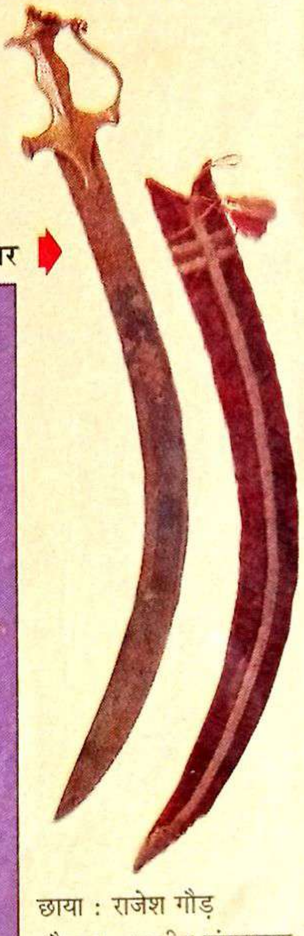
चांदी से बना कृष्ण का झूला

बीते समय की कला व संस्कृति सुरक्षित है, दिल्ली के राष्ट्रीय संग्रहालय में। हमारे पूर्वज कैसे रहते थे? क्या पहनते थे? कैसे थे राजघराने? पुराने आभूषण कैसे होते थे? किन वाद्य-यंत्रों से संगीत की धुनें सुनते थे? इन प्रश्नों का उत्तर मिलता है, यहां घूमने से।

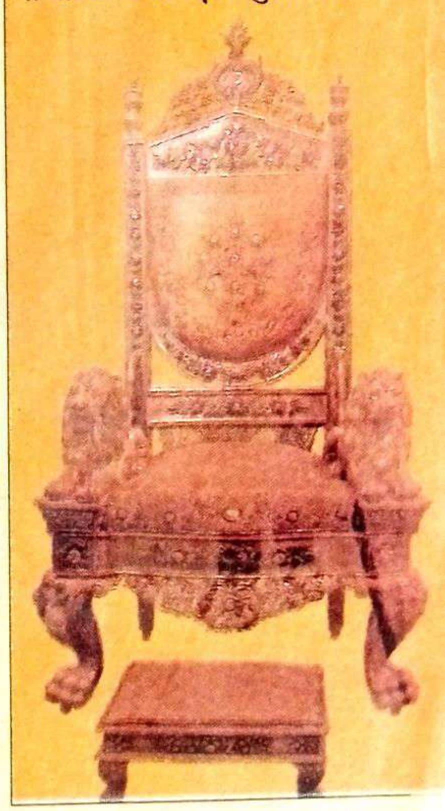
चांदी का अमृत कलश

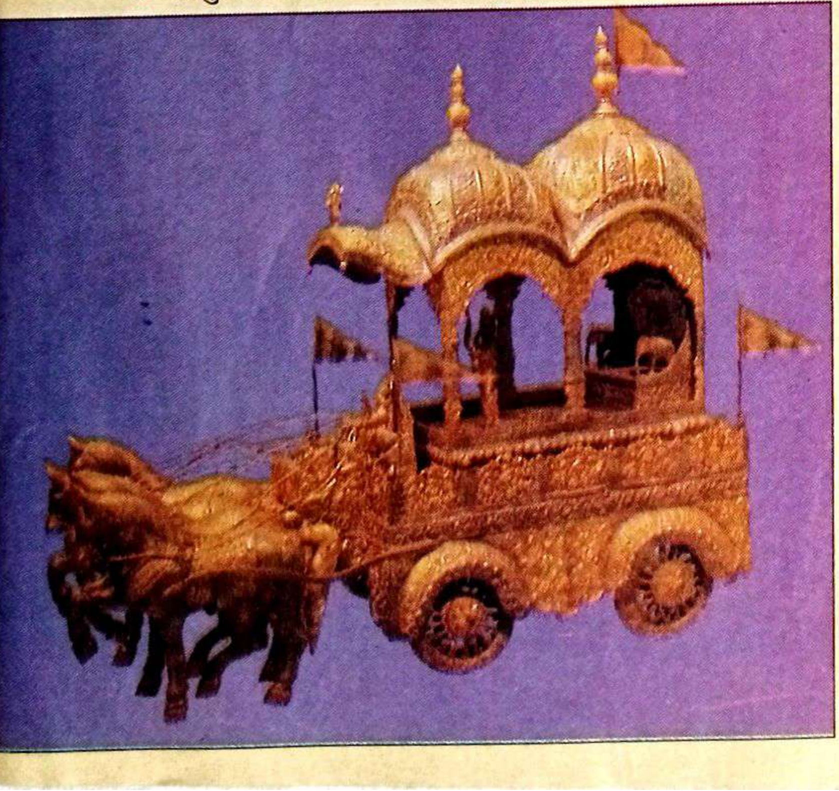
अर्जुन का रथ

टीपू की तलवार



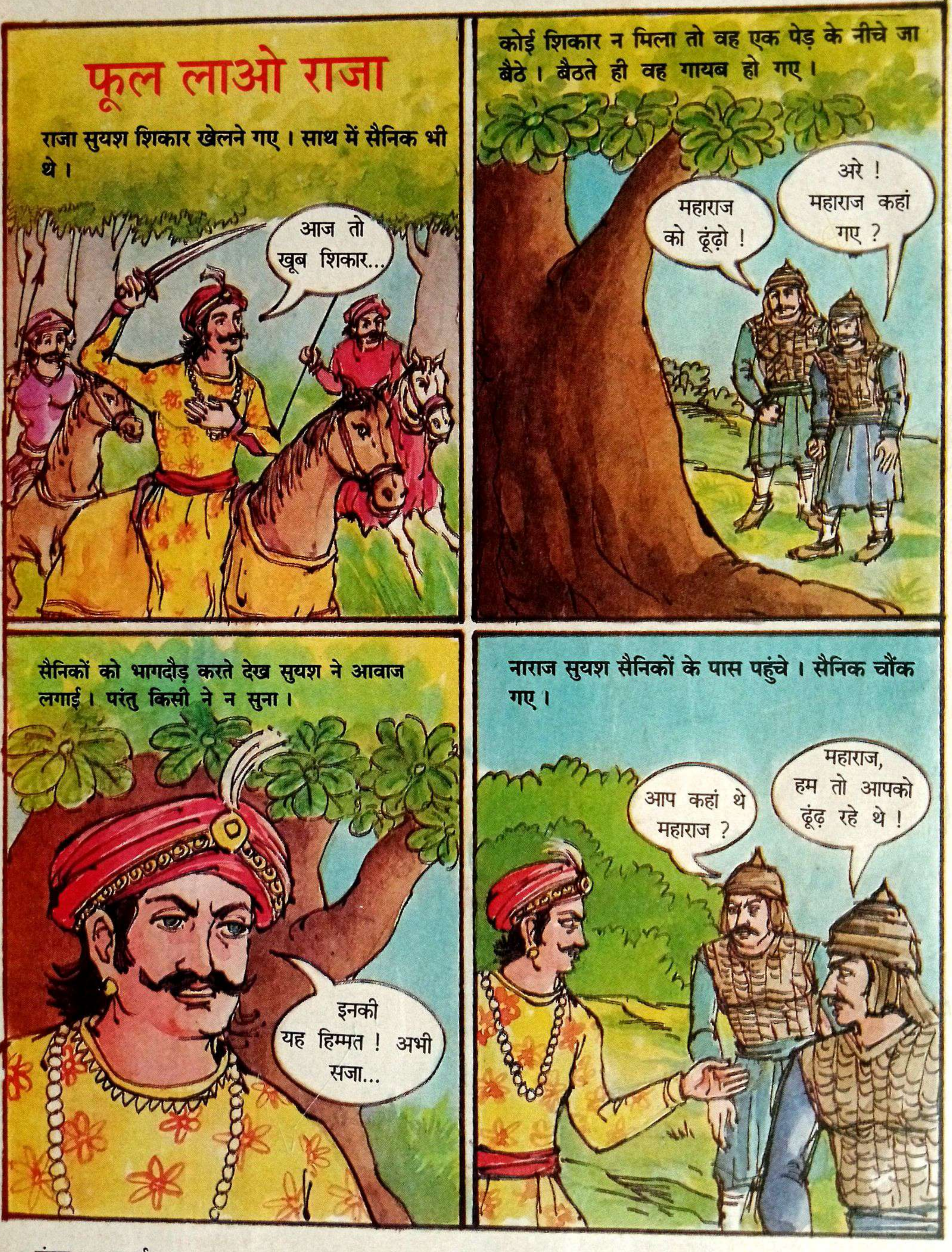
रत्नों से जड़ा चांदी का सिंहासन: राजाओं के लिए अशुभ रहा



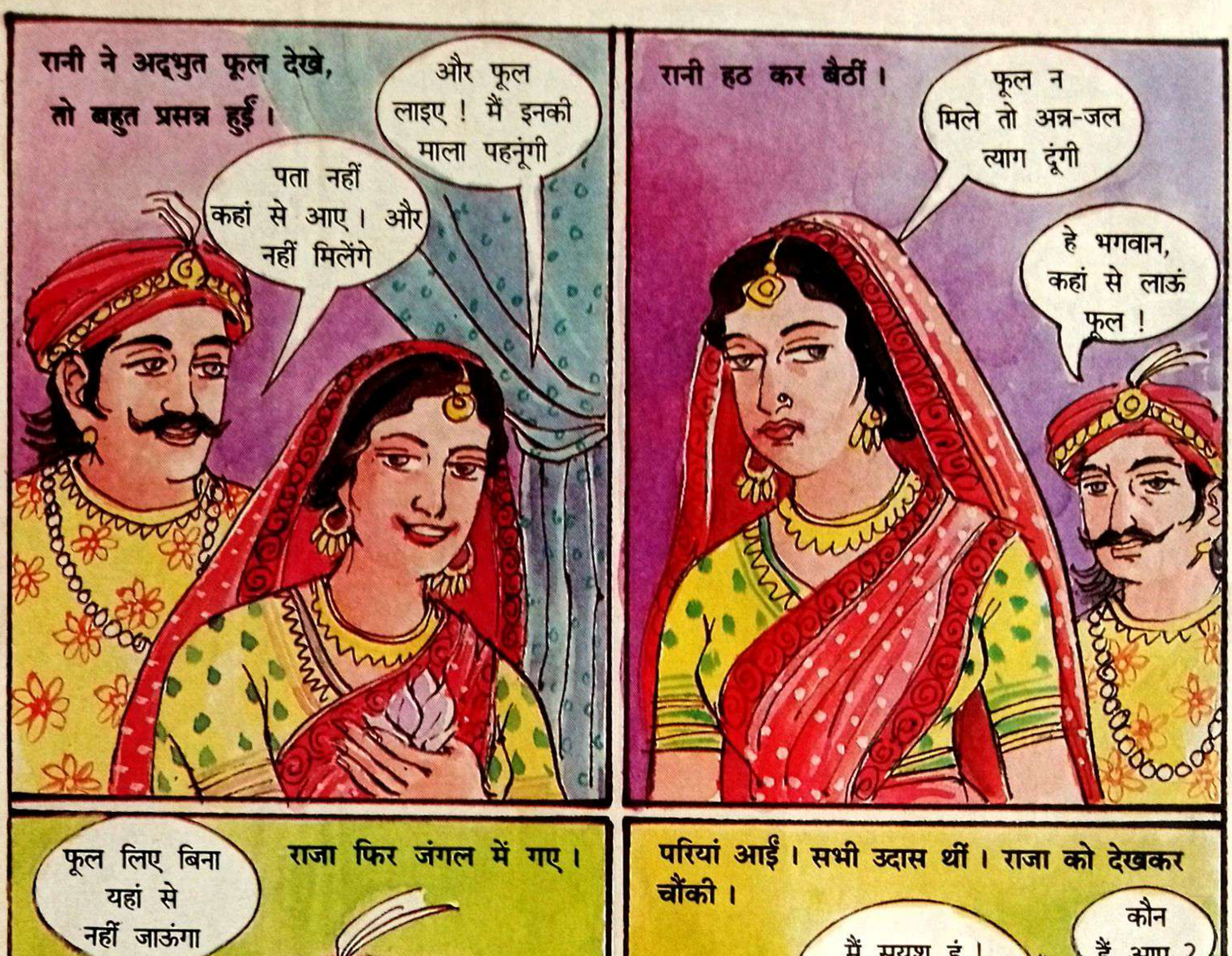


छाया : राजेश गौड़

सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय


फूल लाओ राजा
राजा सुयश शिकार खेलने गए । साथ में सैनिक भी थे ।
आज तो खूब शिकार...
कोई शिकार न मिला तो वह एक पेड़ के नीचे जा बैठे । बैठते ही वह गायब हो गए ।
महाराज को ढूंढ़ो !
अरे ! महाराज कहां गए ?
सैनिकों को भागदौड़ करते देख सुयश ने आवाज लगाई । परंतु किसी ने न सुना ।
इनकी यह हिम्मत ! अभी सजा...
नाराज सुयश सैनिकों के पास पहुंचे । सैनिक चौंक गए ।
आप कहां थे महाराज ?
महाराज, हम तो आपको ढूंढ़ रहे थे !


अब सुयश भी चौंके । एक सैनिक को पेड़ के पास भेजा ।
अरे, सैनिक तो गायब हो गया !
यहां से जल्दी चलो । यह कोई जादुई पेड़ है। फिर आकर देखेंगे
वह परियों का पेड़ था । रात को वहां परियां आईं । उनके फूल और एक माला वहीं गिर गई ।
चलो, घूमने चलें
सुयश को नींद न आई । वह रहस्य जानने के लिए वहां आए । उन्हें फूल और मोतियों की माला दिखाई दी ।
अरे यह माला ! ओह, अद्‌भुत फूल !
सुयश बहुत देर तक वहां बैठे रहे । परंतु कोई नहीं आया । आखिर वह लौट पड़े ।
ये फूल रानी को...


रानी ने अद्भुत फूल देखे, तो बहुत प्रसन्न हुईं।
पता नहीं कहां से आए। और नहीं मिलेंगे
और फूल लाइए ! मैं इनकी माला पहनूंगी
रानी हठ कर बैठीं।
फूल न मिले तो अन्न-जल त्याग दूंगी
हे भगवान, कहां से लाऊं फूल !
राजा फिर जंगल में गए।
फूल लिए बिना यहां से नहीं जाऊंगा
परियां आईं। सभी उदास थीं। राजा को देखकर चौंकी।
कौन हैं आप ?
मैं सुयश हूं ! आप परेशान लग रही हैं ?


एक परी ने कहा—
परी रानी नाराज हैं
हमारी माला खो गई है
गले से माला उतारकर सुयश ने उनके आगे कर दी।
कहीं यह तो नहीं
हां, यही है
अब परियों ने सुयश से वहां बैठने का कारण पूछा। पता लगने पर...
यह लीजिए, उन्हीं फूलों की माला! इसके फूल कभी नहीं मुरझाएंगे।
इसके रहते आपके राज्य पर आंच नहीं आएगी
परियां चली गईं। सुयश महल लौटे। उन्होंने रानी को माला का रहस्य बताया।
इसे मैं हमेशा संभाल कर रखूंगी

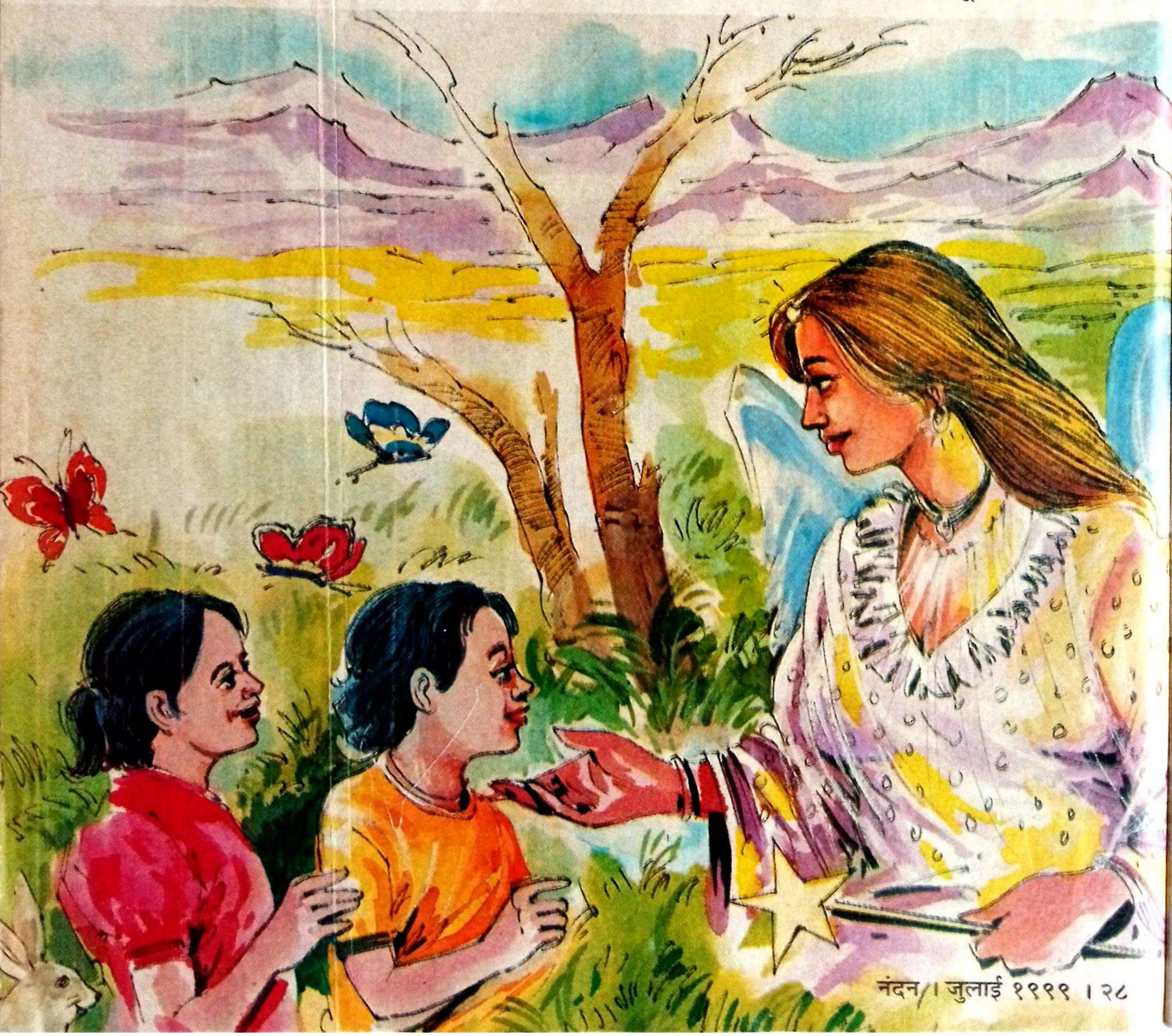
चांदी का पालना

—अरविंदकुमार

तन्वी को दूसरी कक्षा में बहुत अच्छे अंक मिले थे। छुट्टियां हो गई थीं। वह ढाई बरस के अपने छोटे भैया अक्षय के साथ नाना-नानी के घर आ गई—कुछ दिन मजे करने के लिए। उसे तसवीरें बनाने का शौक था। वह कंप्यूटर पर भी तसवीरें बनाती और कागज पर भी। इसलिए साथ में रंगों का डिब्बा भी ले आई। मन करता, तो नाना जी के कंप्यूटर पर तसवीरें बनाती। भैया भी उसकी देखादेखी कागज और रंग लेकर तसवीरें बनाने बैठ जाता।

उस दिन तीसरे पहर उसने एक तसवीर बनाई—पहाड़, झील, झील के पास उड़ती तितलियां। पिछले साल वे दोनों मम्मी-पापा के साथ गरमी की छुट्टियों में पहाड़ पर गए थे। वहां ढेर सारी तितलियां थीं। दस-बीस नहीं, सैकड़ों—एक साथ उड़ती हुईं। तन्वी ने वही तसवीर बनाने की कोशिश की थी। तसवीर बनाते-बनाते वह वहां के खयालों में खो गई।

कुछ देर तन्वी और अक्षय तितलियों के साथ-साथ भागते-खेलते रहे। उन्हें पकड़ते नहीं थे। पापा ने बता रखा था कि तितलियों को पकड़ना मत। पकड़ने से वे मर जाती हैं। खेलते-खेलते वे भूल गए कि वे कहां



हैं। उन्हें यह भी याद नहीं रहा कि वे नाना-नानी के घर आए हैं। शाम हो आई। सूरज डूबने लगा। उसकी लाली बड़ी अच्छी लग रही थी। आसमान में जो बादल थे,वे सब सुनहरी हो गए। अक्षय उनकी ओर अंगुली उठाता। पहाड़ों की चोटियों पर जो बर्फ थी, वह भी सुनहरी हो गई।

पास ही बहुत सारे खरगोश थे, वे आकर तन्वी और अक्षय के साथ खेलने लगे। उनके राजा का नाम शशा था। वह तन्वी से बोला—"जानती हो, वहां पर्वतों के ऊपर सोनपरी रहती है। उसे बुलाऊं? सोनपरी, आ जा, आ जा।" शशा ने आवाज लगाई। नाचती-ठुमकती सोनपरी आ गई। उसने अक्षय के गालों को चूम लिया। अक्षय के गुलाबी गाल सुनहरी हो गए। परी ने तन्वी से कहा—"एक पहेली बूझोगी?"

फिर फौरन वह पहेली कहने लगी—"ध्यान से सुनो। मेरे शब्दों में ही पहेली का उत्तर छिपा है। हिमालय बाबा बताते हैं कि उनके एक बड़े भाई हैं। कोई-कोई जन उन्हें सुमेरु भी कहते हैं। वहां जो लोग रहते हैं, वे सफेद भालू से बहुत डरते हैं। भालू से बचने के लिए उन्होंने बर्फ का घर बनाया। वह कमाल का घर था। उसकी छत गोल थी। चारों तरफ एक-एक खिड़की थी। सबकी सब दक्षिण दिशा में खुलती थीं। बताओ, वह घर कहां था?"

तन्वी कम होशियार नहीं थी। उसने तत्काल उत्तर दिया—"मुझे कुछ नहीं चाहिए। लेकिन उत्तर मैं जानती हूं। वह उत्तरी ध्रुव में रहने वाले एस्कीमो का घर था और बर्फीले उत्तरी ध्रुव के ठीक बीचोबीच बना था। वहां हिमालय से भी ज्यादा बर्फ होती है। जब सूरज निकलता है,तो दूर से वह घर सोने का बना दिखाई देता है। वहां केवल एक ही दिशा होती है—दक्षिण दिशा। इसलिए उस घर की हर खिड़की दक्षिण दिशा में खुलती है।"

सोनपरी खुश हो गई। उसने जादू की छड़ी तन्वी के बालों से छुआ दी। तन्वी के सारे बाल सुनहरी हो गए,जैसे सोने के तार हों। धीरे-धीरे अंधेरा हो रहा



था। आसमान में तारे निकलने लगे थे। अब शशा खरगोश ने पहेली पूछी—"तन्वी जी, बताओ तो--एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।"

तन्वी ने झट से उत्तर दिया—"आकाश।"

खरगोश कहने लगा—"अच्छा, यह बताओ...मेरा एक भाई था। उसके बदन पर सलेटी धब्बे थे। कई सालों से वह कहीं खो गया है। उसे मैं कहां ढूंढूं?" तन्वी इसका उत्तर भी जानती थी। थोड़ी देर तो उसने सिर खुजाया, फिर इधर-उधर, ऊपर-नीचे देखा। सबसे बाद में उसने आसमान में चमकते पूरे चांद को देखा। बोली—"चांद में—देखो, वह बैठा।" यह सुनते ही खरगोश भाग गया। जाते-जाते कहने लगा—"बहुत देर हो गई। खेल-खेल में कुछ पता ही नहीं चला।" तन्वी ने देखा कि सोनपरी भी अब नहीं थी।

अब तक अक्षय थक गया था। वह निढाल-सा होकर तन्वी का सहारा लेकर बैठ गया। तन्वी उसे लेकर होटल के कमरे में जाना चाहती थी, लेकिन कमरे तो थे ही नहीं। बस बाहर की दीवारें थीं। कमरे तन्वी ने बनाए कहां थे, जो होते। तन्वी परेशान होने लगी। वह अक्षय को चांद दिखाने लगी—"देख, अक्कू, चंदा मामा। देख, अक्कू, चांद परी।"

अचानक क्या हुआ कि चांद में से एक परी निकली। उसके बाल चांदी के थे। चांद जैसे सफेद

झिलमिल करते कपड़े लहरा रहे थे। वह उनके पास आ गई। वह बोली—"मैं चांद-परी हूं। मेरे साथ खेलोगे ? झूले का खेल !" उनके जवाब की प्रतीक्षा किए बगैर चांद-परी ने किरणों की डोरी का झूला बना दिया। उसमें चांदी का पालना लटका दिया। अक्षय के साथ-साथ तन्वी को भी उसमें बैठा दिया। परी गाने लगी—

किरणों की डोरी, चांदी का झूला।
तन्वी की गोदी, भैया का झूला।

थोड़ी देर तो अक्षय चुप रहा। फिर हंसने लगा। उसे बड़ा मजा आ रहा था। इतना अच्छा झूला तो उनके घर के पास वाले पार्क में भी नहीं था। झील के पानी में चांद की किरणें लहरा रही थीं। चांद-परी ने उन्हें नावें बना दिया। अक्षय को गोदी में लेकर वह एक नाव में जा बैठी। तन्वी भी उनके साथ थी। वह अपने हाथों को चप्पू बनाकर नाव खेने लगी। नीचे पानी में मछलियां अठखेलियां कर रही थीं। तन्वी और चांद-परी उनसे खेलने लगीं।

अक्षय ने देखा कि तसवीर के आसमान में एक परांठा लटक रहा है। उसे भूख तो लगी ही थी। उसने परांठा पकड़ लिया और एक किनारे से उसे खाने लगा। वह तो सारा ही परांठा खा जाता कि चांद-परी का ध्यान उधर चला गया। वह खिलखिला



उठी—"अरे शैतान छोकरे, तू तो चांद को ही खाने लगा। पूरा खा जाएगा,तो चांद का क्या होगा ? रातें सूनी नहीं हो जाएंगी ?"

उसने अक्षय के हाथ से परांठा छीन लिया। अब चांद का एक कटा किनारा ही बचा था। इसे दूज का चांद भी कहते हैं और ईद का चांद भी। लेकिन तन्वी को वह नाव जैसा लग रहा था। उसने चांद-परी से कहा—"क्यों न हम इस नाव में सैर करें ?"

परी ने कहा—"हां, हां, चलो।" अब वे तीनों कटे चांद की नाव में बैठकर,आसमान की सैर करने लगे।

आसमान में काले बादल घिर आए। परी घबरा गई। वह कहने लगी—"अरे, हम तो शिवजी की जटाओं में पहुंच गए।" सब जानते हैं कि शिवजी के मस्तक पर दूज के चांद का मुकुट होता है। तन्वी ने देखा कि चारों तरफ घना जंगल है। उसमें एक ओर से गंगाजी बह रही हैं। तन्वी ने परी से कहा—"चलो, इस जंगल में चलते हैं।"

परी बोली—"न बाबा न, मैं नहीं जाती ! वहां तो भयानक जानवर भी होंगे। मैं तो अपने घर में बैठी हूं, जंगल में नहीं जाऊंगी।"

घर की बात सुनकर तन्वी को अपना घर याद आ गया। उसे यह भी याद आ गया कि अक्षय और वह तो नाना जी के घर आए हैं। वहां नाना-नानी को चिंता हो रही होगी कि तन्वी व अक्षय कहां गए। वह बोली—"अब हम भी घर जाएंगे।"

परी ने नाव को शिवजी की जटाओं से निकाला और उधर ले चली,जहां पहाड़ों से बड़ी दूर नाना जी का घर था। वह घर के ऊपर पहुंची,तो उसने किरणों की डोरी के पालने में तन्वी और अक्षय को बैठाकर नीचे उतार दिया। तन्वी ने सिर उठाया,तो देखा कि तसवीर पूरी बन चुकी है। उसमें पहाड़ हैं, मकान हैं, तितलियां हैं, खरगोश है, चांद है और चांद से चांदी का पालना लटक रहा है। तन्वी और अक्षय उसे देख रहे हैं। ●

मुंह धोया ओस से

—एन. आर. शर्मा

ईरान के शहर तेहरान में एक बड़ा व्यापारी रहा करता था। उसका काम देश-विदेश में पिस्ते भेजना और ढेरों पैसा कमाना था। वह जितना दौलतमंद था, उतना ही कंजूस। उसके घर की चुहिया भी अपने बिल में जब घुसती, तो बाहर से खा-पीकर जाती। यही हाल बिल्ली, कुत्ते, कबूतर, कौवे का था।

मशहद नामक शहर से शहद का एक व्यापारी तेहरान आया। पिस्ते के व्यापारी के घर रुका। शहद का व्यापारी कभी अकेला नहीं चलता था। उसके पास दो देव सदा बोतल में बंद, थैले में पड़े होते। सौदों में जहां ऊंच-नीच हुई, वहां पर सबक सिखाने के लिए, वह दोनों देवों को बोतल से बाहर निकालता। दोनों की कुश्ती देख, बेईमानी करने वाला डर जाता और सीधे रास्ते पर आ जाता।

शहद का व्यापारी जब दोस्त के घर पहुंचा, तो उसका खूब आदर-सत्कार हुआ। जहां तरह-तरह के शरबत रखे गए, वहीं अधखिले नमकीन पिस्ते का थाल भी रखा गया। दोनों दोस्तों में गप शुरू हुई। पिस्ते के छिलके टूटने लगे और खूब मजे से शहद का व्यापारी पिस्ते खाने लगा। यह देखकर पिस्ते के व्यापारी के हाथों के तोते उड़ गए। जल्दी ही आधा थाल साफ हो गया। शहद का व्यापारी समझ गया। उसने मजा लेने के लिए झोले में पड़ी बोतल का मुंह खोल दिया। फिर क्या था! लम्बे-लम्बे देव चौकड़ी मारकर बैठ गए। लगे पिस्ते खाने। पिस्ते का व्यापारी सख्त परेशान कि कोई दिख नहीं रहा है, मगर थाल पर थाल साफ हो रहे हैं। उसका दोस्त शहद का व्यापारी भी केवल शरबत के घूंट भर रहा है, तो फिर यह कौन खा रहा है?

रात को खाने के बाद सब सो गए। दोनों देव शहर घूमने निकले। घूम-फिरकर आए, तो उन्हें भूख लगी। पेड़ पर लगे सेब, नाशपाती, अंगूर, जो भी बाग में फला था, सब चट कर गए। फिर वहीं हरी-हरी घास पर फैलकर लेट गए।

आधी रात के समय रोज वहां परियां आती थीं। एक का नाम था गुल-ए-मरियम और दूसरी का नाम था निलोफरयास। दोनों बहुत सुंदर थीं। रोज रात को वे फूलों पर गिरी ओस से मुंह धोने के लालच में सुबह तक बाग में टहलती थीं। वैसे उनका वास अलबुर्ज पर्वत था। आज उन्होंने दो देवों को सोते देखा, तो उन्हें बड़ी खुशी हुई। दौड़कर उन्हें जगाया और हालचाल पूछा। दोनों ने बताया कि वे शहद के व्यापारी के संग आए हैं। सुनते ही दोनों परियों के नथुने फड़क उठे। वे एक झटके से उठीं और बोलीं—"ओफ, उस कंजूस से पाला पड़ा है।"

देवों ने उनके हाथ पकड़ लिए। बताया कि उनका मालिक बहुत रहमदिल और दानी है। तब वे बात करने पर राजी हुईं। दोनों ने अपनी-अपनी कहानी सुनाई। तब पाया कि कोई ऐसी तरकीब निकाली जाए जिससे कंजूस पिस्ते के व्यापारी को नानी याद आ



जाए। वह अपने सामान को ताले में रखना बंद कर दे। चारों ने मिलकर एक योजना बनाई। फिर रात ही रात में सारा भंडार खाली कर दिया। उसके स्थान पर बोरों में ईंट-पत्थर रख दिए।

सुबह जब माल उठाने के लिए मजदूर आए, तो उन्हें बोरे बड़े भारी लगे। वे बोरों के मुंह खोल नहीं सकते थे। शक होने के कारण बोरा हिलाया, तो पत्थर आपस में टकराए। कुछ बोरों से मिट्टी गिरी। यह देखकर सभी परेशान हो उठे। बात व्यापारी तक पहुंची। सारी बात सुन, उसने अपनी छाती पीट ली।

परियां यह देख, ताली बजाकर हंसने लगीं, मगर देवों को क्रोध आ गया। उन्होंने जोश में आकर व्यापारी को पटक दिया। दर्द से बिलबिलाता व्यापारी रोने लगा—"मुझे कौन मार रहा है, जो दिख नहीं रहा है ?" शोर सुनकर शहद का व्यापारी भागकर आया और सारी बात समझ गया। उसने दोस्त को उठाकर गले लगाया। कहा—"इस मुसीबत से तुम बच सकते हो, यदि मेरा कहना मानो। वरना आसमान से टूटी यह मुसीबत तुम्हारा घर, बाग, तिजोरी सब नष्ट कर देगी।" पिस्ते के व्यापारी ने वायदा किया कि वह हर बात मानेगा।

पिस्ते के व्यापारी ने ऊंची आवाज में पूछा—"ऊपर वाले, अगर मेरा दोस्त कंजूसी छोड़ देगा, तो क्या तुम उसे उसके मेवे लौटा दोगे ?" आवाज का जवाब तो नहीं आया, परंतु एक बोरा पिस्ते का जरूर गिरा। यह देख पिस्ते का व्यापारी दोस्त के कदमों पर गिर पड़ा। दोस्त ने उसे उठाकर गले से लगा लिया। कहा—"जो तुम्हें देता है, उसका मतलब है कि वह तुम्हारे द्वारा दूसरों का पेट भी भरना चाहता है। इसलिए धन को संचित मत करो, दान करो।"

पिस्ते का व्यापारी हर जुमे को शहर के गरीबों में पिस्ते की थैली मुफ्त बांटने लगा। यह देखकर परियां और देव खुश होते। आखिर उन्हीं की करामात से एक कंजूस दानी बना और अब उस हवेली में चिड़ियां चहचहातीं। मोर नाचते, क्योंकि सबका पेट भरा रहता था।

(ईरान)

शीशे की दीवार

—श्रीनिवास वत्स

एक गांव में एक किसान रहता था मोहन। उसके चार पुत्र थे—दिलीप, विनय, कर्ण और मदन। बड़े तीन पुत्र परिश्रमी थे, पर छोटा पुत्र मदन पिता के अधिक लाड़-प्यार से बिगड़ गया था। वह कुछ काम नहीं करता था।

शुरू-शुरू में मोहन सोचा करता था—'मदन अभी बच्चा है। बड़ा होकर वह खुद सुधर जाएगा।' लेकिन मदन की कामचोरी दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी। पिता और उसके बड़े भाइयों ने उसे बहुत समझाया, पर उस पर कोई असर नहीं पड़ा।

एक दिन मोहन की मृत्यु हो गई। कुछ दिनों तक तो मदन के भाइयों ने उससे काम करने के लिए नहीं कहा। पर ऐसा कब तक चलता ! एक दिन भाइयों ने मदन को अपने पास बैठाया। बड़ा भाई दिलीप बोला—"मदन, अब तुम भी काम में हाथ बंटाओ। नहीं तो, तुम्हारी गुजर-बसर हमारे साथ नहीं हो सकेगी।"

मदन बोला—"मैं भी तुम्हारे साथ खेतों में काम करूंगा और तुम लोगों को शिकायत का मौका नहीं दूंगा।"

अगले दिन सुबह मदन भी भाइयों के साथ खेत पर गया। दिलीप ने उसे खेत दिखाते हुए कहा—"तुम खेत की सारी खर-पतवार को निकाल दो। हम तीनों भाई दूर वाले खेत में जा रहे हैं।" कहते हुए वह भाइयों के साथ वहां से चला गया।

मदन की नजर खेत पर गई। खर-पतवार देख, उसे पसीना आ गया। उसने सोचा—'मैं इस काम को पूरा नहीं कर पाऊंगा। लेकिन काम पूरा न देखकर मेरे भाई मुझे डांटेंगे। हो सकता है, वे मेरी पिटाई भी कर दें।' इस डर से वह जंगल में भाग गया।

भूख-प्यास से मदन का बुरा हाल था। सहसा उसे एक वृक्ष के नीचे एक बौना दिखाई दिया। मदन उसके पास गया। बोला—"भाई ! मैं बहुत भूखा हूं, मुझे कुछ खाने के लिए दे दो।"



यह सुन, बौना मदन को पास की गुफा में ले गया। वहां का दृश्य देखकर मदन हैरान था। वहां शीशे की दीवारों वाला बहुत सुंदर कमरा था। उसमें भांति-भांति के पकवान रखे थे। पकवान देखकर मदन के मुंह में पानी आ गया। कमरे के दरवाजे पर एक ताला लगा था। बौने ने ताला खोलने के लिए चाबी ढूंढ़ी। पर वह नहीं मिली। उसने मदन से कहा—"इस कमरे के ताले की चाबी खो गई है। तुम उसे ढूंढ़ने में मेरी सहायता करो। मैं तुम्हें बढ़िया-बढ़िया पकवान खिलाऊंगा।"

मदन बहुत भूखा था। उसने कहा—"हां, मैं तुम्हारी सहायता करूंगा।"

बौना मदन को लकड़ियों के पास ले गया। बोला—"मैं थोड़ी देर पहले यहां बैठा था। शायद मेरी चाबी इन्हीं लकड़ियों में कहीं खो गई है। तुम इन्हें एक-एक कर दूसरी ओर रख दो। हो सकता है, चाबी मिल जाए।"

यह सुन, मदन घबराया। पर भूखा होने के कारण धीरे-धीरे लकड़ियों को दूसरी ओर रखने लगा। उसके शरीर से पसीना बहने लगा।

अंत में मदन को चाबी मिल गई। बौने ने कमरा खोला। फिर दोनों ने खूब पकवान खाए। इसके बाद बौना बोला—"इस शीशे के कमरे के नीचे एक कमरा और है। कल मैं कुएं पर पानी लेने गया था। सहसा उस कमरे की चाबी उसमें गिर गई। तुम चाबी निकालने में मेरी सहायता करो। मैं तुम्हें उपहार दूंगा।"

"तब तो कुएं का सारा पानी बाहर निकालना पड़ेगा।"—कहते हुए उसके माथे पर बल पड़ गए। मगर उपहार पाने के लालच में उसने बौने की यह शर्त भी मान ली।

अगले दिन प्रातःकाल मदन और बौना कुएं से पानी निकालने लगे। दिन भर काम करने से मदन का शरीर टूटने लगा। फिर भी वह पानी निकालने में लगा रहा। अंत में उसे चाबी मिल ही गई। उसने चाबी बौने को सौंप दी।

बौने ने चाबी से कमरे का ताला खोला। उसमें टंगी भांति-भांति की पोशाकें देखकर, मदन दंग रह गया।

अचानक कमरा अद्‌भुत प्रकाश से चमकने लगा। मदन ने देखा, एक परी वहां आ रही है। मदन ने बौने से पूछा—"यह कौन है?"

बौना बोला—"यह परीलोक की राजकुमारी है। मैं इसका सेवक हूं। यह परिश्रमी मनुष्यों से खुश रहती है।"

परी मदन से बोली—"मैं तुम्हारी मेहनत से बहुत खुश हूं। इसी तरह तुम घर जाकर, अपने भाइयों के साथ काम करो।" कहते हुए उसने ढेर सारे उपहारों के साथ उसे एक बढ़िया पोशाक भी दी।

मदन ने पोशाक पहन ली। अब वह राजकुमार लग रहा था। उसने परी से अपने घर चलने का आग्रह किया।

परी बोली—"मैं हर साल कुछ दिनों के लिए धरती पर आती हूं। मैं मेहनती आदमी को उपहार देती हूं। मैं इस बार तो नहीं, अगली बार तुम्हारे साथ जरूर चलूंगी। पर इसके लिए तुम्हें सुंदर-सा बगीचा बनाना पड़ेगा।"

यह सुन, मदन खुश हो गया। अपने घर की तरफ बढ़ चला।

पल में सोना

—उषा महाजन



किसी गांव में नदी किनारे एक राजगीर रहता था।

नदी के उस पार वाले नगर के अनेक महल-दुमहले उसी के हाथों के कमाल थे। जिस भी भवन को बनाता, मानो उसमें जान फूंक देता। लेकिन अपने लिए उसके पास एक झोंपड़ीनुमा छोटा-सा घर ही था। बड़े घर का करता भी क्या ? न बाल, न बच्चा ! बस, एक सीधी-सादी पत्नी थी। वह दिन-रात भजन-पूजन में लगी रहती। प्रार्थना करती कि प्रभु उसकी गोद भर दें।

एक दिन राजगीर अपने काम में लगा छेनी-हथौड़ी से पत्थरों को तराश रहा था। नगर के बड़े व्यापारी रामलाल का नया भवन बनकर तैयार था। सिर्फ उसके मुख्य द्वार पर आखिरी पत्थर लगाना बाकी था।

शाम घिरने को थी। पर राजगीर अब भी छेनी पर हथौड़ी से धीरे-धीरे ठोंकता, पत्थर पर अद्‌भुत आकृतियां उकेर रहा था।

यह क्या ? पत्थर की जगह छेनी इतनी नरम मुलायम चीज से कैसे टकरा गई थी। इतने हलके वार से ही पत्थर अचानक दो टुकड़ों में कैसे बंट गया ?

राजगीर की हैरानी का ठिकाना नहीं था। उसके सामने जीती-जागती गुड़िया-सी कन्या खड़ी थी।

"मैं सुनहरी परी हूं। एक ऋषि के शाप से बहुत दिनों से इन पत्थरों में दबी पड़ी थी। आपने अपनी छेनी से मेरी अंगूठी में लगी पारस मणि को छू दिया और मैं जीवित हो गई।"—सुनहरी परी ने अपने चमकीले पंख फड़फड़ाते हुए राजगीर से कहा।

राजगीर मानो सपना देख रहा हो। कभी सामने खड़ी परी को देखता, तो कभी अपनी छेनी-हथौड़ी को। जो पारस मणि को छूकर सोने की बन गई थीं।

परी फिर बोली—"आपने मुझे नया जन्म दिया है। आप मेरे पिता हैं। पिता जी, मुझे घर नहीं ले चलेंगे ?"

पत्थर को जस का तस छोड़, परी की अंगुली थामे, राजगीर दौड़ता-हांफता नदी किनारे खड़ी नाव तक पहुंचा। नाविक से कहा—"हमें शीघ्र ही उस पार ले चलो।" घर पहुंचते ही उसने सारा किस्सा अपनी पत्नी को कह सुनाया।

राजगीर की पत्नी की तो मानो जीवन भर की साध पूरी हो गई। उसके लिए तो वह कन्या केवल उसकी बच्ची थी, परी-वरी नहीं। उसने उसे खूब दुलार किया। घंटों अपनी गोद में बिठाए रखा।

पति-पत्नी सामान्य हुए, तो परी ने उनसे कहा—"पिता जी, मैं घर के सभी बरतनों और खिड़की-दरवाजों को अपनी पारसमणि से छुआकर, सोने का बना रही हूं। लेकिन ये केवल आपके लिए ही होंगे। आप इन्हें किसी और को नहीं दे सकते।"

अभी राजगीर और उसकी पत्नी कुछ समझ भी नहीं पाए। पर परी ने दौड़-दौड़कर घर के बरतनों और खिड़की-दरवाजों को अपनी पारसमणि के स्पर्श से, शुद्ध सोने का बना डाला। फिर अपने चमकीले पंखों को उतार, घर की एक दीवार पर टांग दिया। परी अब एक सामान्य कन्या-सी दिखने लगी। जो उसे देखता, देखता ही रह जाता।

सारे गांव में शोर मच गया कि राजगीर को कहीं से

सोने का दबा हुआ खजाना प्राप्त हुआ है। रात ही रात में उसने अपना घर सोने से मढ़ लिया है। लोगों ने उसकी खिड़की में बैठी सुंदर कन्या को भी देखा।

नदी के उस पार वाले नगर तक भी चर्चा जा पहुंची कि राजगीर का घर तो सोने की लंका की भांति चमक रहा है। उसके घर में एक अपूर्व सुंदर कन्या भी आ गई है।

बात रामलाल के कान तक भी पहुंची। उसने राजगीर को बुलवा भेजा। चाहता तो था कि उसे खूब फटकारे। आखिर क्यों ? वह उसके भवन का काम अधूरा छोड़, रात भर अपनी झोंपड़ी को सोने से मढ़ता रहा।लेकिन रामलाल यह भी जानता था कि चतुराई इसी में है कि राजगीर से ठीक तरह पेश आए।

स्वर में खूब मिठास भरकर उससे बोला—''भाई राजगीर, नए भवन के फाटक का काम तो मैं किसी और राजगीर से करवा लूंगा। तुम तो बस अपने घर के सोने के खिड़की-दरवाजे मेरे इस नए भवन में लाकर जड़ दो। मैं तुम्हें उनकी सही कीमत अदा करूंगा।''

राजगीर ने विनम्रता से हाथ जोड दिए—''मेरा और आपका वर्षों से संबंध है।'' मैंने आपके सभी भवनों को बनाया है। आपके नए भवन में अपने घर के खिड़की-दरवाजे लाकर में अवश्य जड़ देता,लेकिन मैं मजबूर हूं। उन्हें वहां से हटाऊंगा, तो वे फिर लोहे के बन जाएंगे। अब आपको कैसे समझाऊं?''

रामलाल मन ही मन बहुत कुढ़ा। सोचने लगा कि राजगीर बहाना बना रहा है। सोच रहा होगा कि शायद ठीक दाम न मिले।

तभी उसे एक उपाय सूझा। उसने राजगीर की सुंदर कन्या के बारे में भी सुना था। क्यों न अपने इकलौते पुत्र के लिए उस कन्या का हाथ मांग ले ? तब तो सारा सोना उसे मिल जाएगा।

रामलाल ने उसके सामने यह प्रस्ताव भी रखा—''हमने तुम्हारी सुंदर कन्या के गुणों की बड़ी चर्चा सुनी है। मैं तुम्हारी पुत्री का हाथ अपने इकलौते बेटे के लिए मांग रहा हूं। तुम शीघ्र ही उसके विवाह की तैयारियां शुरू कर दो।''

राजगीर ने कहा—''अच्छा मालिक, मैं घर जाकर पत्नी और बेटी को सब बात बताता हूं।''

रामलाल मन ही मन मुसकराने लगा कि अब कोई चिंता की बात नहीं। अब तो राजगीर का सारा सोना उसका अपना हो जाएगा।

सुनहरी परी ने सुना,तो बहुत दुखी हुई। वह अपने माता-पिता का घर छोड़कर कहीं जाना ही नहीं चाहती थी। लेकिन राजगीर और उसकी पत्नी ने उसे बहुत समझाया,तब जाकर वह कहीं विवाह के लिए राजी हुई। बोली—''पिता जी, मैं ससुराल तो चली जाऊंगी, लेकिन मेरे सुनहरी पंख यहीं रहेंगे,ताकि मुझे लगे कि इस घर से मेरा रिश्ता अभी भी बना हुआ है। अपने घर आकर मैं जब चाहूं, जितना उड़ सकूं। हां, अपनी पारस मणि वाली अंगूठी अपने साथ ले जाऊंगी। शायद मेरे ससुराल वालों का भी इससे भला हो सके।''

कुछ दिनों बाद ही सुनहरी परी का रामलाल के पुत्र के साथ विवाह होना था। राजगीर बड़ी सोच में पड़ गया। घर के बरतन और खिड़की-दरवाजे सोने के अवश्य थे, पर वह इन्हें तो नहीं बेच सकता था जिससे कि विवाह के खर्च का इंतजाम हो पाता। न ही कन्या



को दे सकता था। करे तो, क्या करे!

थोड़ी बहुत जो जमा पूंजी थी, उसीसे उसने किसी तरह विवाह की सारी तैयारियां पूरी कीं। सोने के घर में लगे फूलों के बंदनवार ऐसे लग रहे थे-मानो स्वर्ग ही धरती पर उतर आया हो। लेकिन बारात को खिलाने के लिए वह रूखा-सूखा भोजन ही जुटा पाया। रामलाल था कि पूरे नगर को बाराती बनाकर ले आया था।

खैर, किसी तरह विवाह की रस्में संपन्न हुईं। रामलाल को अब भी उम्मीद थी कि राजगीर अपने घर का सारा सोना उसे दे डालेगा। अतः विदाई की रस्म तक वह चुप रहा।

दुल्हन के वेश में सुनहरी परी का रूप देखते ही बन रहा था। कानों में कुंडल, बालों में गजरे, नाक में नथ, पैरों में बिछुए। लेकिन सब के सब फूलों के बने। सोने के नाम पर अंगुली में सिर्फ एक पतली-सी अंगूठी भर थी। उसमें लाल रंग का कोई पत्थर जड़ा था। राजगीर और उसकी पत्नी ने रोते हुए बेटी को विदा किया।

रामलाल को काटो तो खून नहीं। राजगीर ने तो दहेज में कानी कौड़ी भी नहीं दी थी। पर विवाह हो चुका था और राजगीर की कन्या अब उसकी पुत्रवधू थी।

बहू को विदा करा, वह अपने नगर लौट रहा था। नदी के उस पार जाना था। तट पर उसकी नावें खड़ी थीं। बाराती और रामलाल नववधू को लेकर नावों में सवार हो गए। नाविक जल्दी-जल्दी चप्पू चलाते नावों को नगर की दिशा में खेने लगे।

रामलाल से न रहा गया। पुत्र को संबोधित करते हुए बोला—"राजगीर ने हमें धोखा दिया। कन्या को खाली हाथ हमें सौंप दिया। दान-दहेज के नाम पर कानी-कौड़ी तक नहीं दी।"

पुत्रवधू बनी सुनहरी परी ने यह सुना, तो दुखी हो उठी। एक तो पीछे छूटे माता-पिता का बिछोह, ऊपर से ससुर के ऐसे कड़वे वचन। मां ने ससुराल में निभाने वाली मान-मर्यादा की सारी शिक्षा दी थी, पर माता-पिता की बुराई उससे न सुनी गई। सिर झुकाए-झुकाए ही अंगुली से लाल पत्थर जड़ी अंगूठी उतारी। पति को दिखा कर बोली—"देखिए, दी तो है मेरे माता-पिता ने यह अंगूठी। इससे बढ़कर दहेज भला वे क्या देते?"

रामलाल का बेटा भी अपने पिता से कम न था। पत्नी के हाथों से अंगूठी लेकर उसे हवा में उछालकर बोला—"वाह, यह देखो अंगूठी! सिर्फ एक अंगूठी!"

अंगूठी नाव के कोनों और पतवारों को छूती हुई नदी में जा गिरी।

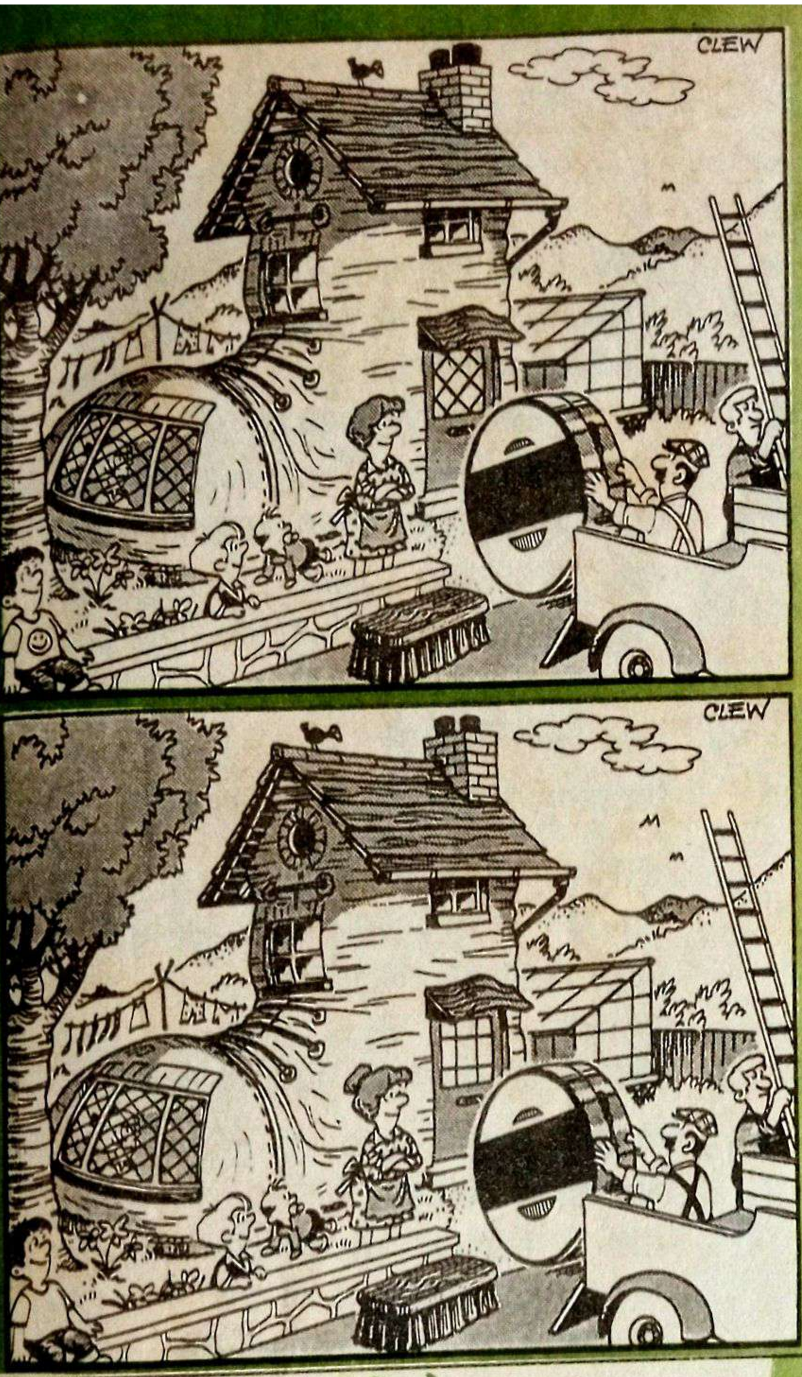
रामलाल, उसका पुत्र और बाराती हक्के-बक्के देखते रह गए। नाव और पतवार में लगी लोहे की कीलें सभी अंगूठी के स्पर्श मात्र से सोने में बदल गई थीं।

दुल्हन के रूप में नाव में बैठी सुनहरी परी ने अपना घूंघट हटा दिया। पति को संबोधित करती हुई बोली—"स्वामी, कहते हैं कि गुणवती कन्या अपने आप में ही सबसे बड़ा धन होती है। वह जिसे छू दे, वही सोने का हो जाता है। मेरी उस अंगूठी में तो पारसमणि लगी थी। मैं उससे अपने पूरे घर को सोने का बना सकती थी। पर आपने प्रतीक्षा नहीं की।"

इतना कहते ही रामलाल की पुत्रवधू, सुनहरी परी नदी में कूद, अदृश्य हो गई। शायद उसे नदी के तल में अपनी पारसमणि वाली अंगूठी मिल गई होगी।

व्यापारी और उसका पुत्र जीवन भर उसकी याद में रोते रहे। ●





आप कितने बुद्धिमान हैं ?

यहां दो चित्र बने हुए हैं। ऊपर पहले बनाया हुआ मूल चित्र है। नीचे इसी चित्र की नकल है। नीचे का चित्र बनाते समय चित्रकार का दिमाग कहीं खो गया। उसने कुछ गलतियां कर दीं। आप सावधानी से दोनों चित्र देखिए। क्या आप बता सकते हैं कि नीचे के चित्र में कितनी गलतियां हैं ? इसमें दस गलतियां हैं। सारी गलतियों का पता लगाने के बाद आप स्वयं इस बात का फैसला कर सकते हैं कि आपकी बुद्धि कितनी तेज है। १० गलतियां ढूंढ़ने वाला : **जीनियस**; ६ से ९ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **बुद्धिमान**; ४ से ५ तक गलतियां ढूंढ़ने वाला : **औसत बुद्धि**; ४ से कम गलतियां ढूंढ़ने वाला : **वह स्वयं सोच ले कि उसे क्या कहा जाए।**

सही उत्तर इसी अंक में किसी जगह दिए जा रहे हैं। आप सावधानी से प्रत्येक पृष्ठ देखिए और उत्तर खोजिए। आपकी बुद्धि की परख के लिए निर्धारित समय—१५ मिनट।

कहानी लिखो : १८८

□ सामने छपे चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए, उसे १० जुलाई '९९ तक कहानी लिखो, नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेज दीजिए। चुनी हुई कहानी प्रकाशित की जाएगी। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : सितम्बर '९९



चित्र-पहेली : १८८

□ 'दूसरे लोक में' विषय पर रंगीन चित्र बनाइए, जो ६ इंच×९ इंच से बड़ा न हो। चित्र के पीछे अपना नाम, आयु और पता लिखिए। उसे १० जुलाई '९९ तक नंदन कार्यालय में भेज दीजिए। चुना गया चित्र नंदन में छपेगा। पुरस्कार भी मिलेगा।

परिणाम : अक्तूबर '९९

ठुमक-ठुमक

मैं तो बिल्कुल नहीं खेलता नाटक मम्मी जी, इस बार,
गुड्डी को तो परी बनाया, मुझे बनाया राजकुमार।

इसके ठाट-बाट तो देखो
कैसी शान निराली है,
आंखों में काजल, गालों पर
कितनी प्यारी लाली है।

मेरे मुंह पर थोप दिया है बस सूखा पौडर बेकार।

सातों रंग सजे पंखों में
वस्त्रों में उजियाली है,
ठुमक-ठुमक चलती है जैसे
बस उड़ने ही वाली है।
मेरी अचकन ढीली-ढाली, चुस्त पजामा चूड़ीदार।

इसको मुरली मिली सुरीली
होकर मगन बजाती है,
इसको गीत सिखाए सबने
झूम-झूमकर गाती है।
मुझे मिला लकड़ी का घोड़ा या यह गत्ते की तलवार।

मुझको तो बस हुक्म चलाना
यह हंस-हंसकर बोलेगी,
अपनी प्यार भरी बातों से
यह मिसरी-सी घोलेगी।
मेरा काम लड़ाई करना, इसका काम सदा उपकार।
गुड्डी को तो परी बनाया, मुझे बनाया राजकुमार।

दादा-पोती



पोती जी की दादा जी से बड़े मजे की छनती है।
पोती लुढ़क-लुढ़ककर चलती
लोट-पोट हो जाती है,
दादा जी भी चलते डगमग
ऐनक जब खो जाती है।
इसीलिए शायद दोनों में कुछ ज्यादा ही बनती है।

दादा जी हो चले पोपले
दलिया-खिचड़ी खाते हैं,
पोती जी के दांत दूध के
चीजें नरम चबाते हैं।
हलवा-पूरी खाकर दोनों की ही दावत मनती है।

अभी हाल पोती का मुंडन
धूम-धाम से किया गया,
दादा जी के सिर पर मुश्किल
से उगता है बाल नया।
दादा जी हैं बड़े सयाने, पोती भी गुणवंती है।

पोती को गोदी में लेकर
रोज टहलने जाते हैं,
दादा जी चिड़चिड़े, सभी से
पल भर में चिढ़ जाते हैं।
दादा जी की पोती जी से कभी न लेकिन ठनती है।
पोती जी की दादा जी से बड़े मजे की छनती है।

—बालस्वरूप राही

मटके जैसी तोंद



किस चक्की का पीसा खाते
जो यूं फूले नहीं समाते,
मटके जैसी तोंद हिलाते
वह देखो मोटूमल आते।

चार कदम चलकर मोटूमल,
घंटे-घंटे भर सुस्ताते,
बैठ गए तो उठना मुश्किल
और उठे तो बैठ न पाते।

गाल कचौड़ी जैसे फूले,
नैन नजर मुश्किल से आते,
हंसते हैं जब-जब मोटूमल,
दोनों नैन बंद हो जाते।

दस बच्चे अंदर छुप जाएं,
यूं झोलमझोला बनवाते,
दुनिया सिलवाती है कुर्ता,
मोटूमल तम्बू सिलवाते।

अपने मोटेपन के खुद ही,
चुन-चुनकर चुटकुले सुनाते,
इसीलिए प्यारे मोटूमल,
खूब मुहल्ले भर को भाते।

—सूर्यभानु गुप्त

शहद में खजूर

—बसीरा खातून

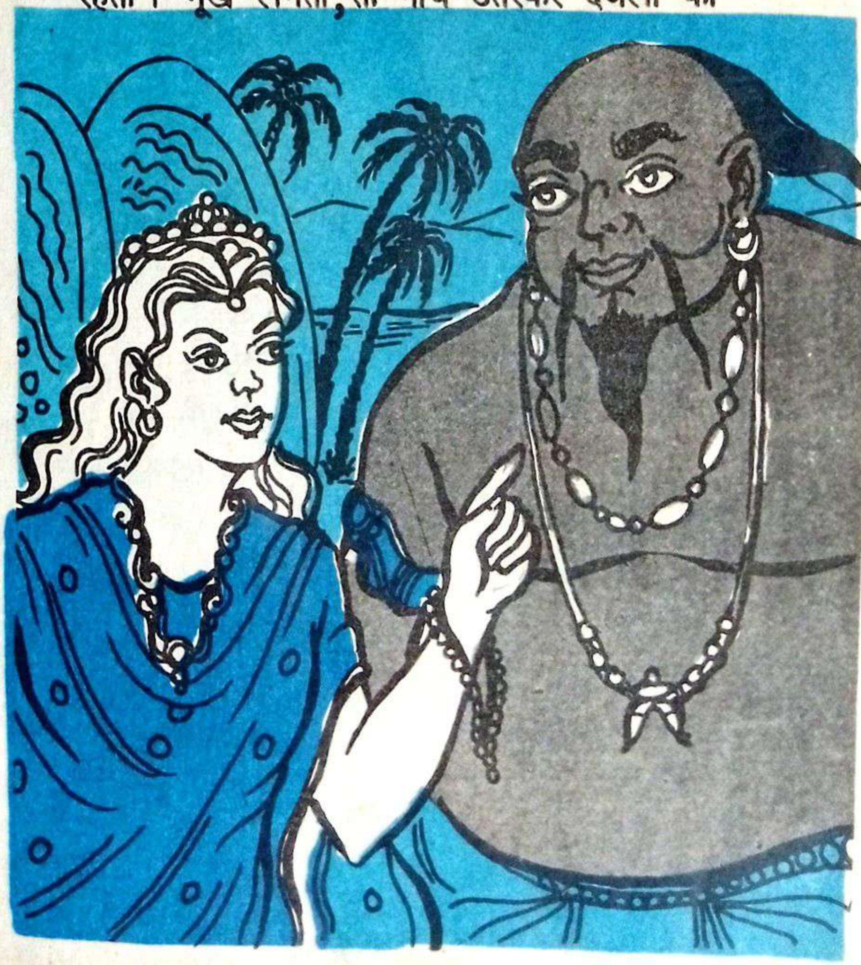
इराक शहर के बीच से बहने वाली नदी दजला के किनारे छोटा-सा नखलिस्तान था। उसमें खजूर के चालीस वृक्ष थे। उनकी जड़ों में नालियां बनी थीं। उनमें पानी भरा होता था। गर्मी के मौसम में भी इस नखलिस्तान के अंदर बहने वाली हवा ठंडी रहती थी। खजूर के दरख्त भी सदा फलों से लदे रहते थे। इतने मीठे खजूर थे, जिसके कारण उसका नाम 'शहद-नखलिस्तान' पड़ गया था। उसमें एक देव ने डेरा डाल लिया था। देव का नाम 'हनीफा' था। उसे आराम की बुरी लत लग गई थी। करने को था भी क्या ? खाने को मीठे रसीले खजूर, पीने को दजले का पानी और सोने के लिए मिट्टी का चिकना मुलायम बिस्तर। कहते हैं, खाली दिमाग शैतान का घर होता है। वही हाल हनीफा का हुआ।

साल भी नहीं बीता कि उस नखलिस्तान के पास से गुजरने में मुसाफिर घबराने लगे। बैलगाड़ी गुजरती, तो उस पर लदा माल हनीफा उछाल-उछाल कर फेंकता। घोड़ा गुजरता, तो ऊंचे दरख्त से कूदकर सवारी को डराता। लोग उसे न देख सकने के कारण बहुत परेशान होते। वे अक्सर भयभीत हो, सामान, सवारी छोड़ पैदल भाग लेते। हनीफा यह सब देखकर, जोर-शोर से हंसता। अपनी शरारत से परेशान लोगों को देख, उसका हौसला बढ़ता गया। एक दिन ऐसा आया कि लोगों ने नखलिस्तान का नाम शहद की जगह 'भुतहा नखलिस्तान' रख दिया।

नखलिस्तान से कुछ दूर पर गुलाब के फूलों का बाग था। वहां पर परियों का घर था। देव उनका रिश्ते में दूर का चाचा लगता था। एक दिन गुलाबपरी ने हनीफा को समझाने की ठानी। चलते समय उसकी बहू-बेटियों, लड़कों और दामादों ने समझाया कि वह दिमाग का ढीला है। समझाने से नहीं मानेगा, उलटे यहां आकर उपद्रव न मचाने लगे ? लेकिन उनकी मां गुलाबपरी को विश्वास था कि वह सिरफिरे हनीफा को समझा लेगी।

सारी बातें सोचती हुई गुलाबपरी जब नखलिस्तान पहुंची, तो देखा कि तोंद भरे हनीफा मुंडेर पर लेटा खर्राटे भर रहा है। खजूर के पकने के दिन थे। महक से बागान भरा हुआ था। गुलाबपरी के मुंह में पानी भर आया। उसने एक गुच्छा तोड़ा और बैठकर खाने लगी। उसे हनीफा के उठने तक इंतजार करना था। खजूर का स्वाद गजब का था। गुलाबपरी लालच में पड़ गई। पेट भर खाने के बाद, उसने दस-बीस गुच्छे अपने बच्चों के लिए तोड़े और नीचे उतरी। तभी हनीफा की आंखें खुल गईं। दुआ-सलाम के बाद गुलाबपरी ने उसे समझाना अपना फर्ज समझा। मगर हनीफा पर कोई असर न हुआ। वह उसी तरह बैठा जोर-जोर से हंसता रहा। तंग आकर गुलाबपरी घर लौट आई।

उस नखलिस्तान की इतनी बदनामी फैली कि मालिक ने बाग की तरफ ध्यान देना छोड़ दिया। पेड़ सूखने लगे। पानी की कमी के कारण बौर आए नहीं। अब हनीफा के भूखे मरने के दिन शुरू हो गए। उसकी शरारत कम होने लगी। तोंद घट गई और वह उदास पेड़ पर बैठा, आने-जाने वालों को ताकता रहता। भूख लगती, तो नीचे उतरकर दजला का



ठंडा-मीठा पानी पी लेता । कभी-कभी अपने किए पर पछताता भी।मगर अब बिगड़ा काम बन कैसे सकता था ?

नखलिस्तान का मालिक उस जमीन पर एक हवेली बनाने की सोचने लगा । एक दिन वह चंद आदमियों को लेकर भी आया । यह सब देखकर हनीफा परेशान होकर,गुलाबपरी के पास गया । दुख भरी कहानी सुनाने लगा । सुनकर गुलाबपरी ने पहले बुरा सा मुंह बनाया । फिर कांटों का पंखा देकर कहा — "यही भेंट है मेरे पास तुम्हें देने को ।"

हनीफा का दिल टूट गया । वह पंखा उठाकर चलने लगा, तो गुलाबपरी को तरस आ गया । बोली— "ठहरो, ध्यान से मेरी बात सुनो । तुममें दस आदमियों की ताकत है । नखलिस्तान की क्यारी ठीक कर,सिंचाई करो । फिर वहीं पर बैठ, अपने पाप की क्षमा-याचना उन वृक्षों से करो । यदि पेड़ों ने तुम्हें माफ कर दिया,तो स्वयं उनमें फल लग जाएंगे।"

कुछ दिन बाद नखलिस्तान का मालिक जब खुदाई का सामान और मजदूर लेकर आया, तो देखकर दंग रह गया कि नालियों में पानी भरा था । क्यारियों की मेड़ सलीके से बनी थी । पेड़ों पर नए पत्ते निकल आए थे । ऐसा महसूस हो रहा था कि बस फल लगने ही वाले हैं । यह देखकर उसकी आंखें भर आईं । उसने पेड़ों के तनों को थपथपाया । धीरे से कहा— "मुझे माफ करना मेरे दोस्तो ! मैं तुम्हें उखड़वाने आया था !" इतना कहकर वह चला गया ।

यह सारा दृश्य हनीफा देव को हिला गया । उसने तौबा की कि वह किसी को दुखी देखकर,खुश नहीं रहेगा । बल्कि दूसरों की खुशी में अपने सुख को तलाश करेगा । कहते हैं, उस वर्ष नखलिस्तान में इतने बड़े और मीठे खजूर लगे कि बाजार में हर कोई उन्हें ही खरीदने पहुंचता था। पर किसी को पता नहीं था कि हनीफा रोज उन बच्चों की मुट्ठी में एक-एक खजूर रखना नहीं भूलता था, जो सारे दिन की कड़ी मेहनत के बाद रात को घोड़े बेचकर सोते थे ।

(इराक)

निकल आया पानी

—डा. ओमप्रकाश सिंहल

मुर्गे ने तीन बार जोर से बांग दी । उसे सुनकर,घरों में सोए लोगों की नींद खुल गई । वे एक-एक करके बाहर निकलने लगे । कभी कोई बूढ़ा निकलता, तो कभी कोई बच्चा । कभी कोई युवक बाहर आता, तो कभी कोई युवती । देखते-देखते मोहल्ले में अच्छी खासी भीड़ जमा हो गई । सब लोग कभी आकाश की ओर ताकते, तो कभी धरती की ओर । मन ही मन ईश्वर से बारिश करने की प्रार्थना करते । यह सिलसिला कई महीनों तक चलता रहा,लेकिन बारिश नहीं हुई ।

एक दिन बड़ी विचित्र घटना घटी । लोगों ने पश्चिम दिशा से एक बूढ़े व्यक्ति को तेज चाल से चल कर अपनी ओर आते देखा । कुछ ही देर में वह उनके पास आ गया। उसे गुस्से में देखकर,एक मसखरा युवक पूछ बैठा— "दादा,आप इतने गुस्से में क्यों हैं ?'

अभी वह कुछ और भी पूछने वाला था कि भीड़ में खड़े एक बुजुर्ग ने उस युवक को टोका । कहा— "अब तुम बच्चे नहीं हो । तुम्हें बड़ों से बात करने का सलीका आना चाहिए ।"

यह सुनकर बूढ़ा व्यक्ति खुश हो गया । बोला— "आप लोग बड़े परेशान नजर आ रहे हैं।"

नवयुवक को टोकने वाले बुजुर्ग ने दुखभरी आवाज में कहना शुरू किया— "श्रीमन् , आपका अनुमान बिल्कुल सही है । जब से यह शहर बसा है तब से यहां पानी की बड़ी किल्लत है । एक तो यहां का पानी खारा है और फिर बहुत दिनों से वह भी नहीं मिल रहा है ।"

यह सुनकर उस बूढ़े ने कहना शुरू किया— "अभी एक नौजवान ने मुझसे यह पूछा था कि मैं सुबह-सुबह गुस्से में क्यों बड़बड़ा रहा हूं । तो लो, उसका उत्तर सुनो । एक दिन मैंने सपने में देखा कि मेरे घर से लगभग दो हजार किलोमीटर दूर, पूरब की ओर एक शहर है । वहां के लोग पानी न मिलने के

कारण बेहद परेशान हैं। सुबह होते ही मैंने अपने भाई को यह सपना सुनाया। मेरी बात सुनने के बाद वह बोला कि उसने भी ठीक वैसा ही सपना देखा है। हम दोनों भाई कुएं खोदने में माहिर हैं। इसलिए हमने उसी समय पूर्व दिशा की ओर चलने और प्यास से तड़प रहे लोगों की मदद करने का फैसला कर लिया।

"हम दोनों भाई तेज कदमों से चलते रहे। कई दिन की कठिन यात्रा के बाद, कल शाम को इस शहर के पास पहुंचे थे। हमने वहीं एक ताओ मंदिर में रात गुजारने और एकदम सुबह चल देने का फैसला किया। उस मंदिर का पुजारी शतरंज का दीवाना है। मेरा भाई भी शतरंज का माना हुआ खिलाड़ी है। बातों ही बातों में दोनों को यह पता लग गया। फिर क्या था! खाना-पीना भूल कर शतरंज बिछा दी गई। शह और मात का सिलसिला चल पड़ा।

"मैंने अपने भाई से कहा कि वह शतरंज खेलना छोड़कर सो जाए, जिससे सुबह प्रस्थान किया जा सके। पर मेरे भाई ने एक न सुनी। देर रात तक वह शतरंज खेलता रहा। वह तभी उठा, जब ताओ मंदिर के पुजारी ने अपनी हार मान ली। जब मैंने सुबह अपने भाई को जगाया, तो वह उठा नहीं। कई बार कोशिश करने पर असफल होने के बाद मैं उसे सोता छोड़कर, अकेला ही चल दिया। ऐसा मैंने इसलिए किया जिससे जल्दी से जल्दी पहुंच कर, लोगों की मदद कर सकूं।"

लोगों को यह सुनकर, बड़ी तसल्ली मिली कि वह व्यक्ति कुआं खोदना जानता है और उनकी मदद के लिए आया है। उन्हें ऐसा महसूस हुआ, मानो आकाश देवता ने ही उसे यहां भेजा है। इसलिए उन्होंने विनम्रतापूर्वक कहा—"हमने पानी की तलाश में कितने ही कुएं खोद कर देख लिए, पर पानी कहीं नहीं निकला। लगता है, धरती भी हमसे रूठ गई है। उसे हमारी हालत पर तरस नहीं आता। अब आप ही हमारी मदद करें।"

यह सुनकर, बूढ़े व्यक्ति ने लोगों से कहा कि उसे वे कुएं दिखाए जाएं जिनमें पानी नहीं निकला। यह सुनते ही कई लोग कुएं दिखाने के लिए चल पड़े।

बूढ़े व्यक्ति ने देखा कि लोग जिन्हें कुआं कह रहे थे, वे कुएं न हो कर छोटे-बड़े गड्ढे भर थे। उसे यह अनुमान लगाने में देर नहीं लगी कि ये लोग कुआं खोदना नहीं जानते। अतएव वह एक अधखुदे कुएं पर रुक गया। उसने अपनी जेब से एक यंत्र निकाला, फिर जमीन पर कभी यहां और कभी वहां रखा। उस यंत्र की सूइयों को हिलते-डुलते देखकर, वह खुशी से झूम उठा। फिर उसने लोगों से फावड़ा लाने के लिए कहा।

एक नवयुवक दौड़ा-दौड़ा अपने घर गया। पलक झपकते एक फावड़ा ले आया। बूढ़े व्यक्ति ने उस जगह को खोदना शुरू किया, जहां यंत्र की सूई ने हिलना शुरू किया था। थोड़ी ही देर में गीली मिट्टी निकलने लगी। लोगों के चेहरों पर छाई मुर्दनी दूर हो गई। दो फावड़े और लगाने के बाद पानी की एक मोटी धार उछल कर बाहर आई। इसके बाद तो देखते ही देखते पानी चारों ओर फैलने लगा।

लेकिन इसके साथ ही एक दूसरी समस्या खड़ी हो गई। पानी लगातार बाहर फैलता जा रहा था। बूढ़े व्यक्ति के लाख कोशिश करने पर भी जब पानी नही रुका, तो उसने झुंझलाते हुए एक मंत्र पढ़ना शुरू किया।

इतने में एक आदमी दूर से आता हुआ दिखाई दिया। उसकी लम्बी, सफेद दाढ़ी थी। चौड़ा माथा था। ऐसा लगता था, मानो वह कोई देवदूत हो। उसने काली दाढ़ी वाले बूढ़े से कहा—"ओ मेरे उतावले भाई! तूने यह क्या किया? यदि मैं थोड़ी भी देर से पहुंचता, तो सारा इलाका बाढ़ में डूब जाता।"

यह कहने के साथ-साथ उसने अपनी पीठ पर रखे कड़ाह को औंधा करके कुएं के मुंह पर रख दिया। कड़ाह एकदम नीचे जा पहुंचा और कुएं से बाहर बह रहा पानी सिमटना शुरू हो गया। धीरे-धीरे वह कुएं के भीतर सिमट कर रह गया।

कड़ाह के नीचे धंस जाने के कारण आज भी उस कुएं की तलहटी सपाट न होकर उभरी हुई है। पानी मुंह तक लबालब भरा रहता है। (चीन)

लाओ सेब

—शारदा यादव



एक विधवा स्त्री अपनी बेटी हालेना और सौतेली बेटी मारुशका के साथ रहती थी। हालेना आलसी, कुरूप तथा क्रोधी स्वभाव की थी। मारुशका मेहनती, दयालु व सुंदर थी।

एक बार की बात है, बहुत सर्दी पड़ रही थी। बाहर घुटनों तक बर्फ थी। सर्दी के कारण पशु-पक्षी तो क्या, मनुष्य भी घर से बाहर नहीं निकलते थे। ऐसी सर्दी में हालेना का मन बैंगनी फूलों की खुशबू के लिए मचल उठा। वह मारुशका से बोली—"काम पूरा करके जल्दी जंगल की ओर चली जाओ। मेरे लिए बैंगनी फूल ले आओ।"

मारुशका बोली—"प्यारी बहन, तुम तो जानती हो कि शरद ऋतु चल रही है। चारों ओर बर्फ ही बर्फ है। ऐसे में भला फूल कहां खिलेंगे?"

मारुशका का उत्तर सुन, गुस्से से भरकर हालेना बोली—"मुझे इसी वक्त बैंगनी फूल चाहिएं।"

मारुशका ने मां से कहा—"मां, आप ही इसे समझाइए न! भला ऐसे मौसम में फूल कहां खिलते हैं?"

मां ने मारुशका को धक्के देते हुए कहा—"इसी वक्त घर से निकल जा। जब तक बैंगनी फूल न मिलें, घर मत आना।"

बेचारी मारुशका को न चाहते हुए भी बर्फ के तूफान में घर से निकलना पड़ा। वह जंगल की ओर चल पड़ी। बर्फ के मारे घास भी उसे कहीं दिखाई नहीं दे रही थी।

चलते-चलते उसने बर्फ के कई पहाड़ पार किए। भूख व ठंड के मारे उसका बुरा हाल था। एक बर्फीली पहाड़ी के पास उसे आग जलती हुई दिखाई दी। उसे थोड़ी राहत मिली। उसने देखा कि वहां बारह पत्थर बिछे हुए हैं। हर पत्थर पर एक-एक व्यक्ति बैठा है। ये बारह महीने थे। उनमें से तीन की दाढ़ी सफेद थी। उनके पास ही और तीन व्यक्ति थे, जिनकी दाढ़ी काली थी। उनके पास तीन उनसे कम उम्र के पुरुष और पास में ही तीन युवा बैठे थे। वे सब चुपचाप आग सेक रहे थे।

सबसे बड़े पत्थर पर जो व्यक्ति बैठा था, उसके हाथ में छड़ी थी। मारुशका उसे देखकर मुसकराई तथा प्रणाम किया। बोली—"क्या मैं आपके पास बैठकर आग ताप सकती हूं?"

छड़ी वाले व्यक्ति ने मुसकराते हुए कहा—"आओ बेटी, हमारे पास बैठो। लेकिन तुम यहां क्या करने आई हो?"

मारुशका ने उत्तर दिया—"मैं बैंगनी फूल ढूंढ़ते-ढूंढ़ते इधर आ गई हूं।"

"बैंगनी फूल! क्या तुम नहीं जानतीं कि ऐसे मौसम में बैंगनी फूल नहीं खिलते।"—उस व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा।

मारुशका ने रुआंसे स्वर में अपनी मजबूरी बता दी।

छड़ी वाले व्यक्ति ने कुछ देर सोचने के बाद कहा—"मार्च भाई, जाओ और मेरे स्थान पर बैठ जाओ। हमें बेटी मारुशका की समस्या हल करनी पड़ेगी।"

मार्च छड़ी वाले व्यक्ति के स्थान पर बैठ गया।

उस व्यक्ति ने अपनी छड़ी घुमाई और एक मंत्र पढ़ा। उसी समय बर्फ पिघलनी शुरू हो गई। पेड़ों पर पत्ते दिखने लगे और पक्षी चहकने लगे। पक्षियों के चहचहाते ही हरी-हरी घास उग आई।

घास में बैंगनी फूल खिल उठे। ऐसा लगता था कि बसंत ऋतु आ गई है।

"मारुशका, जितने भी बैंगनी फूल तुम्हें चाहिएं, जल्दी से ले लो।"—मार्च ने कहा।

मारुशका ने खूब सारे फूल तोड़ लिए और बारह मासों को धन्यवाद दिया। छड़ी वाले व्यक्ति ने कहा—"पुत्री! अब तुम घर चली जाओ। कभी भी कोई परेशानी हो, हम तुम्हारी सहायता अवश्य करेंगे।"

मारुशका ने सिर झुकाया और घर की ओर चल दी।

हालेना व उसकी मां इतने सारे फूलों को देखकर आश्चर्यचकित रह गईं। "तुम इतने सारे फूल कहां से लाईं?"—हालेना ने पूछा।

मारुशका ने उसे फूल देते हुए कहा—"वहां दूर पहाड़ पर बहुत सारे फूल उगे हुए हैं। मैं वहीं से तोड़ कर लाई हूं।"

दूसरे दिन हालेना गुस्से में मारुशका से बोली—"मुझे इसी वक्त ताजा स्ट्राबेरी चाहिएं।"



मारुशका बोली—"बहन, तुम जानती हो न, कितनी बर्फ पड़ रही है। ऐसी बर्फ में स्ट्राबेरी कहां उगती हैं?"

हालेना और उसकी मां ने धक्के देकर मारुशका को घर से निकाल दिया। मारुशका ठंड से कांपती हुई उसी पहाड़ की ओर चल दी। बर्फ के कारण चलना दूभर हो रहा था। बारह भाइयों को आग सेकते देख, उसकी जान में जान आ गई। उसने सबको प्रणाम किया।

छड़ी वाले व्यक्ति के पूछने पर मारुशका बोली—"मुझे स्ट्राबेरी चाहिएं।" "स्ट्राबेरी!"—छड़ी वाला व्यक्ति आश्चर्यचकित हो, मारुशका की ओर देखता रह गया। मारुशका ने फिर उसे हालेना की जिद के बारे में बताया।

आखिर छड़ी वाले व्यक्ति ने अपने सामने वाले व्यक्ति से कहा—"भाई जून, तुम मेरे स्थान पर बैठ जाओ।"

जून छड़ी वाले व्यक्ति के स्थान पर बैठ गया। उस व्यक्ति ने छड़ी घुमाई और कुछ बुदबुदाया। उसी समय बर्फ पिघलने लगी। हरे-भरे पेड़ों पर पक्षी चहकने लगे। चारों ओर फूल ही फूल खिल उठे। फिर स्ट्राबेरी के पौधे भी उग आए। उन पर स्ट्राबेरी लगी हुई थीं। जून माह बोला—"मारुशका, जल्दी से मनचाही स्ट्राबेरी झोली में भर लो।"

मारुशका ने अपनी झोली स्ट्राबेरी से भर ली और धन्यवाद देते हुए कहा—"मैं आपकी बहुत आभारी हूं। आप लोगों ने मेरी बहुत मदद की है।"

मारुशका ने सिर झुकाकर उनसे विदा ली और घर की ओर चल दी।

हालेना व उसकी मां ने पलक झपकते ही सारी स्ट्राबेरी खा डालीं। उन्होंने मारुशका को एक भी स्ट्राबेरी चखने तक को नहीं दी।

तीसरे दिन हालेना और उसकी मां ने मारुशका को मीठे सेब लेने के लिए उसी पहाड़ पर भेजा। न चाहते हुए मारुशका को जाना पड़ा। उसने उन बारह भाइयों को प्रणाम किया और अपनी परेशानी बताई।

छड़ी वाले व्यक्ति ने अपने भाई अक्तूबर से कहा—"भाई, तुम मेरे स्थान पर बैठ जाओ। हमें मारुशका की सहायता करनी चाहिए।"

अक्तूबर उठकर छड़ी वाले व्यक्ति के स्थान पर बैठ गया। उस व्यक्ति ने छड़ी घुमाई व मंत्र पढ़ा। मंत्र पढ़ते ही वहां सेब के वृक्ष दिखाई देने लगे। अक्तूबर ने खड़े होकर, बड़े-बड़े दो सुंदर सेब मारुशका को तोड़कर दिए। कहा—"बेटी, इन्हें लेकर जल्दी घर चली जाओ।"

मारुशका ने सेब लिए तथा शीघ्रता से घर की ओर चली गई। हालेना व मां इतने सुंदर सेब देखकर चकित रह गईं।

उन दोनों ने ऐसे मीठे सेब पहले कभी नहीं खाए थे। हालेना बोली—"तुम केवल दो ही सेब क्यों लाई हो ?"

मारुशका ने बारह भाइयों के विषय में सब कुछ बताया। बोली—"अक्तूबर ने मुझे केवल दो ही सेब दिए।"

"तुम झूठ बोलती हो। तुमने सेब रास्ते में खा लिए।"–हालेना चीखने लगी।

मारुशका ने उत्तर दिया—"मैं भला रास्ते में क्यों सेब खाती ?" पर उसके इतना कहते ही हालेना उसे मारने लगी। वह भागकर रसोईघर में छिप गई।



हालेना गुस्से में पैर पटकती हुई बोली—"मां, मुझे टोकरी दो। मैं खुद ही सेब तोड़कर लाऊंगी। मारुशका तो उन्हें रास्ते में खा लेगी।"

मां के मना करने पर भी वह नहीं मानी और पहाड़ की तरफ चल दी।

हालेना चलते-चलते थक गई, लेकिन सेब खाने के लालच में वह चलती रही। मारुशका ने बारह भाइयों के बारे में बताया था। उन्हें आग के पास बैठा देखकर हालेना बहुत प्रसन्न हुई। उसने उन्हें प्रणाम भी नहीं किया और आग सेकने लगी।

छड़ी वाले व्यक्ति ने पूछा—"पुत्री, तुम यहां क्यों आई हो ?"

हालेना गुस्से से बोली—"तुम कौन होते हो पूछने वाले ? मैं यहां सेब लेने आई हूं और सेब लेकर जाऊंगी।"

"क्या मैं तुम्हारी सहायता करूं ?"—वह बोला।

"तुम मेरी क्या सहायता करोगे ? तुम तो खुद बूढ़े हो। तुम्हें तो खुद सहायता की आवश्यकता है।"—हालेना ने चिल्लाकर कहा।

उस व्यक्ति ने छड़ी घुमाई, उसी समय बर्फ से धुआं निकलने लगा। हालेना वहीं गिर गई और उसकी मृत्यु हो गई।

मां रात-दिन दरवाजे पर हालेना की प्रतीक्षा करने लगी। लेकिन हालेना वापस नहीं आई। मां ने मन ही मन सोचा—'अब मुझे हालेना को वापस लेने जाना होगा। शायद उसे सेब बहुत अच्छे लग रहे होंगे, इसलिए वह वहीं रह गई होगी।'

चारों ओर बर्फ ही बर्फ थी। हालेना की मां उसे ढूंढ़ने निकली, लेकिन हालेना उसे नहीं मिली। बर्फ में दबकर मां की भी मृत्यु हो गई।

मारुशका बहुत मेहनती थी। उसने खेतों में खूब मेहनत करके बीज बोए। थोड़े ही दिनों में खेत में फसलें लहलहाने लगीं। मारुशका का विवाह हो गया और वह सुख से अपने पति के साथ रहने लगी।

(स्लोवाक)

हिंदुस्तान टाइम्स का प्रकाशन

—बच्चों का अखबार—

नंदन बाल समाचार

नंदन का शुल्क
एक वर्ष : ९५ रुपए
दो वर्ष : १७५ रुपए

वर्ष : ३५ अंक : ९ नई दिल्ली ; जुलाई '९९ ; ज्येष्ठ-आषाढ़ ; शक सं. १९२१

घुसपैठियों को खदेड़कर ही दम लेंगे

''मैं ऐसी मौत मरना चाहता हूं कि लोग मुझे याद करें।''— कारगिल की लड़ाई में शहीद होने वाले मेजर कमलेश प्रसाद ने कुछ दिनों पहले घर भेजे एक खत में लिखा था। शहीद रवींद्र सिंह डेढ़ वर्ष पूर्व ही सेना में भर्ती हुए थे। उनके पिता ने कहा—''मुझे गर्व है कि बेटे ने देश के लिए लड़ते हुए जान दी।''

पाकिस्तान ने भाईचारे का दिखावा किया। अपने सैनिकों के साथ कश्मीर के कारगिल क्षेत्र में घुसपैठियों को भेजकर महत्वपूर्ण पहाड़ियों पर कब्जा जमा लिया। भारत सरकार ने सूचना मिलते ही पाकिस्तानी सैनिकों तथा घुसपैठियों को बाहर निकालने के लिए 'आपरेशन विजय' अभियान आरंभ किया। इस अभियान में वायुसेना और थलसेना मिलकर काम कर रहे हैं।

वायुसेना ने जबरदस्त बमबारी करके घुसपैठियों की कमर तोड़ दी। थलसेना ने अद्भुत शौर्य का प्रदर्शन करते हुए अधिकांश पहाड़ियों पर फिर से कब्जा कर लिया।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट के. नचिकेता को पाक सैनिकों ने पकड़ लिया। उनके साथी स्क्वाड्रन लीडर अजय आहूजा की पाक सैनिकों ने हत्या कर दी। बाद में नचिकेता को रिहा करना पड़ा। उन्होंने भारत लौटते ही कहा—''मैं फिर मोर्चे पर जाऊंगा।''

सैनिकों का मनोबल बढ़ाने के लिए प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने कारगिल का दौरा किया। सेना का उत्साह बढ़ाते हुए कहा—''सैनिकों का बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। हम शांति चाहते हैं परंतु हम पर युद्ध थोपा गया तो हम मुंहतोड़ जवाब देंगे।''

पूरे देश में शहीद तथा मोर्चे पर डटे सैनिकों के प्रति सम्मान की लहर दौड़ गई है। पुणे से लोगों ने अनाम सैनिकों को खत लिखा। एक ने लिखा—''आप दुनिया को दिखा दीजिए कि भारत अपनी रक्षा के लिए क्या कर सकता है।''

म्युनिख। सन १९३० में बनी एक खिलौना रेल अपने संग्रहालय का सबसे बड़ा आकर्षण था। पिछले दिनों उसकी नीलामी की गई। एक व्यक्ति ने इस खिलौने को दो लाख रुपए में खरीदा।

नकली पेड़

मैड्रिड। स्पेन में नकली पेड़ बनाया गया है। इसे रेगिस्तान में प्राकृतिक पेड़ों के नजदीक लगाने से मरूस्थल में भी हरियाली छा सकती है। पेड़ की लम्बाई सात से दस मीटर तक है। पेड़ में असली पेड़ों के सभी गुण हैं परंतु इसे सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती।

सात चोटियों का विजेता

तोक्यो। केन नोगुची की उम्र है पचीस वर्ष। बचपन से ही उसे पहाड़ों पर चढ़ने का शौक था। अब तक वह विश्व की सात सर्वोच्च चोटियों पर चढ़ चुका है। यह कारनामा करने वाला केन विश्व का सबसे कम उम्र का पर्वतारोही है। वह एवरेस्ट पर भी चढ़ चुका है।

तोते की रट

डुइसबर्ग (प. जर्मनी)। एक घर से आवाजें आ रही थीं— ममा-ममा। साथ ही कुत्ते के भौंकने की आवाज भी आ रही थी। एक राहगीर ने खतरा जानकर पुलिस को फोन कर दिया। पुलिस आई। दरवाजा नहीं खुलवा पाई। एक पुलिस वाला खिड़की से अंदर पहुंचा। उसकी हंसी छूट गई। पिंजरे में तोता बंद था। कुत्ता उसे देखकर भौंके जा रहा था। बदले में तोता ममा-ममा की रट लगा रहा था।

गलत संदेश

सैन फ्रांसिस्को। हवाई जहाज को उड़े तीन घंटे हो चुके थे। अचानक विमान में घोषणा हुई कि इंजन में खराबी आ गई है। विमान समुद्र में गिरने वाला है। यात्री परेशान हो उठे। दो बूढ़े यात्रियों की हालत बहुत ज्यादा खराब हो गई। तभी पता चला, यह एक टेप किया हुआ संदेश था जो गलती से बज गया था। यात्रियों ने इस लापरवाही के लिए विमान कंपनी पर हर्जाना ठोक दिया।

रेस्तरां में चीता

जयपुर। सुबह-सुबह रेस्टोरेंट खोलने की तैयारियां चल रही थीं। सफाई करते-करते कर्मचारी लान में जा पहुंचे। वहां एक चीता आराम से बैठा उनका इंतजार कर रहा था। कर्मचारियों ने उसे भगाने का प्रयास किया। चीता टहलते हुए रेस्टोरेंट के स्वागत कक्ष में घुस गया। पुलिस और वन विभाग को खबर की गई। दो घंटे की कोशिश के बाद रेस्टोरेंट के इस ग्राहक को पकड़ा जा सका।

—बच्चों का अखबार—
नंदन बाल समाचार

यदि मनुष्य ईमानदारी से काम करे, तो ईश्वर भी उसका साथ देता है। — कबीर

पिता देख रहे होंगे

सचिन तेंदुलकर को क्रिकेट का जादूगर कहना चाहिए। इस अनोखे खिलाड़ी पर भारत को गर्व है। विश्व कप के दौरान उनके पिता का निधन हो गया। वह तुरंत बंबई पहुंचे। दो दिन बाद ही भारत की टीम को मैच खेलना था। मां ने कहा— "बेटा, देश को तेरी जरूरत है। इस दुःख की घड़ी में भी तुझे मैच में खेलना चाहिए। देश का मान-सम्मान बढ़ाना चाहिए।"

और सचिन इंग्लैंड लौटकर गए। इसके बाद पहले ही मैच में उन्होंने शतक बनाया। सचिन और राहुल के कारण भारत की शानदार जीत हुई। इस सफलता पर सचिन ने कहा— "मेरे पिता भी देख रहे होंगे कि मैं कसौटी पर खरा उतरा।" कर्तव्य पालन से बढ़कर क्या? देश के सम्मान से बढ़कर कुछ नहीं।

इनसे मिलिए



तथागत अवतार तुलसी का जन्म ९ सितंबर, १९८७ को हुआ। अब तक सबसे कम उम्र में दसवीं कक्षा में उत्तीर्ण होकर कीर्तिमान स्थापित किया है। इन्होंने साढ़े नौ वर्ष की उम्र में ही केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। पटना विश्वविद्यालय ने भौतिक शास्त्र में विज्ञान स्नातक की परीक्षा में शामिल होने की अनुमति दी। इन्होंने साढ़े दस वर्ष की आयु में ही विज्ञान स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। इन दिनों ब्रह्मांड विज्ञान एवं यांत्रिकी पर काम कर रहे हैं। इन्हें राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से अलंकृत किया गया है।

शेर पिए दूध

हरिद्वार। धार्मिक स्थान होने के कारण यहां मांसाहारी भोजन पर प्रतिबंध है। एक सर्कस वहां खेल दिखाने आया। तब शेर के भोजन की समस्या उत्पन्न हो गई। सर्कस के अधिकारियों ने शेर को दूध और डबलरोटी देना शुरू किया। शेर को अपना नया भोजन पसंद आ गया। वह आराम से दूध पीता है।

फोन ने बचाया

साल्टलेक। रान क्लार्क अपने दो बच्चों के साथ तैर रहा था। अचानक एक हिमखंड के टूटने से वे उसके नीचे आ गए। वे छाती तक बर्फ के नीचे दब गए। बर्फ के थपेड़ों से क्लार्क के कोट का एक कोना उड़कर उसके सिर पर लगा। तब उसे जेब में रखे सेल्युलर फोन की याद आई। फोन पर सहायता मांगने पर तटरक्षक आए। तब उनकी जान बची।

☐ भारत का अंतरिक्ष में नया कीर्तिमान: श्रीहरिकोटा से पी.एस.एल.वी. छोड़ा। इस यान ने जर्मनी और कोरिया के उपग्रह भी अंतरिक्ष में पहुंचाए।

बिना चालक की ट्रेन

ब्यूनस आयर्स। ट्रेन चलने के लिए तैयार थी। चालक ट्रेन से उतरकर दरवाजे की जांच कर रहा था। गलती से गार्ड ने ट्रेन के दरवाजे बंद करने वाला बटन दबा दिया। दरवाजे बंद होते ही ट्रेन अपने आप चल पड़ी। ट्रेन बगैर रुके कई स्टेशन पार कर गई तब पता चला कि ट्रेन में चालक है ही नहीं। लोगों ने ट्रेन रोकने की कोशिश की, पर असफल रहे। आखिर गार्ड ने बड़ी मुश्किल से ट्रेन को रोका। तब तक ट्रेन छह स्टेशन पार कर चुकी थी।

भैंस ने गहने खाए

बड़ौदा। आनंद जिले के डकोर गांव के भीखाभाई एक भैंस के मालिक हैं। भीखाभाई ने गहनों को चोरों से बचाना चाहा। उसने गहनों को एक थैले में रखा। गहनों का थैला उसने चारे में छिपा दिया। इन गहनों की कीमत ५०,००० रुपए है। एक दिन भैंस चारे के साथ थैला भी निगल गई। भैंस का आपरेशन कराना पड़ा।

बनावटी हाथ

लंदन। इंग्लैंड में वैज्ञानिकों ने एक बनावटी हाथ बनाया है। यह हाथ असली हाथ की तरह कई चीजों को पकड़ सकता है। इन हाथों से मुट्ठी बांधी या खोली जा सकती है। इसे कटे हुए हाथ के स्थान पर भी जोड़ा जा सकता है।

लाइसेंस लो

सीहोर। मध्य प्रदेश में ग्रामीणों के लिए कुत्ता पालना आसान नहीं रहा। उन्हें इसके लिए ग्राम पंचायत से लाइसेंस लेना होगा। गांवों में आवारा कुत्तों के काटने से मरने वालों की संख्या बढ़ रही है।



गुरु हनुमान कहानी बन गए। उन्होंने देश-विदेश में कुश्ती के परचम फहराए। वह बिरला मिल व्यायामशाला में रहते थे। उनके कमरे में जिधर देखो ढेरों पदक, गुर्ज और पुरस्कार दिखाई देते थे।

उनका जन्म चिड़ावा (झुंझनू) में हुआ था। बचपन का नाम विजयपाल था। आठ साल के थे— पिता नहीं रहे। वह दिल्ली आ गए। यहीं पढ़े और बढ़े। उनके चेले भारत केसरी बने। विश्व कुश्ती के अनेक मुकाबलों में जीते। गुरु हनुमान को द्रोणाचार्य सम्मान मिला। निधन से आठ दिन पूर्व गुरुजी की मूर्ति चिड़ावा में लगी। वह उस समारोह में खुद गए। गुरु हनुमान को नमन !

उपहार में बच्चे

नई दिल्ली। कलकत्ता के चिड़ियाघर से जिराफ के दो बच्चे दिल्ली के चिड़ियाघर में आए हैं। दिल्ली के चिड़ियाघर को ये बच्चे उपहार में मिले हैं। इन बच्चों के नाम अंकित और अनीता रखे गए हैं। २३ बरस बाद अब दर्शक दिल्ली के चिड़ियाघर में जिराफ देखेंगे।

□ लंदन के वैज्ञानिकों का कहना है— जो व्यक्ति कम भोजन करता है, वह लंबी उम्र पाता है। बीस लोगों पर परीक्षण किया गया। कम खाना खाने से एक महीने में उनकी अनेक बीमारियां दूर हो गईं।

विवेकानंद के पत्र

जयपुर। झुंझनू में जिलाधीश दौरे पर आने वाले थे। कचहरी की सफाई हो रही थी। पुराने कागज हटाए जा रहे थे। अचानक पटवारी की नजर कुछ पत्रों पर पड़ी। लिखने वाले का नाम पढ़कर वह चौंक गया। ये पत्र स्वामी विवेकानंद ने खेतड़ी के महाराज अजीत सिंह को लिखे थे। अजीत सिंह ने ही विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने के लिए विवेकानंद के शिकागो जाने का प्रबंध किया था।

समोसे ही समोसे

लंदन। परवीन वारसी के पति एक जाने-माने डाक्टर हैं। परवीन कुछ दिनों तक तो घर में बैठी रहीं। फिर उन्होंने सोचा— क्यों न समोसे बनाकर बेचे जाएं। उनके बनाए समोसों की सारे लंदन में धूम मच गई। पिछले दिनों उन्हें इंग्लैंड में सबसे धनी एशियाई महिला माना गया। अब उनके पति ने डाक्टरी छोड़ दी है।

बांसुरी की लंबाई

बीजिंग। पूर्वी चीन के जिंगसू प्रांत में रहने वाले शान ने लंबी बांसुरी बनाई है। इसकी लंबाई ४.५३ मीटर है। इसकी गोलाई १० सेंटीमीटर है। इस बांसुरी की विशेषता है, इसे चार लोग एक साथ बजा सकते हैं। २५ वर्षीय शान संगीत के अध्यापक हैं।

शिखर पर छीरी

काठमांडू। नेपाली शेरपा बाबू छीरी एवरेस्ट पर चढ़ना चाहता था। उसने अपने दो साथियों के साथ अभियान की शुरुआत की। तीनों ही एवरेस्ट पर चढ़ने में सफल हो गए। बाकी दो तो मिनटों में लौट आए। परंतु बाबू छीरी पूरे २१ घंटे तक शिखर पर रहा। यह एक विश्व रिकार्ड है।

नन्हे समाचार

□ हमारे देश में प्रति मिनट तीस और रोजाना चालीस हजार से ज्यादा बच्चे जन्म लेते हैं। इस स्थिति में अगले वर्ष भारत की जनसंख्या एक अरब हो जाएगी।

□ एक अध्ययन के अनुसार— बांग्लादेश के लोग दुनिया में सबसे ज्यादा खुश रहते हैं। अमरीका का स्थान बहुत पीछे रहा।

□ मास्को में एक उत्सव पर ढाई टन का केक बनाया गया। इसे दस हजार लोगों ने खाया। इसे दुनिया का सबसे बड़ा केक माना गया।

□ दक्षिण अफ्रीका में पर्यावरण उत्सव पर चीतों की दौड़ कराई गई। एक चीते ने सौ मीटर की दौड़ केवल सात सेकेंड में पूरी की।

□ वियतनाम में चूहों ने खेतों में उगी २५ करोड़ रुपए से ज्यादा की फसल खराब कर दी। चूहों से निपटने के लिए वहां जबरदस्त अभियान चलाया गया है।

□ जापान में सूमो कुश्ती के पहलवान मुकाबला जीतने के लिए लगातार अपना वजन बढ़ाते हैं। इससे उनके स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। वहां की सरकार ने अब हर कुश्ती के लिए पहलवानों का वजन निर्धारित कर दिया है।

□ रूसी अंतरिक्ष केंद्र मीर संकट में है। धन की तंगी के कारण मरम्मत का काम अधूरा पड़ा है। अब एक ब्रिटिश व्यापारी इसके लिए दस करोड़ डालर देने को राजी हो गया है। बदले में उसे अंतरिक्ष में सैर का मौका मिलेगा।

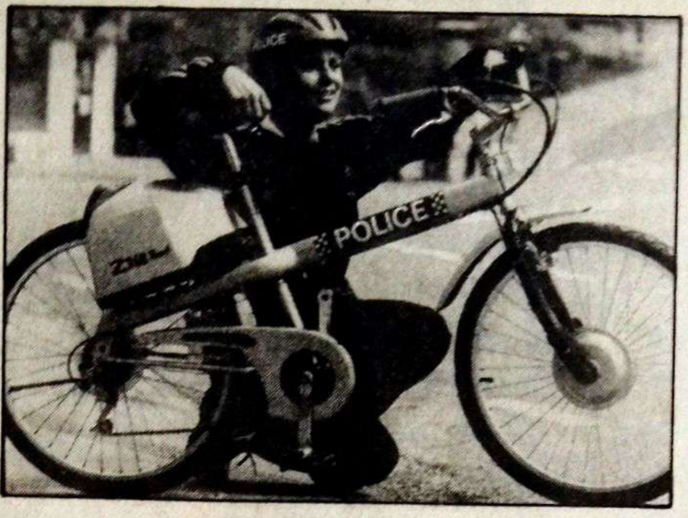
□ भारत सबसे ज्यादा केले पैदा करने वाला देश बन गया है। देश में आम से ज्यादा केले की पैदावार होती है।

□ जापान में नाखून रंगने के लिए एक मशीन बनी है— 'नेलमोर'। इस मशीन में पैसा डालने पर अपने मनचाहे रंग से नाखून रंगवाए जा सकते हैं।

सचित्र समाचार



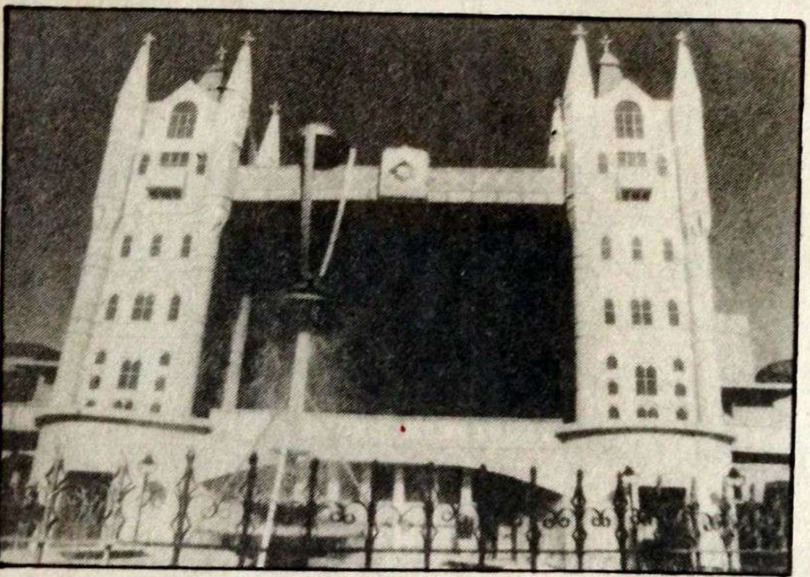
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस : डाक विभाग द्वारा जारी टिकट ।



बैटरी से चलने वाली साइकिल । इंग्लैंड में बनी ।

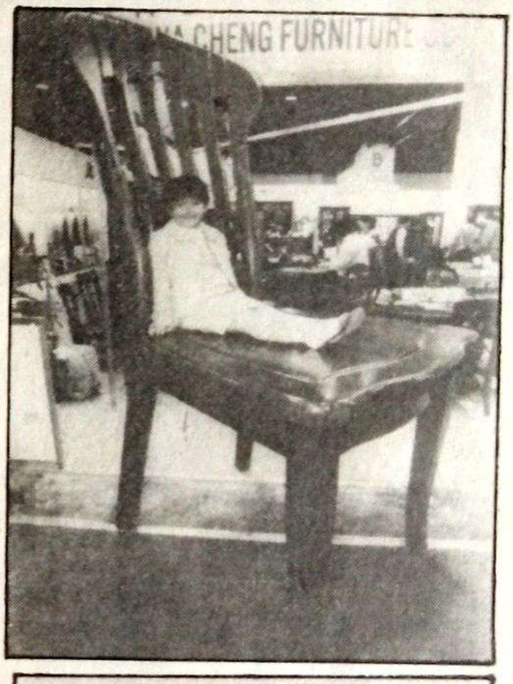


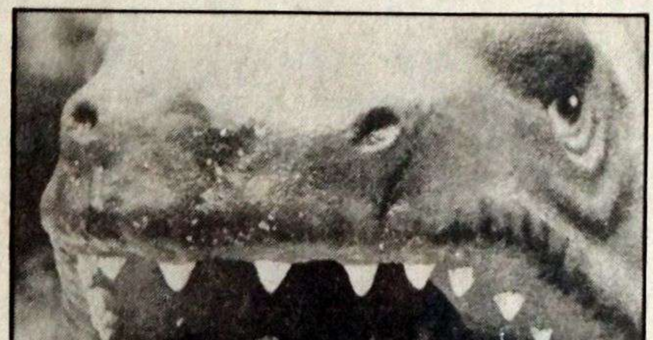
गर्मी आई —बंदर ने सड़क के नल पर प्यास बुझाई ।



↑विश्व कप के दौरान जयपुर में लंदन की इमारत जैसी आकृति पर बड़ा टी.वी. लगाया गया । इस पर क्रिकेट मैचों का सीधा प्रसारण किया गया ।

→ विशाल कुर्सी । ताइवान में बनी वजन २८० किलो ।





↑'देखो मैं यहां हूं ।' एक बच्चा तोक्यो के एक पार्क में बने डायनासोर के जबड़े में ।

→ पानी के अंदर लगे लैटर बाक्स में चिट्ठी डली । नहीं होगी खराब : सूसामि (जापान) में समुद्री खेल उत्सव ।



पिंकी के पांव



शीला दीक्षित (मुख्यमंत्री, दिल्ली राज्य)

वागले नगरी के निवासी बहुत खुशहाल थे। सब आपस में प्यार से रहते थे। एक बार नगरी को खूब सजाया गया। नाच-गाने का उत्सव हुआ। बहुत देर तक सब खुशियां मनाते रहे। फिर सब सोने चले गए।

एकाएक आधी रात को लगा, जैसे किसी ने झकझोरा हो। गहरी नींद से उठते, इतने में तेज गर्जना हुई। अब समझ में आया, भूकम्प आ रहा है। लोग अपने घरों से बाहर भागे। देखते ही देखते घर गिरने लगे। चारों ओर शोर सुनाई देने लगा। चीख-पुकार मची थी। बहुत-से लोग घायल हो गए थे।

इस दुर्घटना के दो दिन बाद पिंकी को होश आया। भूकम्प में पिंकी का भाई चुन्नू, मां और पिता जी सब खो गए थे। उस रात घर गिरने पर पिंकी दीवार के नीचे आ गई थी। उसके शरीर का दायां हिस्सा सुन्न हो गया था।

वह अनाथ आश्रम में पड़ी थी। उसका मन करता, वह अपने घर में रहे। परंतु क्या करती! अब न घर था, न घर के लोग। हर समय वह बिस्तर पर ही लेटी रहती।

एक दिन एक बुढ़िया अनाथ आश्रम आई। वह अकेली रहती थी, इसलिए किसी बच्चे को अपने साथ ले जाना चाहती थी। बच्चों के पास से गुजरती हुई, वह पिंकी के पास पहुंची। बुढ़िया ने उसके सिर पर हाथ फेरा। फिर उसकी सारी कहानी सुनी। बुढ़िया को लगा, पिंकी को उसकी बहुत जरूरत है। वह उसे अपने घर ले गई।

छोटे-से एक कमरे में साफ बिस्तर था। पास ही एक मेज रखी थी। पिंकी के बिस्तर के सामने बड़ी-सी खिड़की थी। वह अक्सर खिड़की से बाहर देखती रहती।

पिंकी बिस्तर से उठ नहीं सकती थी। वह खिड़की से देखती, बच्चे खेल रहे हैं। उसका मन चाहता था कि वह भी खेले।

बुढ़िया पिंकी की बहुत सेवा करती। उसके लिए तरह-तरह के फल लाती। किताबें देती। पिंकी को अच्छी-अच्छी कहानियां सुनाती। पिंकी रोज परियों के बारे में सोचा करती।

पिंकी की खिड़की के सामने हरसिंगार का एक पेड़ था। पेड़ पर बहुत-से फूल लगे थे। छोटे, सफेद फूलों की डंडियां नारंगी थीं। पिंकी को लगा, पेड़ से उतरकर फूल आ रहे हैं। बारी-बारी से फूल उसके बिस्तर पर बैठ रहे हैं। और देखते ही देखते फूल छोटी परियां बन रहे हैं।

छोटी-छोटी परियां पिंकी के बिस्तर पर फुदकने लगीं। कुछ परियों ने पिंकी की दाईं टांग पकड़ी। कुछ ने दाईं बांह पकड़ी। वे पहले टांग को गोल-गोल घुमाने लगीं। फिर बांह को गोल-गोल घुमाया। एक परी ने उसके ऊपर सुगंधित जल की कुछ बूंदें छिड़कीं।

हर परी ने उसे टाफी दी। ढेरों रंग-बिरंगे कागजों में लिपटी टाफियां बिस्तर पर पड़ी थीं। नन्ही परियों ने पिंकी को उठने के लिए कहा। वह नहीं उठी, तो सब परियों ने मिलकर उसे धीरे-से उठाया।

अब वह बिस्तर से उठकर आराम से खड़ी थी। परियों ने उसका माथा चूमा और लौट गईं। वे फिर से हरसिंगार के फूल बन गईं। ●



परी का शहर

—नासिरा शर्मा

हिंदूकुश पर्वत के एक दर्रे में सफेद परी का घर था। वहां से काबुल शहर नजर नहीं आता था। मगर उसकी आंखों में वह शहर जरूर बसा रहता था। हर समय उसके मन में यही इच्छा होती—'काश ! मेरा घर काबुल शहर का चमन होता। वहां लाल, पीले, गुलाबी फूल खिले होते। हरे-हरे पेड़ों पर बैठी चिड़ियां मस्त होकर गाना गातीं। भूख लगने पर बादाम, किशमिश, अखरोट, अनार खातीं।'

काबुल नदी के किनारे चिलगोजे का गोदाम था। वहां सफेद परी के मामा कत्थई देव रहते थे। पांच वर्ष पहले वह मां, बाबा और बहनों के संग वहां गई थी। जाड़े का मौसम था। मगर कहां हिंदूकुश की घाटी की बर्फीली ठंडक और कहां काबुल शहर की इमारतों और घरों के बीच छिटकी धूप। छपाक-छपाक कर सभी बहनें नदी में जी भरकर खेली और नहाई थीं। फिर मामा ने उन्हें मीठे, रसीले तरबूज, खरबूज और अनार खाने को दिए थे। उन्हें आसपास घुमाया भी था। लौटने के बाद कई दिनों तक वे साथ लाए फलों को खातीं और काबुल शहर की हरियाली को याद करती हुई, दोबारा जाने का सपना बुनती थीं। इस बीच दोनों बड़ी बहनों का विवाह तय हुआ। मामा का मन था कि विवाह काबुल के बड़े चमन से किया जाए। परंतु वहां युद्ध शुरू होने के कारण मामा का परिवार भी कुछ दिनों के लिए हिंदूकुश के इस दर्रे में आ ठहरा था। विवाह के बाद मामा कुछ दिन रहकर चले गए।

एक दिन उन्हें पता चला कि मामा का गोदाम भूकम्प से तहस-नहस हो गया है। अब उनका नया ठिकाना कहां है, यह किसी को पता नहीं है।

आज सुबह बर्फ गिरी थी। सूरज ने अपना मुंह नहीं निकाला था। सभी परेशान थे। जब जाड़ा सहन न हो सका, तो सब लोगों ने काबुल घूमने की सोची।

सफेद परी का मन खुशी से नाच उठा। उसकी जीभ ने मजेदार फलों के स्वाद को याद कर चटखारा भरा और मुंह में पानी भर आया। उसकी सखियां भी खुश थीं। सफेद परी सखियों और परी-परिवार के संग घाटी से उड़ी। पहली बार वे दर्रे से बाहर आई थीं। इसलिए थोड़ा परेशान भी थीं। वे लम्बी-चौड़ी वादियां देखकर डर गईं। वे अभी तक समझती आई थीं कि संसार में बस एक पहाड़ है।

सभी के मन में पेड़ देखने की इच्छा कुलबुला रही थी। किसी ने अभी तक पेड़ देखा ही नहीं था। देखतीं भी कैसे ? जहां वे रहती थीं, वहां पर केवल बर्फ का साम्राज्य था।

सफेद परी ने उन्हें पेड़ और फल-फूल के बारे में बताया। वह बोली—"पक्षी फल खाने पेड़ पर आते हैं और खुश होकर डाल पर झूलते हैं, गाना गाते हैं। हरी-हरी घास के बीच पानी का हौज होता है। उसमें नहाने में बड़ा मजा आता है।"

इस तरह की बातें सुनकर, वे भूल गईं कि उनके डैनों में दर्द है। उनके मां-बाप आगे वाले पर्वत के मोड़ पर सुस्ताने के लिए ठहरने वाले हैं। वे सब सफेद परी को घेरे, उससे नई-नई बातें सुन रही थीं।

अगले मोड़ पर परी-परिवार के बुजुर्ग सुस्ताने हेतु शिखर पर बैठ गए। उनको देखकर, पूरा काफिला ठहर गया। एक बुजुर्ग ने कहा—"हम आबादी के पास पहुंच गए हैं। दूरी पर दिखने वाले घर काबुल शहर के लगते हैं।" यह सुनकर कुछ बुजुर्ग खड़े होकर नीचे ताकने लगे।

सहसा सफेद परी के पिता ने भयभीत होकर कहा—"यह काबुल नहीं है। लगता है, हम गलत रास्ते पर आ गए हैं। यदि यह काले देव का स्याह दर्रा है, तो हमारी खैर नहीं। वह पुरानी दुश्मनी के चलते हमें नुकसान पहुंचाएगा। हमारी नन्ही-मुन्नी परियों को कैदखाने में डाल देगा। बेहतर यही है कि हम यह जगह छोड़ दें।"

तभी बर्फ गिरने लगी और तूफानी हवा बहने लगी। सब एक-दूसरे से बिछुड़ने लगे। सूरज का कहीं नामोनिशान न था। घनघोर अंधेरा छा गया था।



छोटी परियां रोने लगीं । एक-दूसरे से बिछुड़ने के कारण वे अपने को अकेला पाकर डर गई थीं । कुछ बूढ़ों ने हिम्मत करके एक-दूसरे का हाथ पकड़ा और मैदान की तरफ बढ़े । ताकि उनको उधर जाता देख बाकी परी-परिवार के सदस्य वैसा ही करें । छोटे देव और बच्ची परियां उड़ न सकीं । वे खोहों में छिपने लगीं ।

सफेद परी अपनी सखियों के साथ थी । उन्होंने एक-दूसरे का हाथ पकड़ा हुआ था । मगर तेज हवा उन्हें बड़े आराम से उड़ा कर मैदान की तरफ ले जाने लगी । उनके डैने बर्फ के बोझ और तेज हवा से घायल हो गए थे । लाल परी के डैनों में दर्द हो रहा था । पीली परी भय से रोने लगी । दूसरी परियां भी अपने-अपने मां और बाबा को पुकार रही थीं । कुछ देर बाद तूफान थम गया । धीरे-धीरे छोटी परियां और नन्हे देव रोते-बिलखते अपने मां-बाबा से मिल गए । परंतु अभी सूरज नहीं निकला था । ठंड जरूर कम थी । बड़ी चट्टान के नीचे सबने पनाह ली ।

दोपहर में सूरज बादलों के बीच से निकला । उसकी गर्मी पाकर,सबके चेहरों पर रौनक छा गई । सफेद परी काबुल की तरफ उड़ने को व्याकुल हो उठी । पर कुछ बुजुर्ग देव लौटने के पक्ष में थे । एक बूढ़ी परी बोली—"हमने लम्बा सफर तय किया है । अतः हमें यहां एक-दो दिन ठहरना चाहिए ।"

अंत में फैसला हुआ कि पहले शहर घूमा जाए और फल-मेवे खाए जाएं । फिर सूरज डूबने से पहले लौटा जाए ।

परी-परिवार मैदान में उतरा । पर काबुल शहर का नक्शा बदल गया था । युद्ध के कारण इमारतें छलनी थीं । बाग जल गए थे । फल-फूल का कहीं पता नहीं था ।

यह देख सफेद परी की आंखों में आंसू आ गए । तभी पास के कोने से रोने की आवाज आई । सफेद परी सखियों के साथ उधर बढ़ी, तो देखा—एक लड़की घुटनों पर सिर रखकर रो रही है । वह उसके पास गई । उसके कंधे पर हाथ रखा । उसने चौंक कर सिर उठाया । सफेद परी ने उसके आंसू पोंछते हुए कहा—"मत रोओ लड़की ।"

लड़की ने कहा—"कैसे न रोऊं ? कल सारा मुहल्ला बर्बाद हो गया । मैं घरवालों से बिछुड़ गई । हमारे बादाम के दरख्त भी जल गए ।"

यह सुनकर सफेद परी ने लड़की को दिलासा दिया-"कोई बात नहीं । तुम हमारे साथ परी लोक चलो ।"

"मगर मेरे तो पंख ही नहीं हैं । मैं तुम्हारे साथ कैसे उड़ सकती हूं ?"—लड़की बोली ।

बात तो सही थी । सभी परियां मन मसोसकर रह गईं । सभी लोग उदास मन से लौट चले । मगर सब के मन में एक ही बात थी कि युद्ध बुरी चीज है । तभी तो वे काबुल से भूखे-प्यासे लौट रहे हैं । वरना आराम से रसीले फल खाते, सूखे मेवे चबाते । एकाएक सफेद परी के मन में सवाल उभरा कि बेचारे काबुल शहर वाले भी तो भूखे होंगे ।

अपने दर्रे में आने के बाद अक्सर सफेद परी चुपचाप अकेली बैठ कर सोचती—'मनुष्य आपस में क्यों लड़ते हैं ? क्यों नहीं, वे आपस में प्यार से रहते हैं ?' यही सोचते-सोचते उसकी आंखें मुंद जाती थीं ।

(अफगानिस्तान)

दो बहनें दो फूल

—डा. दिविक रमेश

चुलसन में, यालू नदी के पास एक सुंदर-सा घर था। घर में बे मून योंग अपनी पत्नी जंग सी के साथ रहता था। दोनों बहुत अच्छे थे। बस एक ही दुःख था कि उनकी कोई संतान नहीं थी।

एक रात जंग सी ने एक अनोखा सपना देखा। स्वर्ग से उसके घर तक एक इंद्रधनुष तन गया। उस पर परियां नृत्य करने लगीं। एक परी ने उसे लाल फूल दिया। अभी वह धन्यवाद देना ही चाहती थी कि फूल एक और सुंदर परी बन गया और उसके भीतर चला गया।

फूल परी को पाकर वह बहुत खुश हुई। इसके बाद उसकी नींद खुल गई। उसने खुशी-खुशी पूरा सपना अपने पति को बताया। पति भी खुश हुआ। वे समझ गए थे कि जल्दी ही उनका घर खुशियों से भर जाएगा। और ऐसा हुआ भी। उनके घर दो सुंदर-सुंदर फूलों और परियों जैसी बेटियों ने जन्म लिया। बड़ी का नाम था—जंगहवा यानी गुलाब का फूल और छोटी का नाम था—होंगन्यून यानी लाल कमल।

धीरे-धीरे बेटियां बड़ी हो चलीं। दोनों अपने माता-पिता को खूब प्यार करतीं और उनका कहना भी मानतीं। पूरा घर खुश था। लेकिन यह खुशी बहुत दिन न रह सकी। जंग सी बीमार पड़ गई। उसे अपनी मृत्यु निकट नजर आई। उसने अपने पति से बेटियों को प्यार करने और उन्हें सारा सोना आर धन देकर, समय पर विवाह करने को कहा। इसके बाद सारे घर को उदास कर, वह चल बसी।

बे मून योंग बेटियों को और भी प्यार करने लगा। लेकिन उसने बेटे की चाह में हू सी से दूसरा विवाह कर लिया। वह न सुंदर थी और न ही अच्छी। उसने तीन बेटों को जन्म दिया। वह बेटियों से अपने पति का प्यार देखकर जलती रहती। उनकी मां का सारा धन और सोना भी वह हड़प लेना चाहती थी।



इसलिए उसने एक योजना बनाई। उसने झूठ-मूठ की कहानी बनाकर, अपने पति को कहा कि जंगहवा बहुत ही खराब लड़की है। उसके कारण घर की बदनामी होने का डर है।

पहले तो बे मून योंग को विश्वास नहीं हुआ, लेकिन पत्नी की चालाकी के कारण उसकी बातों में आ गया। हू सी ने कहा—"ऐसी लड़की को तो मार ही देना चाहिए।" मूर्ख बना भोला पति उसके झांसे में आ गया। रात हो चली थी। उन्होंने जंगहवा को बहाने से उसके सौतेले भाई जंग सो के साथ पहाड़ पर भेज दिया। जंगहवा को यही कहा गया कि उसे पहाड़ पर अपने चाचा के घर जाकर जन्मदिन का केक बनाने में मदद करनी है। लेकिन असली बात तो और ही थी।

झील के पास पहुंच कर, जंग सो ने जंगहवा को घोड़े से उतार दिया। झील बहुत ही गहरी थी और पानी से ऊपर तक भरी हुई थी। सफेद और लाल रंग के फूल उसमें खिले हुए थे। घना अंधेरा था। पक्षियों और खूंखार जानवरों की आवाजें आ रही थीं। जंगहवा ठंड से जमी जा रही थी। उसने भाई से कहा— "मुझे अपनी मां की समाधि के पास और और चाचा के घर जाने दो।"

जंग सो ने कहा—"अब जल्दी से झील में कूद

जाओ। तुम जैसी लड़की को जीने का कोई हक नहीं है।'' जंगहवा खूब रोई। पूरा पहाड़ उसके रोने की आवाज से गूंज उठा। उसे अपनी मां की बहुत याद आई। होंगन्यून की भी उसे याद आई। फिर रोते-रोते ही झील में कूद गई और डूब गई। लेकिन तभी चमत्कार हुआ। झील में से पानी खूब ऊंचा उठा और किनारे खड़े जंग सो को जोर का धक्का दिया। उसके बाद जाने कहां से एक भयानक शेर आ गया। वह जंग सो पर टूट पड़ा। उसे बुरी तरह घायल कर दिया। इस बीच जंग सो का घोड़ा खाली ही घर की ओर भाग गया।

घोड़ा जब बिना जंग सो के घर पहुंचा, तो उसकी मां हू सी को बहुत आश्चर्य हुआ। उसने बेटे की खोज में नौकरों को दौड़ा दिया। वे खून से लथपथ जंग सो को ढूंढ़कर ले आए। जंग सो की मरहम-पट्टी की गई। उसी ने मां को सारी कहानी सुना दी। सुनकर उसे बहुत गुस्सा आया। उसने अब होंगन्यून को भी मारने का निश्चय किया। लेकिन अब बे मून योंग को पत्नी पर शक हो चला था। उसे लग गया था कि उसकी बेटियों का कोई दोष नहीं। पर हू सी तब भी झूठ बोलकर बहाने बनाती रही।

होंगन्यून अपनी बहन को याद कर-कर के खूब रोई। रोते-रोते वह बेहोश हो गई। बेहोशी में ही उसने अपनी बहन को देखा। वह पीले रंग के एक भले ड्रैगन पर बैठी थी। ड्रैगन उत्तर के समुद्र की ओर जा रहा था। होंगन्यून चीखी—''दीदी, दीदी! तुम कहां जा रही हो? मुझे भी साथ ले लो।''

जंगहवा ने जवाब दिया—''मैं अब ड्रैगन महल में रहती हूं। राजा के काम से जा रही हूं। मेरी और तुम्हारी दुनिया अलग-अलग हैं। मेरी दुनिया बहुत सुंदर है। एक दिन तुम्हें लेने आऊंगी।''

इसके बाद ड्रैगन ने जोर से आवाज की, जिसे सुनकर होंगन्यून की बेहोशी वाला सपना टूट गया। उसने सारा सपना अपने पिता को बताया। दोनों ने समझ लिया कि जंगहवा के साथ क्या कुछ गुजरी है।

रात में होंगन्यून जंग सो के कमरे में गई। उसने उससे सब कुछ सच-सच बताने के लिए विनती की। शेर से सजा मिलने के बाद से उसे अपनी गलती का पता चल गया था। सो उसने सब कुछ सच-सच बता दिया। होंगन्यून बहुत उदास हो गई।

एक दिन होंगन्यून ने अपने बाग में, मेहंदी पर एक अनोखा नीले रंग का पक्षी बैठा देखा। वह दर्द से भरा गाना गा रहा था। उसे लगा कि वह पक्षी उसकी बहन ही है, जो उसे बुला रही थी। पिता के लिए एक करुण पत्र लिख कर, वह पक्षी के पीछे-पीछे चली गई। चलते-चलते वह उसी झील के पास पहुंच गई, जहां उसकी बहन को डूब कर मरना पड़ा था। उसने भी मरना चाहा। तभी झील में से प्यारी सी आवाज आई—'होंगन्यून, मेरी बहन! तुम घर लौट जाओ। जाकर माता-पिता की सेवा करो। यों अपनी जान देना बुरी बात है।''

लेकिन होंगन्यून बहुत निराश हो चुकी थी। उसने दीदी की बातों पर ध्यान नहीं दिया और आंखों को ढककर, झील में कूद गई। तभी उस झील पर पांच रंगों के बादल छा गए। आने-जाने वालों को मृत बहनों की दर्द भरी आवाज आती रही। मरने के बाद भी वे अपने साथ हुए अन्याय के लिए चुप नहीं रहना चाहती थीं। अन्याय को सहना वे पाप मानती थीं।

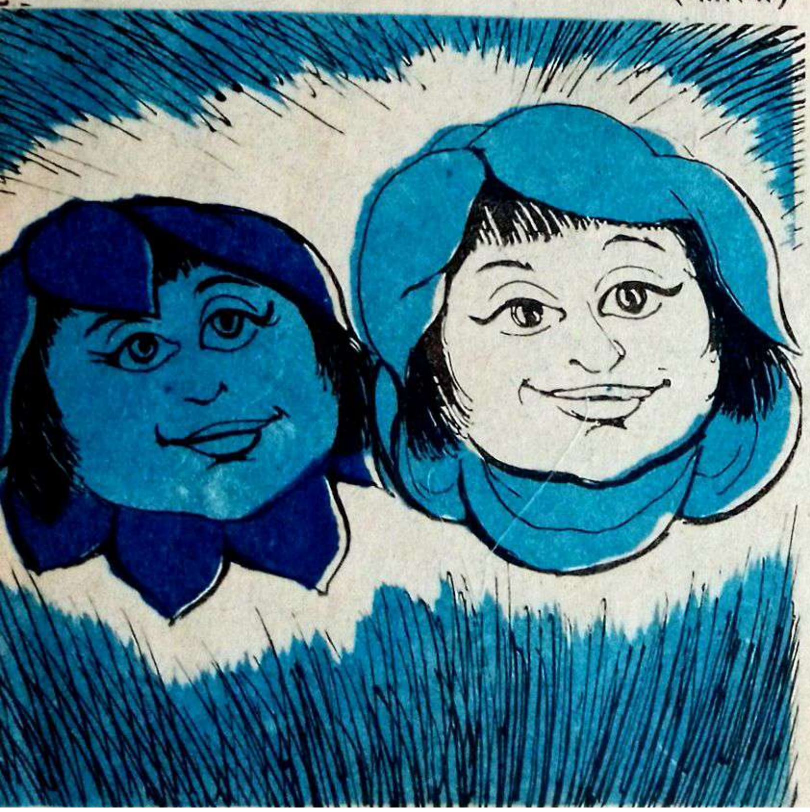


एक दिन वे दोनों लाल और सफेद कमल के फूल बनकर आधी रात में न्यायाधीश के पास गईं। उन्होंने न्याय के लिए प्रार्थना की। लेकिन वह उन्हें देखकर डर गया और मर गया। ऐसे कितने और भी मर गए। पूरे चुलसन में अकाल भी पड़ गया। तब राजा ने एक शेर जैसे युवक को न्यायाधीश बना कर भेजा। एक रात सुंदर, लेकिन दो अजनबी युवतियां उससे मिलने आईं। वे दोनों बहनें ही थीं। न्यायाधीश ने आने का कारण पूछा, तो उन्होंने अपने साथ हुए अन्याय की पूरी कहानी सुना दी। यह भी बताया कि उनका पिता एक अच्छा आदमी है। बस, सौतेली मां की बातों में आ गया था। इसलिए उसे माफ कर दिया जाए।

न्यायाधीश ने पूरी छानबीन की। वह समझ गया कि बहनों की बात ठीक थी। उसने बे मून योंग और हू सी को अपने पास बुलाया और सच-सच बताने को कहा। बे मून योंग तो डर गया और अपनी भूल मान ली। लेकिन हू सी अब भी बेशर्मी से झूठ बोलती रही। पर न्यायाधीश समझदार था। उसने उसकी चालाकी पकड़ ली।

आखिर हू सी को सच उगलना पड़ा। युवक के कहने पर राजा ने चालाक और दुष्ट हू सी को जेल में डलवा दिया। बे मून योंग को आगे गलत काम न करने की चेतावनी देकर छोड़ दिया। दोनों बहनें अब खुश थीं। उन्हें नया जीवन मिल गया था।

(कोरिया)



उड़ चली पालकी

—डा. दिनेश चमोला

केशवगढ़ के दयालु राजा थे हेमंत। वह बहुत प्रतापी एवं परोपकारी थे। उनकी वीरता, साहस व परोपकार की चर्चा आसपास के सभी राज्यों में थी। उनकी एक अत्यंत सुंदर कन्या थी। महारानी वासवदत्ता ने उसका नाम फूलमती रखवाया। उसे फूलों से बहुत प्रेम था।

एक दिन फूलों का उत्सव था। संयोग से उसी दिन फूलमती का जन्म दिन भी था। आभूषणों में सजी-धजी वह परी लग रही थी। महाराज व महारानी यह सब देख, मन ही मन प्रसन्न हो रहे थे। लेकिन तभी आसमान से आग की लपटों की पालकी में बैठा एक भयानक राक्षस उतरा। देखते ही देखते वह फूलमती को उड़ाकर ले गया।

एकाएक खुशियों से दिपदिपाता राजमहल शोक में डूब गया। महाराज व महारानी व्याकुल हो गए। प्रजा भी परेशान रहने लगी। वे मिल-जुलकर देवी-देवताओं की मनौतियां मानने लगे। लेकिन किसी का कुछ भी प्रभाव न हुआ। फूलमती के महल छोड़ने पर महल उजाड़ लगने लगा।

एक दिन महल में सब गहरी नींद में सोए हुए थे। पूर्णिमा की रात थी। उस रात महारानी बहुत बेचैन हुईं। अचानक उठीं। चुपचाप सभी को सोया छोड़, उसी उद्यान में चली गईं, जहां से फूलमती गई थी। उद्यान में पहुंचते ही रानी जोरों से रो पड़ीं। महारानी ने रोते-रोते कहा—"हे उद्यान के फल-फूलो! क्या तुमने मेरी पीड़ा नहीं समझी है? तुम्हें नहीं मालूम कि मैं फूलमती के वियोग में कितनी दुखी हूं? यदि बेटी के बारे में मुझे नहीं बताया, तो आज यहीं प्राण त्याग दूंगी। पता नहीं, राक्षस के पास वह जीवित है या नहीं।" तभी अचानक एक आवाज सुनाई दी —"महारानी! वह महासुर दैत्य फूलमती का कुछ नहीं बिगाड़ सकता, क्योंकि उसके फूलमती पर झपटते ही मैंने उसके गले में एक जादुई हार डाल दिया था।



उस हार के कारण वह सुरक्षित रहेगी।"

"इस घोर दुःख की घड़ी में मुझे धैर्य बंधाने वाले आप कौन हैं देव ?"—महारानी ने पूछा।

—"महारानी ! मैं पक्षी नीलकंठ हूं। महाराज हेमंत के पुण्य-प्रभाव से केशवगढ़ की धरती की रक्षा के लिए देवताओं ने मुझे यहां भेजा है। फूलमती की चिंता केवल आपको ही नहीं, मुझे भी है।"

—"क्या आप मुझे मेरी फूलमती के पास ले जा सकते हैं ?"

—"नहीं महारानी ! ईश्वर द्वारा दिए गए सुख-दुःखों का भोग भोगना पड़ता है। यह कष्ट केशवगढ़ के भाग्य में लिखा है। ईश्वर की लीला को चुपचाप देखा व सहा जाता है महारानी। यह देवफल लीजिए। इसे खाकर मानसिक शांति मिलेगी। केशवगढ़ की धरती का भाग्योदय भी होगा। फिर भी यदि कोई कष्ट हो, तो मुझे याद करें। फूलमती की चिंता बिल्कुल न करें। ईश्वर सब ठीक करेंगे।" कहकर नीलकंठ ने हरे-भरे पेड़ के बीच से एक सुंदर फल नीचे गिरा दिया। लेकिन यह क्या! फल को हाथ में लेते ही महारानी की परेशानियां मानो फुर्र हो गईं। महारानी एकाएक इस परिवर्तन को देख, बहुत प्रसन्न हुईं। ईश्वर व दयालु पक्षी का धन्यवाद कर, महारानी महल लौट आईं।

उस रात रानी गहरी नींद सोईं। सुबह महाराज उठे, तो मन को अत्यंत हलका महसूस कर हैरान रह गए। जब महारानी ने सारी बात बताई, तो महाराज हेमंत फूले नहीं समाए।

समय बीतता गया। फूलमती की याद अब कभी-कभी आती। किंतु दूसरे ही क्षण पक्षी नीलकंठ की बातों का ध्यान कर, सब सामान्य हो जाते। कुछ दिन बाद महारानी ने एक सुंदर पुत्र को जन्म दिया। महल में फिर एक बार खुशियां उमड़ पड़ीं। राजकुमार बहुत सुंदर था।

राजकुमार का नाम फूलमती की तरह फूलदेव रखा गया। वह दिनोदिन बढ़ने लगा। वह अनोखे-अनोखे खेल खेलता। जब कभी फूलमती की तसवीर देखता तो 'फूला दीदी—फूला दीदी' कह-कहकर चिल्लाने लग जाता। यह देख, महारानी की आंखें भर आतीं। कभी-कभी महारानी फूलदेव को लेकर राजमंदिर जातीं। अपनी कुलभवानी के मंदिर में महारानी भावुक हो, राजकुमारी की याद में रोतीं।

"मां ! कहां गई है फूला दीदी ? क्या मैं नहीं वापस ला सकता अपनी प्यारी दीदी को ? मैं तो एक ही बाण में बहुत दूर तक मार सकता हूं। मैं केशवगढ़ की धरती का वीर राजकुमार हूं।"—कहकर छोटा फूलदेव महारानी की आंखों के आंसू पोंछ देता। मां के बताए मार्ग की ओर अपना तीर छोड़ देता। यह देख, महारानी प्रसन्न हो जातीं।

संयोग से फूलदेव को भी वहीं चीजें प्रिय थीं, जो राजकुमारी फूला को। उद्यान के रंग-बिरंगे फूलों से घंटों खेलना, तीर-धनुष चलाना, घुड़सवारी करना, चांदनी रात में चुपचाप जाकर पक्षी नीलकंठ से बतियाना ही उसके शौक थे। एक दिन पक्षी नीलकंठ ने राजकुमारी फूलमती के अपहरण की बात कह सुनाई।

इधर समय रफ़्तार से बीता। फूलदेव बड़ा हो गया। राजमहल की प्रजा फूलमती को लगभग भूल गई थी। एक दिन फूलदेव कुलभवानी के मंदिर में गया। उस दिन वह बहुत व्याकुल था। उसे अपनी

दीदी फूलमती की बहुत याद आई। वह चुपचाप रात को उद्यान में गया। उसने नीलकंठ को याद किया। इससे पहले कि फूलदेव कुछ कहता, दयालु नीलकंठ ने कहा—"ठीक है फूलदेव, फूलमती के लौटने का समय हो गया है। अब केवल तुम ही नहीं, केशवगढ़ की धरती भी चिंतित है। यह पालकी तैयार है। राक्षस के दुर्ग की सीमा तक मैं साथ चलूंगा। तुम्हारे जाने से बहुतों का कल्याण होगा।"

यह बात सुन, फूलदेव बहुत प्रसन्न हुआ। वे दोनों ही पालकी में बैठे। पालकी हवा में उड़ चली। फूलदेव यह देख बहुत हैरान हुआ कि पालकी में बैठते ही उसके हाथ में कई प्रकार के अस्त्र-शस्त्र आ गए। उसने कुलभवानी का स्मरण किया। वे एक विशाल चोटी पर पहुंचे, तो नीलकंठ सिपाही में बदल गया। उसने पहाड़ की कंदरा में एक बाण छोड़ने को कहा। बाण छोड़ते ही भीषण विस्फोट हुआ। चट्टान फट गई। सोने का एक द्वार खुल गया।

पालकी ने अंधेरी गुफा में प्रवेश किया। कुछ दूर चलने पर चट्टान फिर बंद हो गई। फूलदेव ने अपनी कुलभवानी को याद कर, फिर बाण चलाया। लेकिन यह क्या! पालकी सोने के उसी कक्ष में उतरी, जहां फूलमती उदास बैठी हुई थी। यह दृश्य देख वह बहुत हैरान हुई। राक्षस द्वारा बनाई गई उस जादुई



कोठी में कोई नहीं जा सकता था। उसने अपनी कुलभवानी का स्मरण किया कि फूलदेव उसके चरणों में गिर पड़ा। फूलमती की आंखें भर आईं। वह कहने लगी—"आप कौन हैं स्वर्ग के राजकुमार?" कहते ही फूलकुमारी रो पड़ी।

—"मैं फूलदेव हूं। फूला दीदी, तुम्हारा छोटा भाई। केशवगढ़ का राजकुमार।"

"सच भइया।"—कहकर फूलमती उससे लिपट गई। अचानक उसे राक्षस के लौटने की बात का ध्यान आया। वह शिकार के लिए गया हुआ था। वह बहुत व्याकुल हो उठी। उसे लगा कि राक्षस आते ही उसके भइया पर टूट पड़ेगा। फूला दीदी को उदास देख, फूलदेव बोला—"उदास मत हो फूला दीदी। कुलभवानी हमारी रक्षा करेंगी। यह देखो, जादुई कोठरी के चारों ओर आग हमारी रक्षा कर रही है।"

कुछ समय बाद भयानक आंधी की तरह राक्षस आया। सारी धरती थर्राने लगी। बिजली गिरने लगी। एकाएक जादुई कोठरी के चारों ओर आग की लपटें उठी देख, राक्षस भी आग उगलने लगा। उसकी आंखें अंगारे बरसाने लगीं। वह क्रोधित होकर जल्दी ही अपने विमान से उतरा व कोठरी की ओर बढ़ा। वह क्रोध से आग में कूद गया। आग सूखी घास की तरह उसकी लटों में फैल गई। दोनों भाई-बहन निर्भय हो, यह दृश्य देखते रहे। कुछ ही क्षणों में राक्षस जलकर राख हो गया। जादुई कोठरी के जलते ही पहाड़ भी टूट पड़ा। फूलमती यह सब देख हैरान रह गई। वे पालकी में बैठ गए।

पालकी फिर हवा में उड़ चली। कुछ दूर चलने पर नीलकंठ भी साथ हो गया। दोनों भाई-बहनों ने नीलकंठ को प्रणाम किया। महल तक पहुंचने में उन्हें कई दिन बीत गए।

इधर राजमहल में सभी व्याकुल थे। प्रातःकाल ही जब पालकी उद्यान में उतरी, तो खुशी का समाचार सुन प्रजा उछल पड़ी। चारों ओर खुशियों की लहर दौड़ पड़ी। •

तिनका-तिनका घर

— रवींद्र सिंह

पालनपुर के राजा का नाम था सुखपाल। यह राज्य काफी दूर-दूर तक फैला हुआ था। प्रजा सुखी थी। यहां के व्यापारी दूर-दूर के नगरों तक अपना कारोबार करते थे। इससे राजा को भरपूर शुल्क प्राप्त होता था। उसके खजाने में अपार धन था। एक बार राजा को एक और महल बनाने की इच्छा हुई। इस कार्य के लिए देश-विदेश से कारीगर बुलवाए गए। प्रमुख शिल्पी ने महल का एक सुंदर नक्शा बना कर राजा को दिखाया। राजा को नक्शा बहुत पसंद आया। महल का निर्माण होने लगा। ऊंचे कंगूरों वाला महल शीघ्र ही बन कर तैयार हो गया।

राजा ने महल के सामने एक बाग लगवाया। इसमें विभिन्न प्रजातियों के फूल और अनेक तरह के फलों के पेड़ भी लगवाए। बाग के बीचो बीच एक जलकुंड बनवाया। उसके बीच में एक फव्वारा लगवाया था।

राजा को बाग अत्यंत प्रिय था। उस पर भी बाग के फव्वारे में तो जैसे उसके प्राण बसते थे। जब भी वह बाग में आता, घंटों कुंड के पास बैठ कर फव्वारे से निकलते जलकणों को निहारता रहता।

बाग के फव्वारे के पास बरगद के पेड़ की एक शाखा पर एक गौरैया ने अपना घोंसला बनाया था। एक दिन उस गौरैया को न जाने क्या सूझी। वह अपने घोंसले में से एक-एक तिनका लाकर कुंड के पानी में डालने लगी। बहुत-से तिनके तैरने लगे। राजा ने गौरैया को पानी गंदा करते देखा, तो उसे बहुत क्रोध आया। उसने आदेश दिया—"अभी, इसी समय इस गौरैया के घोंसले को तोड़ कर फैंक दो।"

मालियों ने तुरंत राजा के आदेश का पालन किया। एक माली ने लंबा बांस लेकर घोंसला गिरा दिया। घोंसले में गौरैया के अंडे थे, वे भी फूट गए। गौरैया बहुत दुखी हुई। अपने टूटे घर और फूटे अंडों के आसपास फुदकती हुई, वह चीं-चीं करके खूब रोई। अंत में रो-धोकर, तड़प-तड़प कर उसने भी दम तोड़ दिया।

दूसरे दिन जब राजा सोकर उठा, तो देखा-उसके महल में चारों तरफ अंधकार ही अंधकार। सूरज की किरणों का उजाला कहीं-कहीं था। इतना ही नहीं, महल के किसी भी कक्ष में हवा नहीं आ रही थी। सबका दम घुटने लगा। राजा-रानी और सभी सेवक-सेविकाएं घबरा कर बाहर आने लगे। इसी समय बाग के प्रधान माली ने आकर निवेदन किया—"महाराज, बड़ी विचित्र बात है। महल के चारों ओर रात ही रात में एक ऊंची दीवार खड़ी हो गई है। यही नहीं, बाग के जलकुंड का पानी सूख गया है। उसमें एक भी बूंद पानी नहीं है।"

राजा ने पूछा—"ऐसा कैसे हुआ ?" माली ने उत्तर दिया—"महाराज, जो कुछ मैं कहने जा रहा हूं, उसके लिए आप मुझे क्षमा करें। लेकिन कल आपने गौरैया का घोंसला गिरवा दिया था। उसमें रखे उसके अंडे फूट गए और गौरैया ने प्राण दे दिए। मुझे लगता है कि उसी के शाप के कारण यह सब हुआ है।"

राजा को उसकी बात ठीक लगी। उसके मन में भी कल की घटना का पछतावा था। लेकिन अब हो ही क्या सकता था। घोंसला किसी तरह अपनी जगह लगा भी दिया जाता, तो भी गौरैया के प्राण नहीं लौटाए



जा सकते थे।

सारी बातें सोच, राजा ने महल के चारों ओर बड़ी दीवार को गिराने का आदेश दिया। सैकड़ों कुदालें दीवार पर पड़ने लगीं।

लेकिन घोर आश्चर्य! उस दीवार पर कुदालों का कोई निशान तक न पड़ा।

जब सभी उपाय निष्फल हो गए, तो राजा ने पूरे राज्य में घोषणा करवाई—"जो कोई भी महल के चारों ओर खड़ी दीवार को तोड़ देगा और कुंड में पानी ला देगा, उसे राजा अपना आधा राज्य पुरस्कार में देंगे।"

जब लोगों ने यह घोषणा सुनी, तो उन्हें लगा कि यह कौन-सा कठिन काम है? हर कोई हथौड़ा और कुदाल लेकर, राजधानी की ओर अपना भाग्य चमकाने चल पड़ा। सभी ने प्रयास करके देखे, पर किसी के भी हाथ सफलता न लगी।

राज्य के सुदूर गांव में एक बुढ़िया रहती थी। उसके तीन बेटे थे। उनके कानों तक भी राजा की घोषणा पहुंची। आधा राज्य प्राप्त करने की आशा में वे भी मां का आशीर्वाद ले, महल की ओर चल पड़े।

चलते-चलते रास्ते में जंगल आया। जंगल इतना घना था कि सूर्य की किरणों का प्रकाश भी धरती तक ठीक से नहीं पहुंच पाता था। जैसे-तैसे तीनों चलने लगे। पैरों में कांटे चुभते जा रहे थे। लड़खड़ाते, रास्ता बनाते आगे बढ़ते गए।

इतने में देखा कि एक आदमी अपनी कुदाल से रास्ता बना रहा है। आसपास बहुत-सी झाड़ियां कटी थीं। थोड़ी-सी जमीन साफ कर, उसने रास्ता बना दिया था।

जब उस आदमी की दृष्टि तीनों बलिष्ठ भाइयों पर पड़ी, तो उसने प्रसन्नता से पुकारा—"अरे भाई, अच्छे समय पर आए। मैं इस जंगल में रास्ता बना रहा हूं, जिससे आने-जाने में लोगों को कठिनाई न हो। लेकिन मैं ठहरा अकेला, कितना काम निपटा पाऊंगा। तुम लोग तरुण हो। आओ, मेरी सहायता करो।"

दोनों बड़े भाइयों ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। कहने लगे—"हमारे पास समय नहीं है इन व्यर्थ की बातों के लिए।" और आगे बढ़ गए। लेकिन छोटा भाई वीरसेन अलग स्वभाव का था। उसे उस व्यक्ति की बात जंच गई। उसने कहा—"मैं तुम्हारी सहायता करूंगा।"

वह आदमी और वीरसेन मिलकर काम में जुट गए। उसके पास जादुई कुदाल थी। उसका स्पर्श होते ही झाड़ियां और रास्ते के पत्थर नष्ट हो जाते थे।

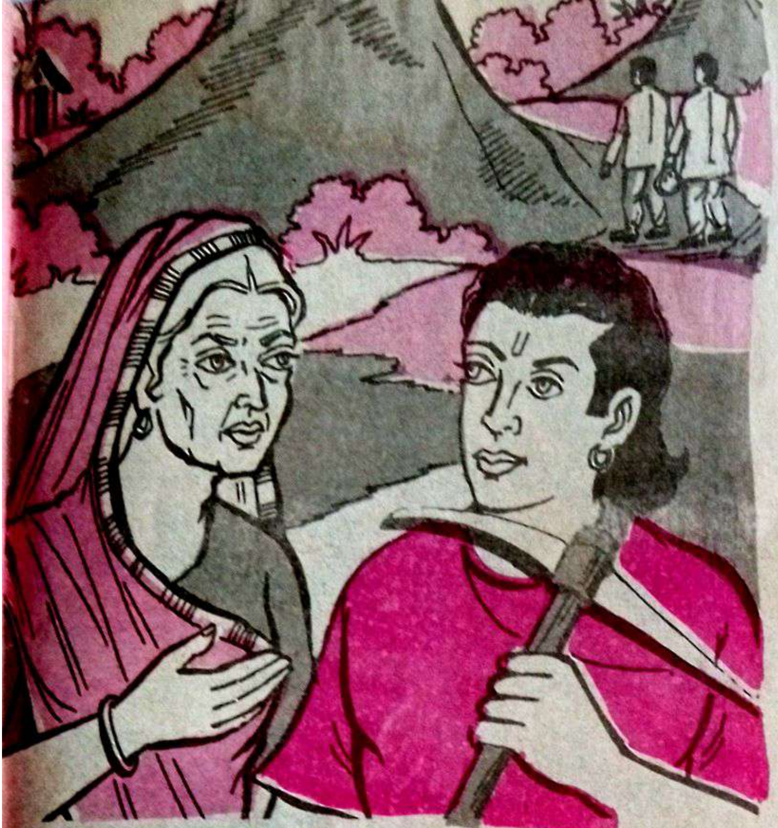
संध्या होते-होते रास्ता तैयार हो गया। वह आदमी अपना काम पूरा हुआ देख, बहुत प्रसन्न हुआ। उसने वीरसेन को कुदाल उपहार में दे दी। कंधे पर कुदाल रखकर वीरसेन तेज कदमों से चल पड़ा। शीघ्र ही अगले पड़ाव पर अपने भाइयों से जा मिला।

वहां से तीनों भाई आगे बढ़े। रास्ते में उन्हें एक रोगी बुढ़िया मिली। तीनों भाइयों को देख, उसने कहा—"युवको, मुझे बहुत प्यास लगी है, मुझ में चलने की शक्ति नहीं रही। मेरा पानी से भरा घड़ा, उस ऊंचे टीले पर रखा है। तुममें से कोई अगर वहां जाकर घड़ा ला दे, तो बहुत उपकार होगा।"

दोनों बड़े भाइयों ने कहा—"हमारे पास समय नहीं है। हम तो आधा राज्य लेने जा रहे हैं?" लेकिन दयालु वीरसेन बुढ़िया को प्यासी छोड़ कर आगे न बढ़ सका। उसने कहा—"माई, मैं अभी जाकर तुम्हारा घड़ा ला देता हूं।"

वह दौड़ कर टीले पर चढ़ गया। वहां जाकर उसने देखा कि एक पेड़ के नीचे घड़ा रखा है। उसमें से पानी की धारा निरंतर ऊपर उठकर, फव्वारे जैसी बिखर रही है। पास ही घड़े का ढक्कन पड़ा था। वीरसेन ने घड़े पर जैसे ही ढक्कन रखा, धारा बहनी बंद हो गई। वीरसेन ने घड़ा उठाया और तेजी से बुढ़िया के पास लौट आया।

बुढ़िया ने जी भर कर पानी पिया और संतोष की सांस ली। अचानक एक तेज प्रकाश से वीरसेन की आंखें झपक गईं। जब उसने आंखें खोलीं, तो देखा कि बुढ़िया की जगह एक तेजमयी देवी वहां खड़ी थी। उसके मुकुट से तेज प्रकाश निकल रहा था। देवी को देख, वीरसेन ने प्रणाम किया।



पूछा—"आप कौन हैं ? बूढ़ी माई कहां गईं ?"

देवी ने कहा—"बेटा, मैं ही वह बुढ़िया थी। मैं ही रास्ता बनाने वाला आदमी थी। मैं वन देवी हूं। मैं इस बात की प्रतीक्षा में थी कि कोई दयालु और परोपकारी व्यक्ति आए। राजा का शाप किसी ऐसे व्यक्ति से ही समाप्त हो सकेगा। राजा ने गौरैया जैसे निरीह जीव के साथ क्रूरता का व्यवहार किया था। तुम्हारे जैसे किसी दयालु व्यक्ति के द्वारा ही शाप का अंत हो सकता है। मैं तुम्हारी परीक्षा ले रही थी। इस परीक्षा में तुम सफल हुए। जाओ, मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। कुदाल और घड़े की सहायता से राजा के बाग में फिर से हरियाली लौटा लाओ।"—इतना कहकर वनदेवी अदृश्य हो गईं।

वीरसेन प्रसन्न मन से राजधानी की ओर चल पड़ा। उसके दोनों भाई पहले ही वहां पहुंच कर, अपना भाग्य आजमा रहे थे। वे बड़ी आशा से दीवार तोड़ने में जुटे थे। लेकिन सफलता न मिली।

वीरसेन जब महल के पास पहुंचा, तो देखा कि दोनों भाई लौट रहे हैं। उसने अपने भाइयों से कहा—"भाई, तुम दोनों मुझे साथ लिए बिना ही वहां चले गए ? कम से कम मुझे आ तो जाने दिया होता।"

भाइयों ने उसकी हंसी उड़ाते हुए कहा—"अरे, जब हम दोनों मिल कर भी कुछ न कर सके, तो तू क्या कर लेगा ?"

वीरसेन भाइयों की बात पर ध्यान न देकर, महल के पास जा पहुंचा। उसने कंधे से कुदाल उतारी और हाथ में पकड़ी। महल के सामने भारी भीड़ जमा थी। वे सब मिलकर वीरसेन की खिल्ली उड़ाने लगे—"इतने लोग आए और चले गए। अब यह ज़रा-सा छोकरा क्या तीर मार लेगा ?"

वीरसेन ने जैसे उनकी बात सुनी ही नहीं और मन ही मन वनदेवी को प्रणाम कर, उसने दीवार पर कुदाल चलाई। कुदाल का स्पर्श होते ही दीवार का एक टुकड़ा टूटकर गिर पड़ा। भीड़ में सन्नाटा छा गया। वीरसेन एक के बाद एक वार करता गया। जल्दी ही पूरी दीवार टूट गई। दीवार के गिरते ही राजमहल प्रकाश से भर गया।

वीरसेन ने आधा काम तो निपटा ही दिया था। अब केवल जलकुंड में पानी लाना शेष था। वनदेवी का दिया घड़ा लेकर, वह खाली कुंड में उतर गया। लोग उत्सुक थे कि देखें अब वह क्या करता है ?

वीरसेन ने घड़ा कुंड के तले में रखा और उस पर से ढक्कन हटा दिया। घड़े में से जल की ऊंची धारा उठी और कुंड में पानी भरने लगा। भीगे शरीर से वीरसेन कुंड से बाहर आया। उसने राजा को प्रणाम किया। लोग सोच रहे थे कि घड़े का पानी भला कब तक चलेगा ? लेकिन कुंड पूरा भर गया। फिर भी जलधारा उतनी ही ऊंची उठती रही।

मालियों ने तुरंत बाग के पेड़-पौधों की खूब सिंचाई की। मुरझाए पौधों ने फिर सिर ऊंचा किया। फूल-पत्तों में जान आ गई। राजा का मन प्रसन्नता से नाच उठा। उसने वीरसेन को हृदय से लगा लिया।

दूसरे दिन राजा ने बड़े समारोह में वीरसेन का सम्मान किया। उसे अपना आधा राज्य दे दिया। राजा की मृत्यु के बाद वीरसेन पूर्ण राज्य का राजा बना। ●

पेड़ पर कपड़ा

—सत्यभूषण वर्मा



मिकोतारो दिन भर खेतों में काम करके घर लौट रहा था। गरमियों के दिन थे। सूरज डूब चुका था। आकाश में पूर्णिमा का चांद अपनी किरणों से पूरी धरती पर चांदनी बिखेर रहा था। रास्ते में एक झील [illegible]। मिकोतारो जब उस झील के पास से गुजर रहा था, तो उसकी निगाह एक पेड़ से लटकती किसी चीज पर पड़ी। वह चीज दूर से चमक रही थी।

'यह क्या है? लगता तो कोई वस्त्र जैसा है।' —उसने सोचा। कौतूहल वश वह उस वृक्ष के पास पहुंचा। था तो वह एक वस्त्र ही, पर ऐसा सुंदर और अनोखा वस्त्र उसने जीवन में कभी नहीं देखा था।

वह पंखों जैसी आकृति की एक ओढ़नी थी, जो नक्षत्रों की तरह जगमगा रही थी। उसने वह वस्त्र उतार लिया और उसे लेकर घर की ओर चल पड़ा।

अभी मिकोतारो दो कदम ही बढ़ा होगा कि पीछे से एक बहुत ही मधुर आवाज सुनाई दी—"सुनिए, कृपया रुक जाइए। मेरा वस्त्र मुझे लौटा दीजिए।"

मिकोतारो ने मुड़कर देखा। एक सुंदर युवती उससे कह रही थी—"मैंने झील में नहाने के लिए वह वस्त्र उतारकर रखा था। यदि वह वस्त्र मुझे न मिला, तो मैं परीलोक नहीं लौट सकूंगी। कृपा करके मेरा वस्त्र मुझे लौटा दीजिए।" कहते-कहते उस युवती की आंखों में आंसू भर आए।

मिकोतारो का हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था। उसे वह सुंदर युवती बहुत अच्छी लगी। वह समझ गया कि वह एक परी है, जो रात की चांदनी में सैर करने के लिए धरती पर आई थी। यह ओढ़नी उसके पंख हैं, जिसके बिना वह परीलोक लौटकर नहीं जा सकती है।

उसने बिना सोचे झूठ बोल दिया कि उसने उसका वस्त्र देखा भी नहीं है। उसे डर था कि यदि उसने उसका वस्त्र दे दिया, तो वह उसे पहनकर उड़ जाएगी। फिर कभी नहीं मिलेगी।

परी का नाम तानाबाता था। वह अकेली परीलोक से निकल आई थी। अब इस संकट में पड़कर रोने लगी।

मिकोतारो ने झूठी सहानुभूति दिखाते हुए कहा—"रोओ मत। तुम चाहो, तो तुम मेरे घर चल सकती हो। मैं तुम्हें कोई कष्ट नहीं होने दूंगा।"

तानाबाता विवश होकर उसके साथ चल पड़ी। धीरे-धीरे वह मिकोतारो को प्यार करने लगी और उसने उससे विवाह कर लिया। मिकोतारो की पत्नी बन कर वह खुश थी। पर जब उसे परीलोक की याद आती थी, तो वह उदास हो जाती थी। कई बार वह अकेली अपने पंख खोजने झील के किनारे भी गई थी। पर पंख उसे मिलते कैसे? वह ओढ़नी तो मिकोतारो ने कहीं छिपा रखी थी।

एक दिन मिकोतारो खेत में काम करने गया हुआ था। एक कबूतर घर की छत के एक सुराख में चोंच मार रहा था। अचानक उसने चोंच से वस्त्र निकालकर खींच लिया। यह तानाबाता का वही पंखों वाला वस्त्र था, जो मिकोतारो ने छत की कड़ियों के बीच छिपा रखा था। तानाबाता ने अपना वस्त्र देखा, तो चौंक पड़ी। उसे क्रोध इस बात पर आया कि

मिकोतारो ने उससे झूठ बोला था और धोखा देकर, उसे अपने घर ले आया था।

कुछ देर बाद मिकोतारो खेत से घर लौटा। उसने देखा, तानाबाता अपना पंखों वाला वस्त्र पहनकर तैयार खड़ी थी। मिकोतारो ने कहा—"अरे, तुम्हें अपना वस्त्र मिल गया है ?"

तानाबाता ने उदासी भरे स्वर में कहा—"मुझे दुःख इस बात का है कि तुमने मुझसे झूठ बोलकर मुझे धोखे में रखा। अब मैं जा रही हूं।"

मिकोतारो चिल्लाया—"मत जाओ। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।"

तानाबाता ने अपने हाथ आकाश की ओर उठाते हुए कहा—"यदि ऐसा ही है, तो तुम एक हजार जोड़े घास के जूतों के बुनो। उन्हें नए रोपे, बांस के वृक्ष के नीचे गाड़ दो। ऐसा करने से हम फिर मिल सकेंगे।" यह कहते-कहते वह आकाश में ऊपर उठने लगी। देखते-देखते आंखों से ओझल हो गई।

मिकोतारो को लगा कि तानाबाता के बिना वह कभी जीवन में प्रसन्न नहीं रह सकेगा। उसने दिन-रात एक कर घास के जूते बुनने आरंभ कर दिए। एक दिन हजार जोड़े पूरे हो गए, तो उसने एक ताजे रोपे हुए बांस के पौधे के नीचे गड्ढा खोदा। सारे जूतों को उसमें



डाल दिया और मिट्टी से गड्ढा पाट दिया। ज्यों ही गड्ढा मिट्टी से भर गया, आश्चर्यजनक रूप से बांस का वृक्ष बढ़ने लगा। बढ़ते-बढ़ते वह बादलों के पार निकल गया।

मिकोतारो ने उस वृक्ष पर चढ़ना आरंभ किया। वह चढ़ते-चढ़ते आकाश के पार परीलोक के द्वार के पास पहुंच गया, लेकिन वह द्वार तक न पहुंच सका। ऐसा लगता था कि तानाबाता से मिलने की जल्दबाजी में उससे गिनने में भूल हो गई थी। उसने केवल नौ सौ निन्यानवे जूते ही बुने थे। उसने वृक्ष के छोर पर पहुंचकर पुकारा—" तानाबाता, तानाबाता, तुम कहां हो ?"

तानाबाता करघे पर वस्त्र बुन रही थी। उसने मिकोतारो की पुकार सुन ली। भागी-भागी परीलोक के द्वार पर पहुंची। तभी परीलोक की रानी भी वहां पहुंच गई और मिकोतारो को देखकर बोली—"कौन है यह, और यहां तक कैसे आया है ?"

तानाबाता ने परी रानी को सारी कहानी सुनाते हुए बताया कि मिकोतारो उसका पति है। परी रानी को इस बात पर बहुत क्रोध आया कि मनुष्यलोक के एक युवक को तानाबाता ने अपना पति चुना है। उसके आदेश से मिकोतारो और तानाबाता के बीच एक नदी बहने लगी, जिसे हम आकाशगंगा कहते हैं। तानाबाता रोने लगी। परी रानी को उस पर दया आ गई। उसने तानाबाता को वर्ष में एक रात अपने पति से मिलने की अनुमति दे दी।

आज भी मिकोतारो और तानाबाता आकाश गंगा के दो किनारों पर दो नक्षत्रों के रूप में दिखाई देते हैं। प्रति वर्ष सातवें महीने की सातवीं रात (सात जुलाई) को सूर्य ढलते ही, परीलोक के श्वेत हंस उड़ते हुए आते हैं। आकाश गंगा के इस पार से उस पार तक पुल बना लेते हैं। तानाबाता पुल को पार कर, मिकोतारो के पास चली जाती है और भोर होते ही सूर्य की पहली किरण के उतरने से पूर्व परीलोक लौट जाती है। जापान में हर साल इसी दिन देश भर में तानाबाता उत्सव मनाया जाता है।

(जापान)

असुर मुनि

—मिलन गोयल

एक गांव में एक किसान रहता था। एक दिन उसकी पत्नी ने एक विचित्र शिशु को जन्म दिया। शिशु के शरीर पर बाघ के समान काली-काली धारियां थीं।

गांव वालों ने बालक को प्रेत बताया। उनके कहने पर किसान बालक को जंगल में छोड़ आया। जंगल में दैत्य रहते थे। दैत्यों ने बालक को जंगल में पड़ा देखा,तो वे उसे अपने राजा केशासुर दैत्य के पास ले गए। केशासुर की कोई संतान नहीं थी। उसने बालक को अपने पास रख लिया और उसका नाम बाघासुर रख दिया।

बाघासुर बड़ा होने लगा। दैत्य क्रूर और भयानक सूरत वाले थे। लेकिन वह दयालु था।

उसे पशुओं और मनुष्यों का मांस खाना कतई पसंद नहीं था। वह जंगली फल खाकर भूख मिटाता था।

एक दिन बाघासुर दैत्यों के साथ जंगल में घूम रहा था। तभी उधर से एक बैलगाड़ी गुजरी। उसमें कुछ स्त्री, पुरुष और बच्चे सवार थे। दैत्यों ने बैलगाड़ी को घेर लिया। बैलगाड़ी में बैठे लोग घबरा उठे। वे चीखने-चिल्लाने लगे। उनकी करुण पुकार सुन, बाघासुर का हृदय पसीज गया। उसने दैत्यों से कहा—"तुम इन लोगों को जाने दो।"

मगर दैत्य नहीं माने। वे लोगों को दबोचने के लिए आगे बढ़े। बाघासुर ने उन्हें मारकर खदेड़ दिया।

कुछ देर बाद बाघासुर दैत्यराज के पास पहुंचा। दैत्यराज ने उसे फटकारा— "बाघासुर, तुम्हें हमारे बीच रहना है, तो हमारे नियमों का पालन करो।"

बाघासुर ने हाथ जोड़कर कहा—"दैत्यराज, मुझे दैत्यों की भांति जीवन बिताने में तनिक भी रुचि नहीं है। अतः मैं आपका राज्य छोड़कर जा रहा हूं।" यह कहता हुआ वह वहां से चल दिया।

बाघासुर के कदम मनुष्यों की बस्ती की ओर बढ़े। क्योंकि वह मनुष्यों से दोस्ती करना चाहता था। उनके साथ रहकर, उन्हीं की तरह खेतों में काम करना चाहता था। काफी चलने के बाद वह एक गांव के पास पहुंचा। गांव के बाहर खेतों में, स्त्री-पुरुष काम कर रहे थे। बाघासुर को देखकर वे भय से चीखे-चिल्लाए और अपने-अपने घरों की ओर भागने लगे।

बाघासुर चिल्लाया—"मैं तुम लोगों को नुकसान पहुंचाने नहीं, अपितु तुम सबसे मित्रता करने आया हूं।" लेकिन किसी ने उसकी एक न सुनी। देखते ही देखते सभी अपने-अपने घरों में जा छिपे। गांव में सन्नाटा छा गया।

अब तो बाघासुर निराश हो गया। वह समझ गया कि उसकी भयानक शक्ल-सूरत को देखकर, मनुष्य उसके निकट नहीं आएंगे। दुखी होकर वह एक जंगल में घुस गया। वहां भटकते हुए, एक दिन वह एक ऋषि के आश्रम के निकट पहुंच गया।

नदी के किनारे शांत वातावरण में ऋषि वैष्णव का आश्रम था। ऋषि के पास उनके शिष्य बैठे, ज्ञान और धर्म की बातें सुन रहे थे। हिरण, मोर, लोमड़ी आदि भी वहां बैठे थे। जब बाघासुर वहां पहुंचा,तो उसे देखकर शिष्य और पशु-पक्षी घबरा गए।

लेकिन वैष्णव ने सभी को शांत किया। उन्होंने बाघासुर को भी बैठ जाने के लिए कहा और वह प्रवचन देने लगे। प्रवचन खत्म होने पर सब चले गए। पर बाघासुर बैठा रहा। उसने ऋषि को प्रणाम किया। ऋषि ने प्रेम से उसके सिर पर हाथ फेर कर आशीर्वाद दिया।

ऋषि ने बाघासुर से पूछा—"वत्स, तुम उदास क्यों हो ?"

बाघासुर ने कहा—"मुनिवर, मेरे विचित्र रंग-रूप ने मुझे संकट में डाल दिया है। मैं न तो दैत्यों में शामिल हो पा रहा हूं और न ही मनुष्यों में। मुझे जंगल में पड़ा पाकर, दैत्यराज केशासुर ने मेरा पालन-पोषण किया, लेकिन दैत्यों के बीच रहकर मैं उनके समान नहीं बन सका। अतः मैं मनुष्यों के साथ रहना चाहता हूं। लेकिन वे मुझे देखकर भयभीत हो



जाते हैं। मैं अकेला इधर-उधर भटक रहा हूं। मैं अपने इस रूप से मुक्ति पाना चाहता हूं। कृपा करके आप मुझे मुक्ति का मार्ग बता दीजिए।"

ऋषि बोले—"बाघासुर, तुम्हारा यह रूप तुम्हारे पिछले जन्म के पाप का फल है। जब तक तुम अपने पाप का प्रायश्चित्त नहीं कर लेते, तब तक तुम्हें इस रूप से मुक्ति नहीं मिलेगी।"

–"ऋषिवर, आप मुझे मेरे पिछले जन्म के बारे में बतलाने का कष्ट करें।"

ऋषि आंखें मूंदकर ध्यान में बैठ गए। कुछ देर बाद उनका ध्यान टूटा। वह बोले—"पिछले जन्म में तुम एक शिकारी थे। जंगल के पशु-पक्षियों को मारते थे। उनकी खाल तथा मांस बेचते थे। बाघ की खाल ऊंचे दामों पर बिकती थी। इसलिए तुमने सैकड़ों बाघों का शिकार भी किया। एक दिन अपने बच्चों को दूध पिलाती हुई बाघिन को तुमने अपने तीर का निशाना बना डाला था। बाघिन ने मरते हुए, तुम्हें शाप दे दिया—'तुम अगले जन्म में मनुष्य होते हुए भी बाघ का रूप पाओगे। तुम्हारी गिनती न तो मनुष्यों में होगी, न असुरों में। तुम जीवन भर अकेले भटकते रहोगे।' इसी शाप के कारण तुम मनुष्य होकर भी बाघ लगते हो।" उसके साथ-साथ ऋषि ने बाघासुर को उसके किसान माता-पिता के बारे में भी बता दिया। वह हैरान रह गया।

"इस शाप से छूटने के लिए तुम वन्य प्राणियों की सेवा और रक्षा करो। बाघों को शिकारियों से बचाओ। तुम्हें पेड़-पौधों की भी रक्षा करनी होगी। पशु-पक्षी और मनुष्यों की जितनी अधिक सेवा करोगे, तुम्हें उतनी जल्दी इस शाप से छुटकारा मिल जाएगा।"—ऋषि ने कहा।

ऋषि की बात मान बाघासुर पशु-पक्षी, पेड़-पौधों और मनुष्यों की सेवा में जुट गया। वह घूम-घूम कर रोगी मनुष्यों और पशु-पक्षियों का इलाज करता, उनसे स्नेह करता। बचे हुए समय में पेड़-पौधे लगाता।

बाघासुर रात में मनुष्यों की बस्ती में जाता था। वह गरीब और लाचार किसानों के खेतों में चुपचाप हल जोत देता, बीजों की बुआई कर देता था।

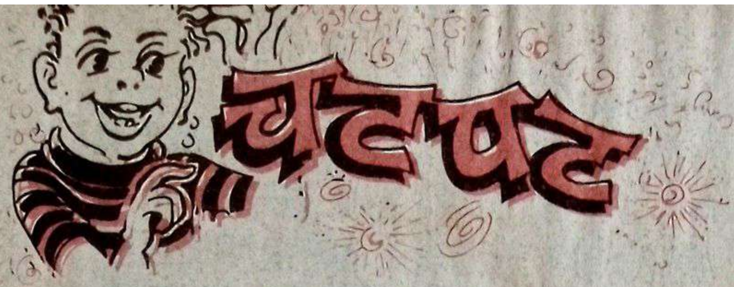
जल्दी ही जंगल के पशु-पक्षी बाघासुर के मित्र बन गए। गरीब मनुष्य अदृश्य फरिश्ता कहकर, उसकी पूजा करने लगे।

एक दिन बाघासुर ऋषि वैष्णव की ज्ञान भरी बातें सुन रहा था। ऋषि की वाणी सुनते-सुनते उसे नींद आ गई। सुबह पक्षियों की आवाज सुनकर उसकी नींद टूटी। वह हैरान था, क्योंकि ऋषि आश्रम में नहीं थे।

बाघासुर उन्हें ढूंढ़ता हुआ नदी के किनारे पहुंचा। पानी से मुंह धोने के लिए झुका, तो आश्चर्य चकित रह गया। जल की परछाईं में वह सुंदर दिखाई दे रहा था।

"मुनिवर, मुझे शाप से मुक्ति मिल गई।"— वह चिल्लाया। फिर वह आश्रम की ओर जाने के लिए मुड़ा। तभी ऋषि वैष्णव मुसकराते हुए आते दिखाई दिए। उनके साथ बाघासुर के माता-पिता भी थे। उनसे मिलकर, खुशी के मारे वह रो पड़ा और वह ऋषि के चरणों में झुक गया। उसने ऋषि से सपरिवार वहीं रहने की अनुमति मांगी। ऋषि ने 'हां' कर दी।

बाघासुर अपने माता-पिता के साथ वहीं रहने लगा। अब वह ऋषि से ज्ञान प्राप्त करता और मनुष्यों तथा पशु-पक्षियों की सेवा करता। शीघ्र ही वह बाघमुनि के नाम से जाना जाने लगा। •



□ रमेश —नरेश, तुम तो दोपहर में घूमने जाने वाले थे। फिर इतनी सुबह-सुबह क्यों जा रहे हो ?
नरेश —क्या पता, सुबह-सुबह ही कोई मेहमान यहां आ टपके और मैं दोपहर में न निकल सकूं।

□ अध्यापक —महेश, जब तुम शुरू-शुरू में यहां आए थे, तो खूब पढ़ते थे, पर अब तुम लापरवाह होते जा रहे हो !
महेश —सर, तब मुझ पर पुराने स्कूल का प्रभाव था। यहां वह धीरे-धीरे उतर रहा है।

□ कवि —मेरी कविताएं पढ़कर आपको कैसा लगा ?
आदमी —मुझे लगा कि अब मैं भी कविताएं लिख सकता हूं।

□ एक आदमी —भाई, रामलाल का घर कौन-सा है ? मुझे उससे पचास रुपए लेने हैं।
दूसरा आदमी —यदि मुझे मालूम होता, तो मैं इस तरह क्यों भटकता ? मुझे भी उससे सौ रुपए लेने हैं।

□ मालकिन —तुम इतनी सारी मिठाइयां देखकर हैरान क्यों हो ?
नौकर —मालकिन, सोचता हूं कि मैं इतनी मिठाइयां खाऊंगा कैसे ? क्योंकि आप लोग तो मिठाई छूते तक नहीं।

□ भिखारी —सुबह से शाम हो गई , पर अभी तक मुझे एक रुपया भी नहीं मिला।
पुलिस वाला —शाम से सुबह भी हो जाएगी। मगर भीख नहीं मिलेगी। क्योंकि दो दिन के लिए इधर का यातायात बंद है।

□ मां —बेटी, क्या बात है ! जब देखो, तुम रोती रहती हो।
बेटी —और जब तक न रोऊं, तब तक आप लोगों का मेरी तरफ ध्यान ही नहीं जाता।

□ नौकर —मालिक, आपकी सेवा करते-करते वर्षों बीत गए। पर मैं जस का तस हूं।
मालिक —झूठ बोलते हो। जब तुम यहां आए थे, तो दुबले-पुतले थे। मगर अब अच्छे-खासे मोटे हो गए हो।

□ एक मित्र —मैं तुम्हारा समय तो बर्बाद नहीं कर रहा हूं।
दूसरा मित्र —इसका जवाब देकर मैं तुमसे बहस करके अपना दिमाग खर्च क्यों करूं ?

□ दरोगा —जब चोर भाग रहा था, तो तुम क्या कर रहे थे ? चाहते, तो तुम उसे पकड़ भी सकते थे।
पुलिस वाला —एक हाथ से सीटी बजा रहा था और दूसरे हाथ से अपनी पैंट संभाल रहा था।

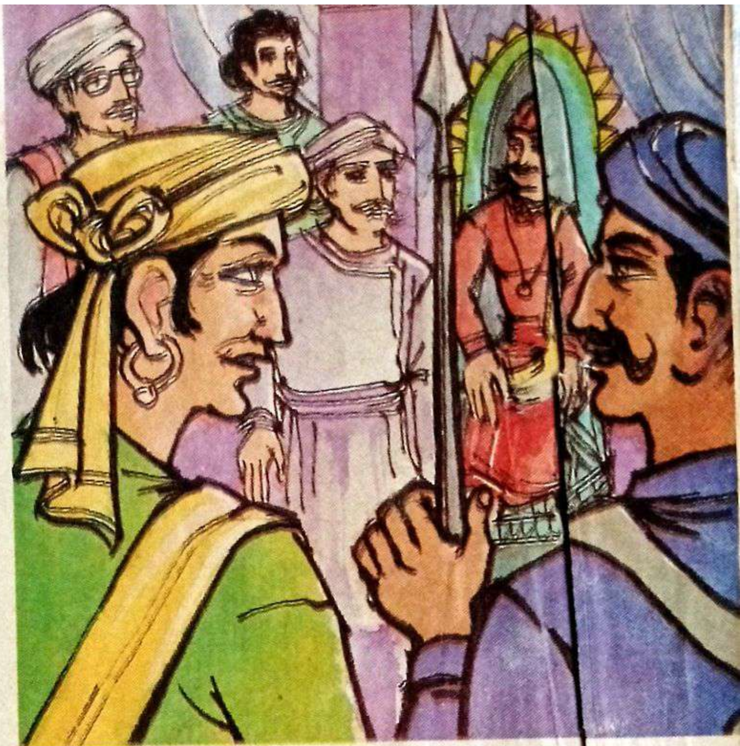
□ एक पड़ोसिन —बहन जी, आपकी बिल्ली किधर गई हुई है ?
दूसरी पड़ोसिन —कहीं भी गई हो। पर वह आपके घर नहीं गई होगी। वह वहीं जाती है, जहां मलाई वाला दूध मिले।

□ आदमी —वकील साहब, आप मेरा मुकदमा कब लड़ेंगे ?
वकील —जब तुम्हारा विरोधी अस्पताल से सकुशल लौट आएगा, तब।



तेनालीराम ३७५

बात एक रात की

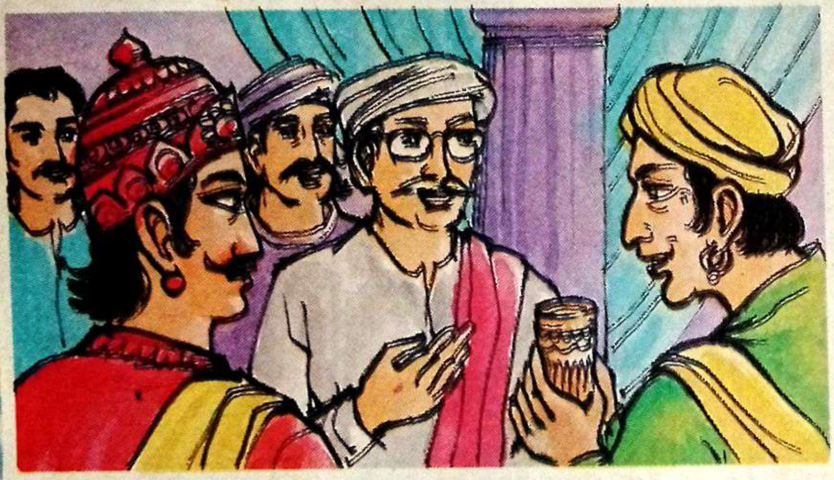


कृष्णदेव राय के दरबार में एक जादूगर आया। बोला—"महाराज, मेरे पास दिव्य दृष्टि है। आप जो चाहें, दिखा सकता हूं।"

राजा ने कहा—"तुम परियां दिखा सकते हो ?"

"हां महाराज, अमावस्या की रात को पुराने तालाब पर परियां आएंगी। मेरी जादुई शक्ति से आप उन्हें देख सकते हैं।"—जादूगर बोला।

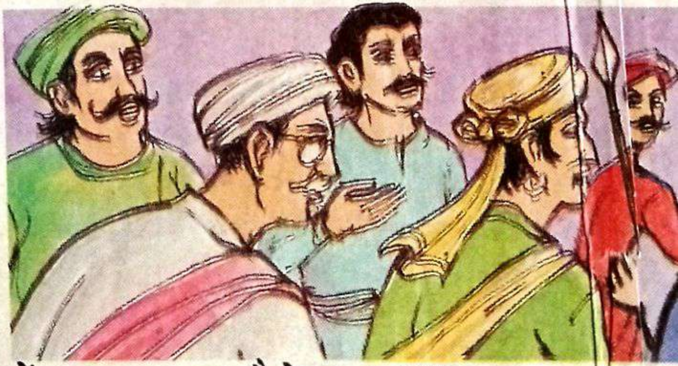
जादूगर को अतिथि-गृह में ठहराया गया। अमावस्या की रात को कृष्णदेव राय दरबारियों के साथ पुराने तालाब पर पहुंचे।



जादूगर ने वहां सब व्यवस्था कर थी। उसने सबके लिए शीतल पेय बनवाया। राजा के आगे शरबत का गिलास बढ़ाया। बोला—"महाराज, इसी के साथ परी-लोक की यात्रा शुरू होगी।"

राजा कुछ कहते, इससे पहले ही तेनालीराम ने गिलास उसके हाथ से ले लिया। बोला—"पहले तुम पियो, यात्रा में तुम भी तो साथ चलो।"

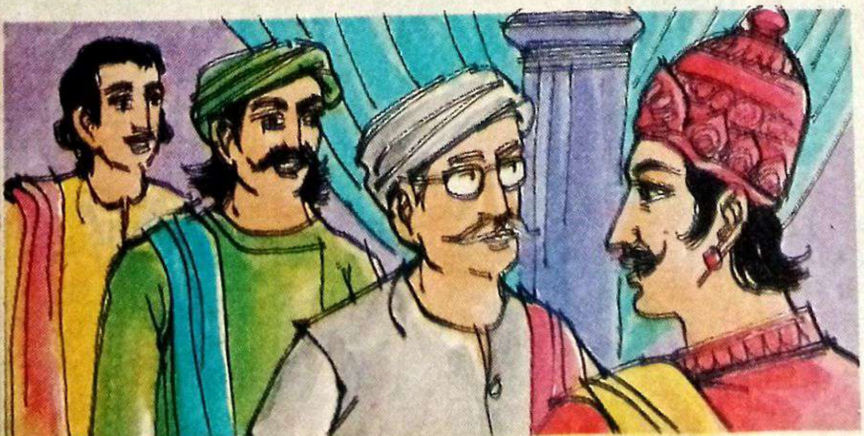
जादूगर हड़बड़ाकर बोला—"मुझे तो परियां ऐसे ही दिख जाएंगी।"



"हां, तुम्हें ज्यादा साफ दिखेंगी क्योंकि शरबत में बेहोशी की दवा जो है।" —तेनालीराम बोला।

यह सुनते ही जादूगर और उसके साथी भागने लगे। पूछताछ पर उन्होंने बताया कि वे शत्रु देश से आए थे। उनका इरादा महाराज को कैद कर, राज्य में तबाही मचाना था।

कृष्णदेव राय ने तेनालीराम से पूछा—"तेनालीराम, तुम्हें इन पर शक कैसे हुआ ?"

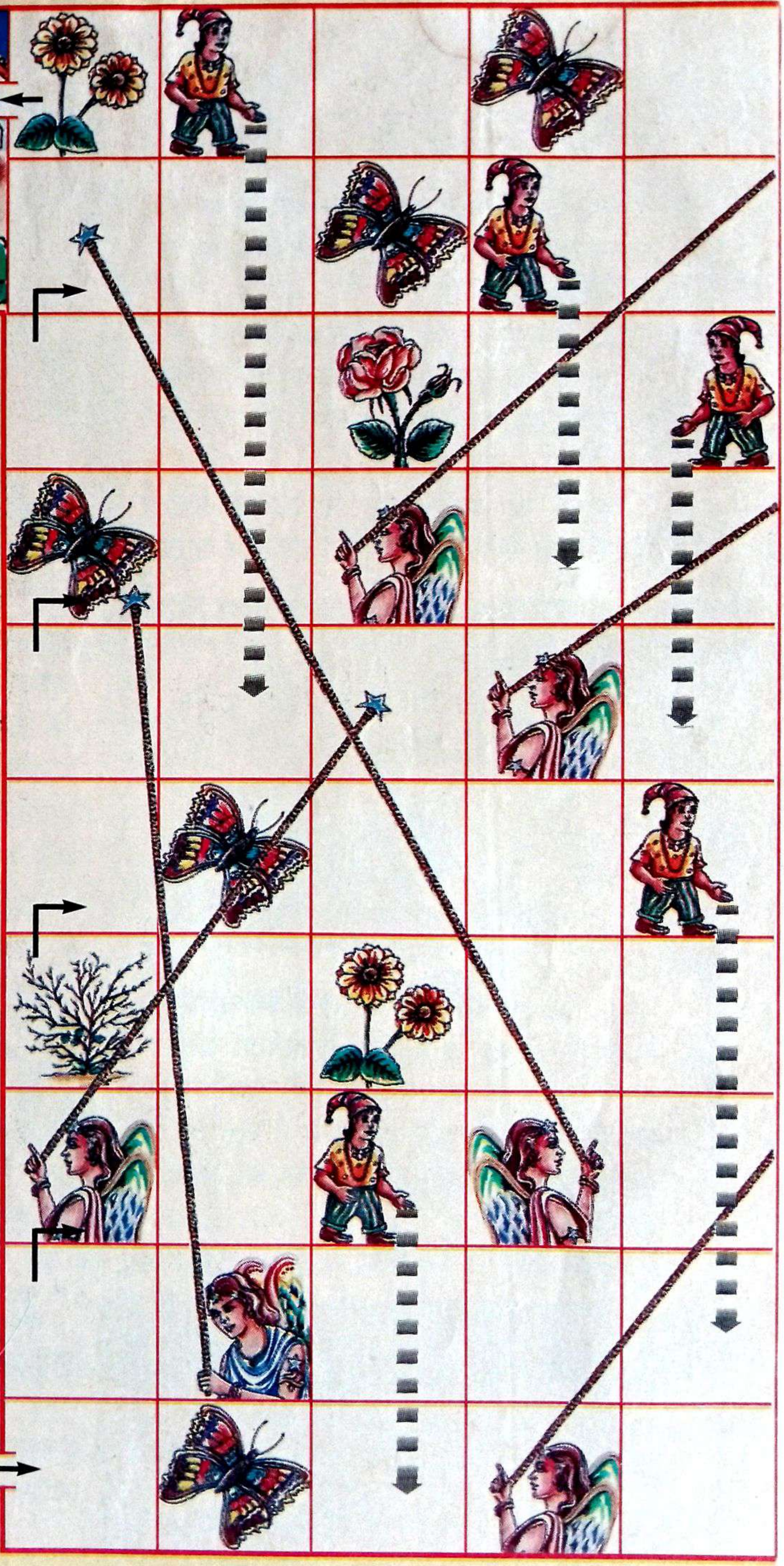


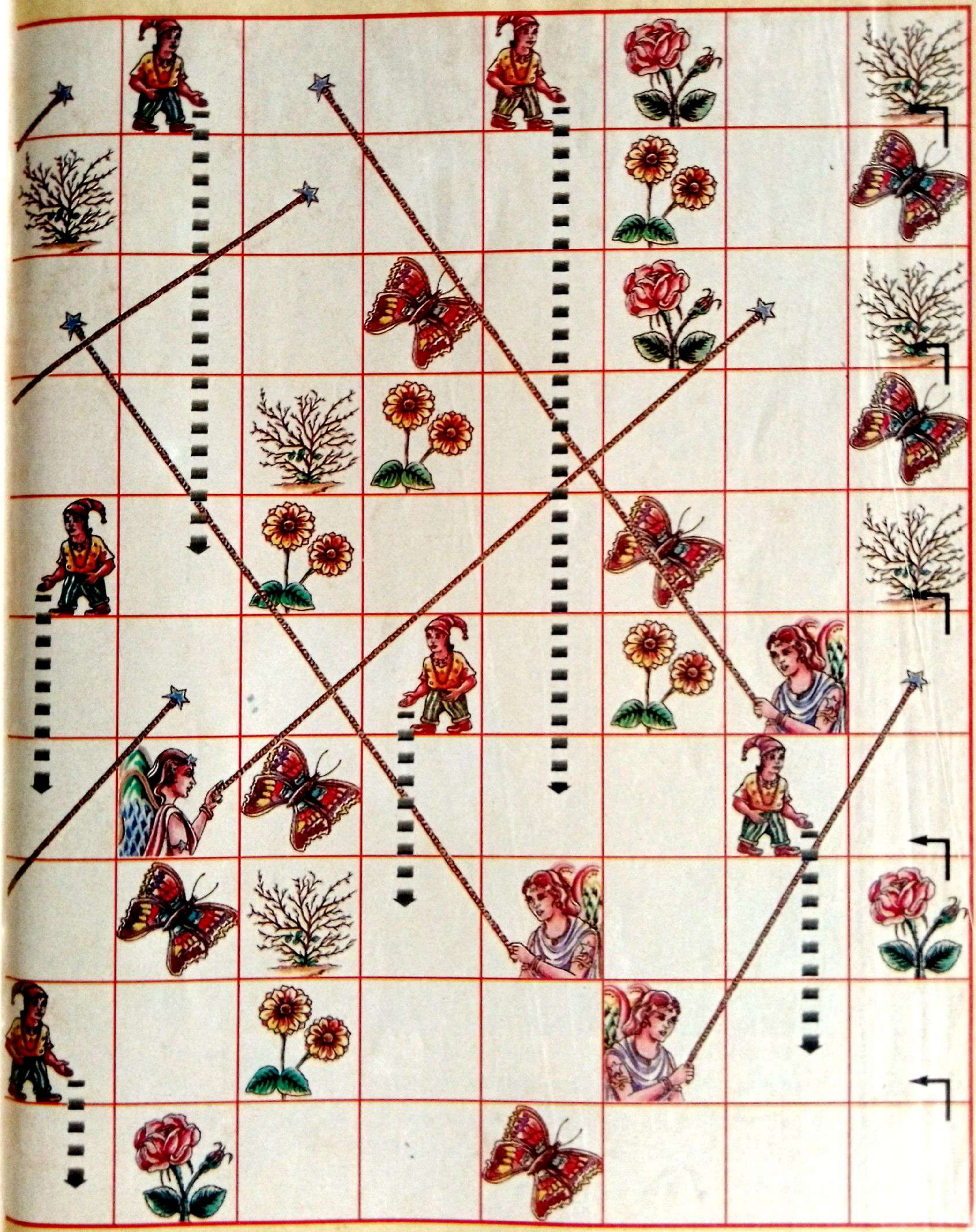
तेनालीराम ने कहा—"महाराज, जब इसने शरबत आगे बढ़ाया, तो इसके हाथ कांप रहे थे। तभी समझ गया कि पूर्णिमा की रात की बजाय, यह अमावस्या की रात को परियां क्यों दिखा रहा है!" महाराज ने तेनालीराम की खूब प्रशंसा की।



प लोक
की सैर

- चारटयां। दो से चार तक खिलाड़ी।
- पासे६ अंक आने पर गोटी पहले खाने में ागी। दोबारा जो भी अंक आएंगे, गोटतने खाने आगे बढ़ेगी।
- तित के खाने में आने पर गोटी आगे वा फूल के खाने में उड़कर पहुंच जगी।
- फू क खाने में आने पर वह एक खाना अ बढ़ेगी।
- प के खाने में आने पर गोटी उसकी ज छड़ी से ऊपर चढ़ जाएगी।
- बं के खाने में आने पर वह गोटी को नी गिरा देगा।
- व के खाने में आने पर गोटी उलझ ागी। फिर ६ अंक आने पर ही छह ख आगे बढ़ेगी। दोबारा पासा फेंकने जितने अंक आएंगे, गोटी फिर उतने ही ख आगे बढ़ेगी।
- लोक जाने के लिए उतने ही अंक आयक हैं, जितने चाहिएं। अधिक अंक आने पर गोटी वहीं रुकी रहेगी।
- पहले पहुंचता जाएगा, वही क्रम से प्रम द्वितीय और तृतीय रहेगा।

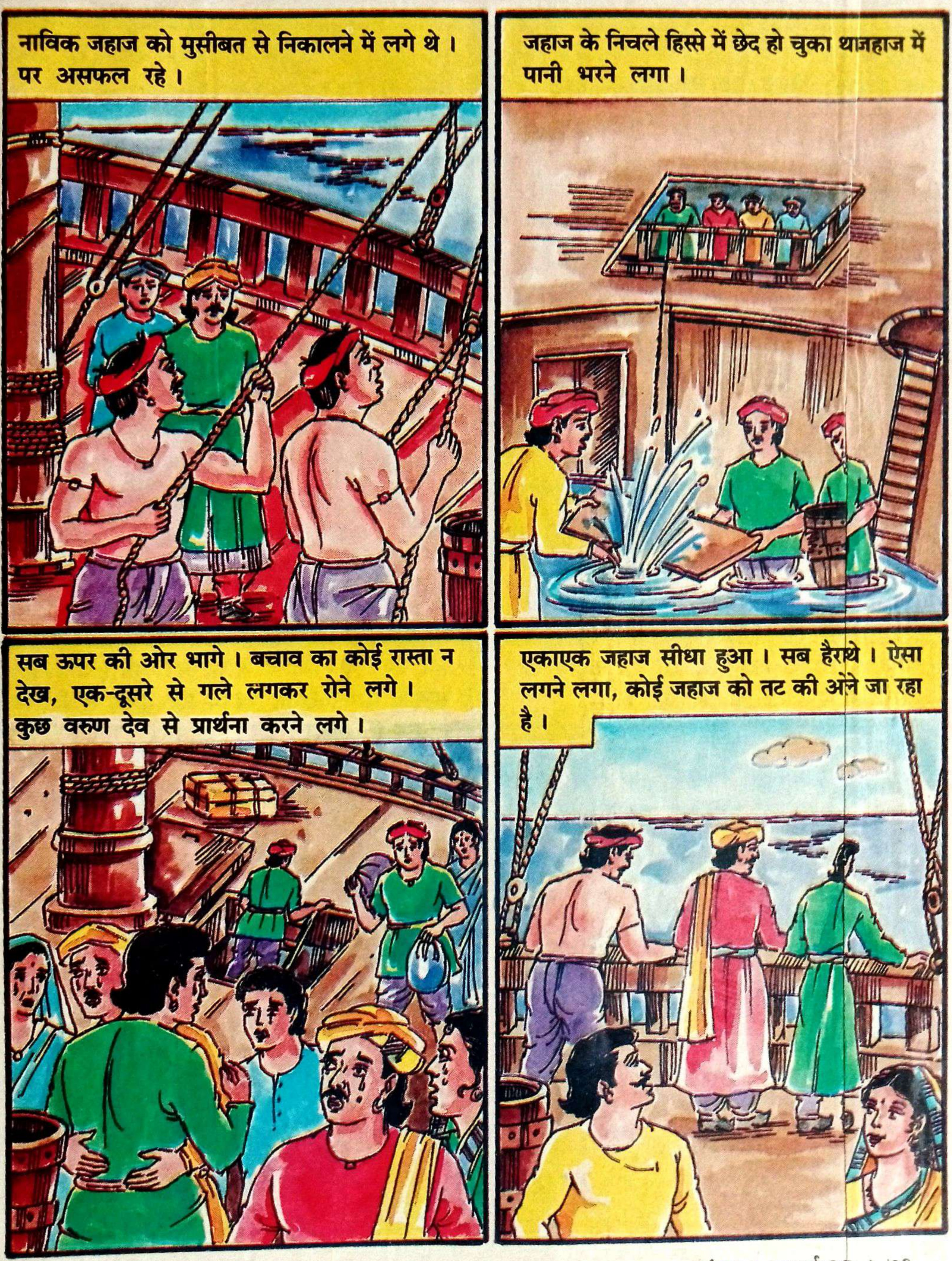





इक दूजे के लिए
बिल्कुल नए रंगों और डिज़ाइनों में
नए ग्लाइडर्स PG, मनमौज़ी खुशियों के साथी। हर मौसम के हमसफ़र, न्यूबक लेदर अपर। स्लिप ऑन्स भी, लेस अप्स भी। इंजेक्शन मोल्डिड EP सोल। रंग अनूठे, डिज़ाइन अछूते। जो सबको भाएं, सबको सजाएं। आप भी चाहें तो चले आएं किसी भी लिबर्टी एक्सक्लूसिव शोरुम या शू स्टेशन पर।



गाने लगीं जलपरियां
रणवीर जहाज पानी को चीरता हुआ आगे बढ़ रहा था। सभी यात्री समुद्री यात्रा का आनंद ले रहे थे।
रणवीर
शाम के वक्त संगीत की मधुर धुनें बजने लगीं। एक हाल में सभी ने नृत्य किया। बच्चों ने गाने व कविताएं सुनाईं।
जहाज में चार दिन मजे में गुजरे। रात के समय सब सो रहे थे। तभी खतरे की घंटी बजी।
जहाज समुद्र में डूबने लगा। गहरे समुद्र को देखकर अब डर लगने लगा था।


नाविक जहाज को मुसीबत से निकालने में लगे थे । पर असफल रहे ।
जहाज के निचले हिस्से में छेद हो चुका थाजहाज में पानी भरने लगा ।
सब ऊपर की ओर भागे । बचाव का कोई रास्ता न देख, एक-दूसरे से गले लगकर रोने लगे । कुछ वरुण देव से प्रार्थना करने लगे ।
एकाएक जहाज सीधा हुआ । सब हैराथे । ऐसा लगने लगा, कोई जहाज को तट की ओने जा रहा है ।


समुद्र के व से जहाज तट पर आ गया। लेकिन यह हुआ पे, किसी को पता नहीं चला।
तभी खुशी के गीत गाने की आवाजें आईं। लोगों ने उस ओर देखा।
समुद्र बीच पांच जलपरियां थीं। वे जहाज की दूसरी ा में गाती हुई तैर रही थीं।
सब खुश थे। वे भी साथ गाने लगे। अब उन्हें समझते देर न लगी, जहाज को डूबने से किसने बचाया।

गोलू की बांसुरी

—उषा यादव

एक था लड़का । उसका नाम था गोलू । वह दुनिया में बिल्कुल अकेला था । पर वह अपने गुणों की वजह से सारे गांव का प्रिय था । कोई उसे बचा-खुचा खाना दे देता । कोई अपने बच्चों के पुराने कपड़े, तो कोई अपने घर के बरामदे में सोने की जगह । इसी तरह उसके दिन कट रहे थे ।

एक दिन शाम को गांव के बाहर बने देवी मंदिर के पास बच्चे खेल रहे थे । तभी एक बांसुरी वाला आया । उसकी बांसुरी की मीठी आवाज सुनकर, बच्चे उसके इर्द-गिर्द जमा हो गए ।

"बांसुरी वाले, जाना नहीं । यहीं ठहरो । हम अपने घरों से अभी रुपए लेकर आते हैं ।"— कहते हुए बच्चों ने सरपट दौड़ लगाई । थोड़ी देर बाद वे रुपए लेकर आ गए । बांसुरी वाले की लगभग सारी बांसुरियां बिक गईं । सिर्फ एक बांसुरी बाकी रही ।

नन्हा गोलू भी बच्चों के झुंड में खड़ा था । बांसुरी वाले ने उसे पुचकारते हुए पूछा —"बेटा, तुम्हें बांसुरी पसंद नहीं है क्या ? तुम अपने घर से पैसे क्यों नहीं लाए ?"

"इस बेचारे गोलू का घर कहां है ! इसका दुनिया में कोई नहीं है ।"— एक बच्चे ने कहा ।

बांसुरी वाले का मन भारी हो गया । उसने अपनी आखिरी बांसुरी गोलू को पकड़ाते हुए कहा —"देखो बेटा, यह चटकी हुई है, इसलिए बिक नहीं सकी । तुम्हें इसके लिए कुछ नहीं देना पड़ेगा । मेरी ओर से भेंट समझकर ले लो ।"

गोलू का गोरा चेहरा खुशी से चमक उठा । उसे वह चटकी बांसुरी हजार कीमती खिलौनों से बढ़कर लगी । बेचारे ने जिंदगी में पहली बार मनोरंजन की कोई चीज पाई थी । बांसुरी को लेकर अपने सीने से इस तरह चिपका लिया, जैसे कभी छोड़ेगा ही नहीं । बांसुरी वाला चला गया ।

तभी भिखारिन जैसी एक औरत आ वहां गई । उसके चेहरे पर उदासी थी । वह बोली —"बच्चो, कोई बांसुरी वाला अभी आया था क्या ? वह कहां चला गया ?"

"उसकी सारी बांसुरियां हमने खरीद लीं । वह चला गया ।"— एक बच्चे ने बताया ।

यह सुन औरत की आंखें भर आईं । वह बोली —"मेरा बच्चा पंद्रह दिन से बीमार है । वह झोंपड़ी में पड़ा हुआ है । उसने बांसुरी की आवाज सुनकर मुझे बांसुरी खरीदने के लिए भेजा था । पर अब तो यहां बांसुरी वाला है ही नहीं ।"

"तुम्हें आने में देर हो गई ।"— दूसरा बच्चा बोला ।

"मैं खाली हाथ लौटूंगी, तो मेरे बच्चे का दिल टूट जाएगा । तुम लोग तो खाते-पीते घरों के बच्चे हो । तुम्हारे पास ढेरों खिलौने होंगे । क्या तुम में से कोई अपनी बांसुरी मुझे दे सकता है ?" —औरत ने



पूछा।

बच्चे तो आखिर बच्चे थे। अभी-अभी चाव से खरीदी हुई अपनी बांसुरी भला क्यों देते ? वे दाएं-बाएं देखने लगे। इसके बाद दो-तीन बच्चे कोई न कोई बहाना बनाकर, वहां से खिसक लिए। चार-छह बच्चे तो ऐसे तेज निकले कि अपनी बांसुरी देने से साफ मुकर गए।

"मेरा बच्चा बड़ी आस-उम्मीद लगाए मेरी राह देख रहा होगा। मैं खाली हाथ पहुंचूंगी, तो वह कितना दुखी होगा !"— औरत अपनी छलछलाई आंखें पोंछती हुई बोली।

नन्हे गोलू ने अब एक पल भी देर किए बिना, अपनी चटकी बांसुरी औरत की ओर बढ़ा दी। वह झिझकते हुए बोला —"यह चटकी हुई है न, इसीलिए मैं इसे तुम्हें देने में हिचक रहा था। पर कुछ न ले जाने से तो यह चटकी बांसुरी ले जाना अच्छा। इसे लेकर तुम फौरन अपने बच्चे के पास चली जाओ।"

"जुग-जुग जियो बेटा।"— भिखारिन जैसी वह औरत खुश होकर बोली और उसने हाथ बढ़ाकर गोलू की बांसुरी पकड़ ली।

पर यह क्या ! डूबते सूरज की रोशनी में सबने चकित होकर देखा —भिखारिन की जगह सुनहरे रंग की परी वहां खड़ी थी। सुनहरे पंख। सुनहरे वस्त्र। यहां तक कि अभी-अभी गोलू की दी हुई चटकी बांसुरी भी उसके हाथों में सोने जैसी चमक रही थी।

"मेरा नाम स्वर्णपरी है। मैं यहां से जा रही थी। अचानक मन में आया कि तुम बच्चों के साथ मैं भी खेलूं। मुझे खुशी है कि यह छोटा बच्चा मेरी उम्मीद की कसौटी पर खरा उतरा।"— परी ने मुसकराते हुए कहा।

परी ने बांसुरी गोलू की तरफ बढ़ाई। गोलू ठहरा सीधा-सादा बच्चा। अपनी तारीफ सुनी तो शरमा गया। "इसे तुम अपने पास रखो बेटा। मैं तुम्हें इनाम देना चाहती हूं। बोलो, तुम्हें क्या चाहिए ?" —परी बोली।

"महंगे खिलौने मांग ले, गोलू।"— एक बच्चा बोला।

"ढेर सारी मिठाइयां मांग ले। भरपेट खाएगा।"— दूसरे ने कहा।

पर गोलू चुपचाप खड़ा था। अचानक उसके चेहरे पर दृढ़ता की चमक कौंध गई। मधुर आवाज में बोला —"परी रानी, मुझे अपने लिए कुछ नहीं चाहिए। मुझे तो सारा गांव बहुत प्यार करता है। जहां ठहर जाता हूं, वहीं खाना, कपड़ा, सोने की जगह मिल जाती है। लेकिन..."

"बोलो बेटा, संकोच मत करो।"— स्वर्णपरी ने उसकी हिम्मत बढ़ाई।

—"हमारे गांव में एक काकी हैं। उनका बेटा सालों पहले कमाई के लिए परदेस गया था, आज तक लौटकर घर नहीं आया। काकी उसे याद करके कभी-कभी बहुत परेशान हो जाती हैं। इसी तरह..."

"हां-हां, कहो, रुक क्यों गए ?"— परी ने फिर बढ़ावा दिया।

"हमारे गांव के बूढ़े दादू की बीमारी लाइलाज है। वह भी कभी-कभी दुखी होकर कहते हैं कि इस जिंदगी से तो मौत ही अच्छी। उनका दुःख देखकर मेरा जी तड़पकर रह जाता है।"— गोलू ने कहा।

"ओह, तो तुम चाहते क्या हो ?"— स्वर्णपरी परेशान होकर बोली।

—"मैं चाहता हूं कि मेरी बांसुरी के सुरों में ऐसा संगीत समा जाए कि हर दीन-दुखी के आंसू उसे सुनकर सूख जाएं और उनका चेहरा मुसकान से भर उठे।"

"ऐसा ही होगा।"— कहते हुए स्वर्णपरी उड़ गई।

गोलू ने बांसुरी अपने होंठों से लगाई। सचमुच एक जादुई संगीत उससे झरने लगा था। एक उजली मुसकान का सोता उससे फूट पड़ा था। वह अपनी बांसुरी का यह संगीत काकी और बूढ़े दादू को सुनाने के लिए तेजी से गांव की ओर चल दिया। •

नंदन ज्ञान पहेली

१५०० रु. पुरस्कार

कोई शुल्क नहीं

नियम और शर्तें

- **पहेली में १७ वर्ष तक के पाठक भाग ले सकते हैं।**
- **रजिस्ट्री से भेजी गई कोई भी पूर्ति स्वीकार नहीं की जाएगी।**
- एक व्यक्ति को एक ही पुरस्कार मिलेगा।
- सर्वशुद्ध हल न आने पर, दो से अधिक गलतियां होने पर, पहेली की पुरस्कार राशि प्रतियोगियों में वितरित करने अथवा न करने का अधिकार सम्पादक का होगा।
- पुरस्कार की राशि गलतियों के अनुपात में प्रतियोगियों में बांट दी जाएगी। इसका निर्णय सम्पादक करेंगे। उनका निर्णय हर स्थिति में मान्य होगा। किसी तरह की शिकायत सम्पादक से ही की जा सकती है।
- किसी भी तरह का कानूनी दावा, कहीं भी दायर नहीं किया जा सकता।
- यहां छपे कूपन को भरकर, डाक द्वारा भेजी गई पहेली ही स्वीकार की जाएगी। भेजने का पता है—**सम्पादक, 'नंदन', (ज्ञान-पहेली), हिंदुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१।**
- एक नाम से, पांच से अधिक पूर्तियां स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संकेत

बाएं से दाएं

१. जी हां, — ने ही यह मिठाई भिजवाई है राजन। (नाग/नानी)

२. महल के भीतर जाते ही वे — उछलकर मेरे कंधों पर आ बैठे। (छौने/बौने)

४. मैंने देखा कि वह — की आवाज सुनकर धीरे-धीरे सिर हिला रहा था। (बीन/बीवी)

८. इस निर्जन गुफा में भी तुम्हें — की याद आ गई कुमार? (गुरु/गुड़)

९. तब तुमने — मुझे परी लोक में आने के लिए आवाज दी थी न! (ही/भी)

११. — को देखकर तुम डर गए कांतिवर्धन? (गदा/दादा)

१२. हिंदी के प्रसिद्ध कवि, जिन्होंने बच्चों के लिए भी सुंदर कविताएं लिखीं।

ऊपर से नीचे

३. शायद यह फूलों की — उसी सब्ज परी की है। (छड़ी/झाड़ी)

५. लेकिन — की चाची ने तो यही कहा है अम्मां! (भानु/भाभी)

६. यह अनोखी — हमारे देश का गौरव है आचार्य वसुदेव। (माला/माटी)

७. भारत की एक सुंदर झील।

१०. बताओ भला इस पेड़ का नाम?

नंदन ज्ञान-पहेली : ३६७

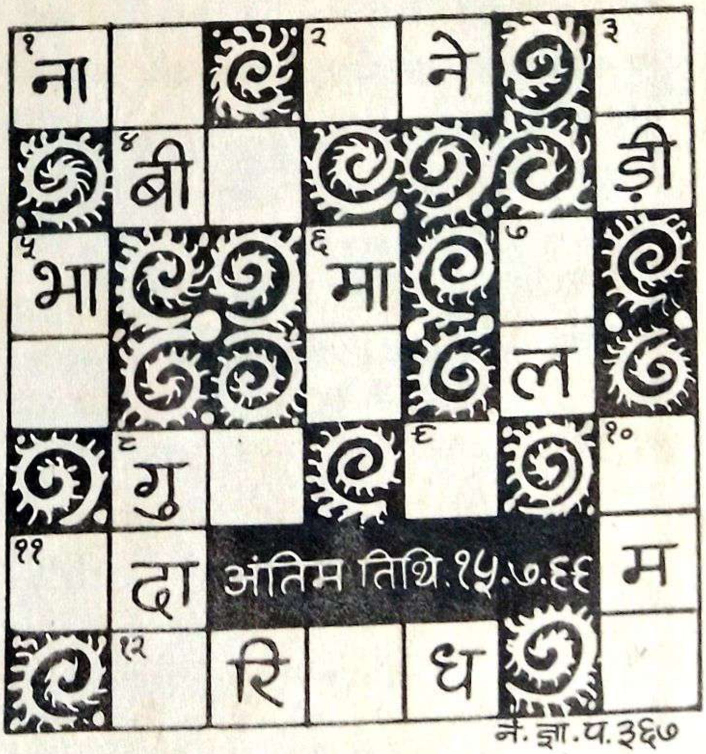
नाम ____________________

उम्र ________ पता ____________________

____

____

____



नं. ज्ञा. प. ३६७



किन्नरदेव

—मैत्रेयी पुष्पा

किन्नरदेव का मेला !

बारहवर्षीय अर्जुन मां के साथ मेले में आया है। मेले का दृश्य, आंखें चमक उठीं। बरफी, जलेबी, चमचम और पेड़ा ! समोसे और आलू की टिक्की ! अर्जुन के मुंह में कई स्वाद घुल गए।

पैंट-कमीज, बिना तेल के उड़ते हुए बाल संवारता हुआ आगे बढ़ा, तो बाजों और तमंचों की दुकान ने मन मोह लिया।

अचानक गरदन पर चनकटा पड़ा। कौन ? अम्मां !

—"भीड़ में खोएगा क्या ? पूजा के बाद कथा सुननी है। थान के पास जाजिम बिछी है, वहां चलकर बैठ। तमाम बालक बैठ गए, फिर जगह नहीं मिलेगी।"

कथा ! वही लीलावती-कलावती, उल्कामुख और लकड़हारा।....सत्यनारायण की कथा उसे याद है। कितनी बार सुने ? अम्मां से कहे तो एक चनकटा और देगी, कहेगी—"पापी, अधर्म की बात करता है !"

अर्जुन मन मारकर जाजिम की ओर चल पड़ा। आनाकानी कैसे करे, अम्मां खर्च के लिए कानी कौड़ी तक नहीं देगी। एक सप्ताह से वह एकदम श्रवण कुमार बना हुआ है। अम्मां किसी काम के लिए कहे वह चट से कर दे, सारा दिन अब मां के हवाले है।

मगर वह जिद कर के नहीं आया, अम्मां ही जिद करके लाई है। 'एक बार हर मां अपने बच्चे को किन्नर देव के मेले जरूर लाती है।'—अम्मां ने कहा था।

पंडित जी पूजा की थाली सामने धरे बैठे हैं। औरतें समूहों में वहां आने लगीं। थान पर जल चढ़ाने के बाद थोड़ा-सा पानी बचा लाई हैं, जिसमें फूल भिगोकर पंडित जी को अर्पण कर रही हैं।

सब बच्चे हाथ जोड़कर बैठे हैं।

पंडित जी ने आंखें मूंदकर मंत्र पढ़ा—'अथ किन्नरदेव जलस्य बलस्य च धर्मस्य देवम्....।' फिर आंखें खोल लीं। जो बच्चे एक-दूसरे को कोहनी मार रहे थे, उन पर पानी के छींटे मारे। कहानी आरम्भ हुई।

पचास साल पहले की बात। अंगरेजी राज विदा ले रहा था। अतरपुर में तब चित्रवीर नाम के जमींदार थे, जिनकी हवेली यहां आज भी खड़ी है।

उनका एक बेटा था। नाम था किन्नर देव। वह राजकुमार जैसा सुंदर न था, किसान और ग्वालों के बेटों जैसी तांबिया रंगत और अच्छी तंदुरुस्ती का मालिक था। उम्र थी अठारह वर्ष।

चित्रवीर गांव का हर तरह से ख्याल रखते। एक बार सूखा पड़ा। फसल बोकर किसान बादलों को मनाने लगे। इंद्र भगवान की जैजैकार की। तमाम टोने-टोटके किए। इंद्र देवता ने बादल भेजे, तो रुई से सूखे ! पिघलें तो पिघलें कहां से ? खेतों में पौधे थे, जो पहले मुरझाए और फिर मरने लगे।

कुएं सूख गए। बस, जमींदार के कुएं में ही पानी बचा था। वह अपने कुएं का पानी किसानों को दें कैसे ? सरकारी मनाही थी। अंगरेज बहादुर का हुकम था, किसान पर रहम मत करो !

एक रात निरंजन नाम का किसान अपने पसीने की बूंदों को देखकर सोचने लगा-'क्यों न इन्हें पौधों में

छोड़ दूं ? जो जिंदा रह जाएं, वे ही बहुत ।' फसल के मोह ने उसे पागल-सा कर दिया । पसीने से खेत सींचे जाते हैं—यह तो बस कहावत है । सब कुछ समझता था निरंजन,मगर उसे सूखते-मरते पौधों की ममता हो आई । देखने पहुंच गया, जैसे बीमार बच्चे को मां देखती है ।

रात थी । चंद्रमा का प्रकाश था । उजियारी में खेत पर रहट चला रहा था । सुनहरी रंग के बैल और चांदी के सितारों वाली उनकी झूलें ! बैलों को हांकने वाला मुकुटधारी राजकुमार ! उसके हाथ में फूलछड़ी !

निरंजन खोया-खोया-सा देखता रहा—राजकुमार बैलों को पीट नहीं रहा, फूलछड़ी से सहला रहा है और रहट की बाल्टियां सोने की हैं । चांदी जैसे पानी की धारें खेतों की ओर बह चलीं ।

निरंजन खुशी के मारे चिल्लाया—"जल देवता !" मगर उसके कंठ से आवाज निकली नहीं । आंखों में हरियाली लहराने लगी ।

झूमता हुआ घर आया । जो देखा, पत्नी को बताया । वह हंसना चाहती थी—शेखचिल्ली ! पर कमजोरी के कारण हंसी पेट में ही रह गई । बस इतना कहा—"पानी था तो ले क्यों नहीं आए ? हम कब के प्यासे हैं ।"

निरंजन लज्जित-सा बैठा रहा ।

उस दिन के बाद किसानों को ऐसा ही सपना आया । सबेरे की असलियत भी सपने जैसी! सारे खेत सिंचे मिलते । पौधे हवा में झूमते हुए !

गांव में एक विचित्र घटना और घटी ।

गांव की लड़कियों को कोई दैत्य उठा ले जाता । अनुमान था कोई बिगड़ा हुआ प्रेत है । वह लड़कियों को डराता है, पीटता है और कभी-कभी तो मार भी देता है । गांव में शोक और कोप का तूफान-सा आ गया । गांव के ही लोग डर कर अपने घर के दरवाजे न खोलते ।

चित्रवीर ने अपने कारिंदे दौड़ाए । मगर प्रेत नहीं मिला । चित्रवीर ने अंत में ऐलान किया—"घर के द्वार मूंदने से कुछ नहीं होगा । अब कातिल प्रजा के हवाले है। वह जिसे भी मिले, गांव के लोग घेर लें और सजा दें ।"

तीन दिन बाद ही नतीजा सामने आ गया—चित्रवीर जमींदार के जमाई बाबू चबूतरे पर पड़े थे ।

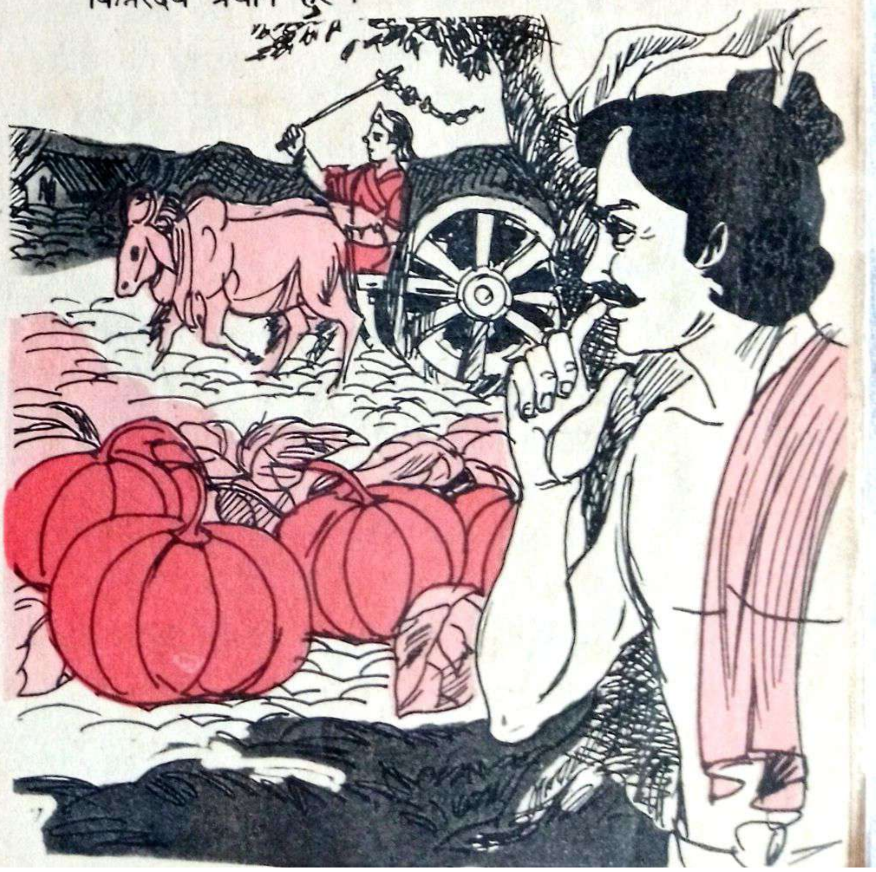
करिश्मा ! इन घटनाओं ने सिद्ध कर दिया कि अतरपुर के पेड़ों पर ऐसे देवदूत का वास है जो जल, बल और धर्म पर अपना अधिकार रखता है । लोगों ने पेड़ों की पूजा आरंभ कर दी । कई लोगों को पेड़ों के नीचे वह देवता दिखाई देता जो निरंजन ने देखा था ।

समय आगे बढ़ा ! जमींदारों की जगह प्रधान आनेवाले थे । जमींदार चित्रवीर ने कहा —"अब मैं बूढ़ा हो रहा हूं । बीमार भी रहता हूं । क्या पता कब खत्म हो जाऊं ? प्रधान नहीं बनूंगा ।" तो कौन बनेगा प्रधान ? कोई इतना पुण्यवान नहीं जितना कि राजा होता है । कोई इतना आत्मविश्वासी नहीं कि लोग चटपट उसका भरोसा कर लें ।

गांव के लोग जहां इकट्ठे होते,प्रधान चुनने की समस्या में उलझ जाते । तमाम नाम सुझाते, फिर खुद ही कोई न कोई कारण देकर काट देते ।

अंत में फैसला हुआ—क्यों न किन्नरदेव को प्रधान बना दें । पिता के बहुत-से गुण और बहुत-सी सीखें उनके दिमाग में होंगी ।

किन्नरदेव प्रधान हुए ।



उनके प्रधानकाल में अनेक बच्चे जन्मे, अनेक बूढ़े मरे। गांव का जवान मेहतर सोनाराम मरा, तो उसकी पत्नी सोमवती पागल-सी हो गई। एक साल की बच्ची गोद में थी। सोमवती सारा दिन रोया करती। पति के दुःख में बड़ा कष्ट पाया। डलिया तक नहीं बुन पाती।

अचानक उसका रोना बंद हो गया। लोग अचम्भे में पड़ गए। मेहतर के घर में घुसकर कैसे देखते? बस तरह-तरह के अंदाजे लगाया करते। सोमवती सोना को इतनी जल्दी भूल गई! बेचारे सोनाराम की किस्मत।

गांव के गड़रिया ने अपनी पत्नी से एक अनहोनी बात कही—"मैंने किन्नर देव को सोमवती के घर से निकलते देखा है। छि:इतने बड़े जमींदार का बेटा, गांव का प्रधान और ऐसी हरकत। मेहतर के घर तो हम भी नहीं घुसेंगे।"

गड़रिया की स्त्री ने अपनी सखी-सहेलियों से कह दिया—"देख, गजब! किन्नर देव मेहतर के घर!" बात आग की तरह सारे गांव में फैल गई, क्योंकि सबने उसे हवा दी।

जाति-बिरादरी के लोगों ने चित्रवीर के सामने मामला रखा और किन्नर देव के चाल-चलन पर अंगुली उठाई।

पिता ने कठोर स्वर में सोमवती को लेकर सवाल किया तो किन्नर देव ने भी बेरुखी से जवाब दिया—"पिता जी, प्रधान होने के नाते मुझे गांव के हर आदमी-औरत के दुःखदर्द में शामिल होना है। मेरे इस अधिकार में कोई दखल न दे, यहां तक कि पिता भी नहीं...."

लोग लोग थे। जनता जनता थी। आजादी का समय था, क्रोध पर काबू नहीं था। किन्नरदेव प्रधान था, लेकिन अकेला था। पांच आदमियों ने घेर कर सोमवती के घर के सामने ही ढेर कर दिया।

बेटा मारा गया! चित्रवीर मुंह खोले, आंखें फाड़े देखते रह गए।

वह रोए नहीं, मौत के गले लिपट गए। बिस्तर पकड़ लिया। इलाज करने वाले वैद्य हार गए। अंतिम घड़ी आ पहुंची।

पंडित ने चित्रवीर के मुंह में गंगाजल डाला और कहा—"जो कुछ छिपा हो, उसे कहो। आदमी के साथ कुछ नहीं जाता, सब जलकर खाक हो जाता है।"

चित्रवीर की मरणासन्न अवस्था। आंखों से धीरे-धीरे आंसू ढुलक रहे थे। कुछ बोलना चाह कर भी बोल नहीं पा रहे थे। हिचकियां लगी थीं। जितनी भी ताकत शरीर में थी, बोलने में लगा दी। अटक-अटक कर कहने लगे—गांव में सूखा पड़ा था। रहट चलाकर रातों को किसानों के खेत सींचने वाला किन्नरदेव ही था।

लड़कियों के वध के दोषी अपने जीजा के हाथ-पांव बांधकर डालने वाला किन्नर देव! सोमवती और उसकी बच्ची भूखी मर रही थी। उनकी सहायता भी उसने की। देवता था, न कोई भूत-पिशाच। वह मेरा बेटा था कि तुम्हारा ही भाईबंधु?

भारी भीड़ जमा थी। लोगों के मुंह से 'आह' निकली। शोकभरी सांसों की आंधी आ गई। जिसे देखो, वह चुपचाप रो रहा था।

पंडित जी बोले—"कथा खत्म हुई। वर्षों पुरानी बात है, अतरपुर के लोगों ने किन्नरदेव का थान बनवाया। हर तीसरे साल मेला लगता है। दूर-दूर से औरतें आती हैं। नारियल और फूल चढ़ाकर धूप-दीप देती हैं। आंचल पसारकर वर मांगती हैं—हे किन्नरदेव, हमें अपने जैसा बेटा-बेटी देना। समय बड़ा भयानक है।"

फिर पंडित जी बच्चों की ओर देखकर कहने लगे—"हर मां अपने बच्चे में आज के दिन किन्नरदेव की छवि देखती है। जल-बल और धर्म को साधकर चलने वाला किन्नरदेव।"

अर्जुन ने मां की ओर देखा। मां ने उसे गले से लगा लिया। ●

मां-बेटा

— मृदुला हालन

गोपाल अपने माता-पिता के साथ गांव में रहता था।

उसके पिता की जमीन थी। वे मेहनत से उस पर हल चलाते, बीज बोते। फसल पकती, तो साल भर का अनाज घर के ओसारे में रखकर शेष अनाज मंडी में बेच आते।

अब गोपाल बारह साल का हो गया था। माता-पिता उसके बढ़ते कद और मजबूत काया को देख मन ही मन प्रसन्न थे। उनका सपना था कि गोपाल पढ़-लिखकर बड़ा आदमी बने।

पर उनके सोचने से क्या होता है? गांव में भयंकर अकाल पड़ गया। पानी के अभाव में खेत सूख गए। जानवर मरने लगे। चारों तरफ हाहाकार मच गया। लोग घर-गांव छोड़-छोड़कर भागने लगे।

अकाल का असर गोपाल के घर पर भी पड़ा। चारा और पानी के अभाव में उनके दोनों बैल मर गए। बैलों के मरने का सदमा उसके पिता बर्दाश्त नहीं कर सके। एक दिन वह भी चल बसे। गोपाल और उसकी मां की हंसती-खेलती दुनिया तहस-नहस हो गई।

कुछ दिन घर में रखे अनाज से काम चला। एक दिन भंडार भी खाली हो गया। मां, बेटा दोनों सुबह-सुबह घर से काम की तलाश में निकल जाते। शाम तक दो रोटी लायक जुगाड़ हो जाता था। अब वह रास्ता भी बंद हो रहा था। गांव के कुएं, बावड़ी—सबका जल सूख गया, तो काम कहां मिले।

ऐसे ही एक दिन दोनों लौटे। मां कुछ आटा, नमक और प्याज खरीदकर लाई। घर आकर उसने आठ रोटियां बनाईं।

गरम-गरम रोटियों की खुशबू से गोपाल की भूख बढ़ गई।

मां ने चार रोटियां और प्याज की एक पोटली बांध दीं। दो-दो रोटियां दो थालियों में रखीं। दोनों ने दो-दो रोटियां खा लीं। गोपाल ने कहा —"मां! और रोटी दे न।" उसकी नजर पोटली में बंधी रोटियों पर थी।

लेकिन मां ने कहा —"गोपाल! ये रोटियां तेरे ही लिए हैं। पर अभी नहीं मिलेंगी। बेटा! मैंने सोच लिया है कि तू काम की तलाश में दूर निकल जा। जहां काम मिले, मेहनत से करना। मेरी चिंता मत करना। वक्त हमेशा तो ऐसा नहीं रहेगा। तू कुछ पैसे जमा कर ले, तो लौट आना।" कहकर मां ने पोटली बेटे को दे दी। कहा —"इसमें चार रोटियां हैं। एक-दो दिन इनके सहारे कट जाएंगे। तब तक, भगवान करे, तुझे काम मिल जाएगा।"

गोपाल समझ गया कि मां ने बहुत सोचकर ही यह फैसला किया है। उसने रोटियों की पोटली उठाई। मां के पैर छुए और चल पड़ा।

गोपाल चलते-चलते एक गांव में पहुंचा। वहां कोई काम नहीं मिला। उससे अगले गांव का भी यही हाल था। वह सुबह से शाम तक ऐसे ही भटकता रहा पर न काम मिला, न आराम किया। अब शाम का धुंधलका घिरने लगा। भूख, प्यास और थकान से उसका बुरा हाल था। 'अब और नहीं चला जाता। रात को यहीं कहीं आराम कर लूं। सुबह आगे जाऊंगा।'-यह सोचकर उसने चारों ओर देखा। सामने ही एक कुआं दिखाई दिया। पास जाकर अंदर झांका



तो देखा, उसमें पानी था। 'यही जगह ठीक है।'—सोचकर वह वहीं बैठ गया। रोटियों की पोटली खोली और बोला —"भूख इतनी लगी है, एक-दो से काम नहीं चलेगा। चार की चार खानी पड़ेंगी।"

संयोग की बात, उस रात वहां चार परियां खेलने आई हुई थीं। उन्हें गोपाल की आवाज सुनाई दी। उन्होंने ध्यान से सुना। वे घबराईं कि कोई उन चारों को खाने की तैयारी कर रहा है। वे डर से कांपने लगीं। उनमें एक नन्ही परी थी। उसकी आंखों से आंसू बह निकले —"यह राक्षस मुझे भी खा जाएगा ! मुझे डर लग रहा है —ऊं... ऊं... ऊं...।"

परियां डर रही थीं। बड़ी परी के समझाने पर वे बाहर आईं।

बड़ी परी गोपाल के सामने जाकर बोली —"आप हम चारों को क्यों खाना चाहते हैं ? हमें मत खाइए। हम आपको बहुत-से उपहार देंगी।"

उधर गोपाल परी को देख, भौचक्का रह गया। उसने देखा, उसके सामने एक नहीं चार परियां खड़ी हैं। सुंदर, कोमल, रेशमी वस्त्र, बालों में हीरे-मोती जड़े हुए। बिलकुल कहानियों की परियों जैसी।

उसे चुप देखकर बड़ी परी ने फिर अपनी बात दोहराई—"हम चारों को मत खाइए।"

गोपाल को अचानक सारी बात समझ में आ गई। भ्रमवश परियां सोच रही हैं कि वह उन्हें खाना चाहता है। वह प्यार से बोला —"परी रानी ! मैं भला आपको क्यों खाऊंगा ? मैंने पढ़ा है कि परियां बहुत अच्छी दोस्त होती हैं। दोस्तों को कोई तंग नहीं करता।"

गोपाल ने उन्हें सारी बात बताई कि गांव में पड़े अकाल के कारण उन्हें कितनी मुसीबतें उठानी पड़ रही हैं। मां ने कठिनाई से चार रोटियां बनाकर दी थीं। वह यही सोच रहा था कि चारों आज खा ले या दो कल के लिए बचा ले।

गोपाल की बात सुनकर परियों का दिल भर आया। बड़ी परी ने कहा —"तुम एक नेकदिल और अच्छे इंसान हो। लो, यह मेरी जादुई पतीली। जब भी कुछ खाना हो, इसका ढक्कन दो दफा हिलाकर धीरे से बता देना कि क्या और कितना खाना चाहिए। पतीली दे देगी।" कहकर उसने पतीली गोपाल को दे दी।

दूसरी परी ने आगे बढ़कर उसे छोटी-सी माचिस जितनी एक पुस्तक दी। कहा —"मैं जानती हूं, तुम पढ़-लिखकर विद्वान बनना चाहते हो। यह पुस्तक सदा अपने पास रखना। तुम खूब विद्वान बन जाओगे।"

गोपाल के आश्चर्य का ठिकाना न था। तभी तीसरी परी आगे आई। उसने छोटा-सा चमकीला पत्थर उसे देकर कहा —"इस पत्थर को एक बार जहां भी घिसोगे, वहीं, तुम्हारे लिए सुंदर घर बन जाएगा।"

छोटी परी ने भी हंसकर कहा—"तुम मुझे बहुत अच्छे लगते हो। मैं तुम्हारे साथ खेलना चाहती हूं। पर अब सुबह होने वाली है। हमें जाना होगा। यह जादुई कपड़ा ले लो। जब भी इसे जोर से हिलाओगे, यह उड़न-खटोला बनकर, तुम्हें मेरे पास ले आएगा।"

बड़ी परी ने कहा —"अब हमारा चलने का समय हो गया है। तुम हमसे मिलने जरूर आना।" और देखते ही देखते चारों परियां उड़ गईं।

गोपाल का मन कर रहा था कि वह जल्दी से जल्दी मां के पास पहुंच जाए। सब सामान समेटकर वह गांव की ओर चल दिया। मां काम पर जाने की तैयारी कर रही थी कि गोपाल पहुंच गया। मां हैरान थीं —"तू वापस क्यों लौट आया ? कोई काम नहीं मिला क्या ?"

गोपाल ने सारी बात बताई। फिर चमकते पत्थर को जमीन पर घिसा। देखते ही देखते वहां सुंदर घर तैयार हो गया। मां-बेटा दोनों देखते ही रह गए। गोपाल मां का हाथ पकड़कर रसोई में ले गया। पतीली का ढक्कन बजाकर उसने दो थाली भोजन के लिए कहा। और दो थालियों में गरमागरम स्वादिष्ट भोजन आ गया।

अब गोपाल और उसकी मां के दुःखों का अंत हो गया था। वे सुख से अपने नए घर में रहने लगे।●

चीटू-नीटू



दया और दूसरों की भलाई ही सभी कहानियों का निचोड़ है
इन कहानियों से प्रेरणा लेकर हमें भी दूसरों की मदद करनी चाहिए
बाल कहानियां
देखो, बेचारा कीचड़ के गड्ढे में गिर गया है, एक हाथ तुम पकड़ो और दूसरा मैं, पकड़ कर बाहर निकालते हैं
दूसरों की भलाई करने में कष्ट तो आते ही हैं, पर नहा-धो कर सब ठीक हो जाएगा
बड़ी अम्मां कितने कष्ट से मटका ले जा रही है, क्यों न इसकी मदद...
अम्मां को मटके के पैसे... दूसरों का आशीष कमाने के लिए कुछ तो खोना पड़ता है
कितना जोर लगा रहा है, पर बेचारे से रिकशा चल नहीं रहा, क्यों न धक्का देकर इसकी मदद...
अरे मूर्खो, व्यर्थ में तुमने इसकी टक्कर करा दी, तुम्हें धक्का देने को कहा किसने था
भलाई करने के लिए कोई कहता थोड़े ही है



चित्र : ललित नांगिया

शीर्षक बताइए

इस चित्र को ध्यान से देखिए। इसके अनेक शीर्षक हो सकते हैं। आप भी सोचिए कोई छोटा-सा सुंदर शीर्षक। उसे पोस्टकार्ड पर लिखकर १० जुलाई '९९ तक नंदन मासिक, हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस, १८-२० कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेज दीजिए। चुने गए शीर्षकों पर चार पुरस्कार दिए जाएंगे।

परिणाम : सितम्बर '९९

पुरस्कृत चित्र

दीप्ति शर्मा (१४ वर्ष)
१९८६ सेक्टर-१५,
पंचकूला (हरियाणा)



इनके चित्र भी पसंद आए—
अंतिमा, लखीमपुर खीरी;
पूनम गोयल, महेंद्रगढ़;
अनुज अग्रवाल, सहारनपुर;
मनीष कुमार, विकासपुरी, दिल्ली

अजब-अनोखी दुनिया

सबसे छोटा बाजा : दुनिया के सबसे छोटे तार वाद्ययंत्र का आकार क्या होगा? कारनैल विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने संगीत पैदा करने वाला हार्प (तारवाद्य) बनाया है। उसका आकार हमारी रक्त कोशिका (ब्लड सैल) के बराबर है। यह वाद्ययंत्र सिलिकान (रेत) के एक कण को तराशकर बनाया गया है।

वाद्ययंत्र के तारों की मोटाई ५० नेनोमीटर है। उसमें ८०० से १००० नेनोमीटर लंबाई के कई तार हैं। एक नेनोमीटर एक मीटर के एक खरबवें हिस्से के बराबर होता है। यानी यदि १५० परमाणु जोड़े जाएं तो कोशिका के बराबर संरचना बनेगी। दिलचस्प बात यह है कि यह वाद्य बजता भी है। यह बात और है कि ऊंची आवृत्ति के कंपनों के कारण साधारण कानों से उसका संगीत नहीं सुना जा सकता।

यूरेनस पर आया बसंत : सौरमंडल के विशालकाय ग्रह यूरेनस पर आजकल बसंत की बहार है। वैज्ञानिकों ने हाल ही में पहली बार हबल दूरबीन की मदद से वहां का शानदार नजारा देखा। इसके पहले वहां के बसंत का हालचाल किसी को मालूम नहीं हो सका था क्योंकि यूरेनस का एक साल धरती के ८४ सालों के बराबर होता है। यूरेनस पर बसंत का मौसम सन् २००० तक रहेगा।

यूरेनस का बसंत कोई पिकनिक मनाने लायक नहीं है। वहां शेर की तरह दहाड़ते तेज तूफान चल रहे हैं। हां! बादल जरूर रंग-बिरंगे दिखाई देते हैं। वहां जमकर ठंड पड़ रही है। अनुमान है कि वहां तापक्रम शून्य से ३०० डिग्री फारेनहाइट नीचे है।

डी.एन.ए. से तार : कंप्यूटरों की चिपों और ट्रांजिस्टरों में जल्दी ही जीवित कोशिकाओं के वंशाणुओं का उपयोग होने लगेगा। स्विट्जरलैंड के वैज्ञानिकों ने वंशाणुओं में मौजूद डी.एन.ए. के धागों में बिजली बहाकर उनका उपयोग बिजली के तारों की तरह करने में सफलता पाई है।

डी.एन.ए. के बराबर मोटाई और लंबाई का किसी धातु से कोई तार अभी तक नहीं बन पाया है। डी.एन.ए. की मोटाई हमारे बालों की मोटाई से १४४ हजार गुना कम है। डी.एन.ए. के धागे आपस में जुड़कर लंबा तार भी बना सकते हैं। यदि डी.एन.ए. के भीतर बिजली की धारा बहाने और बंद करने का स्विच किसी तरह लग जाए तो उनका उपयोग कंप्यूटरों में होने लगेगा।

हंसी का फव्वारा : हंसी कहां से छूटती है, वैज्ञानिकों ने इसका पता लगा लिया है। उनका कहना है कि हंसी का केंद्र हमारे दिमाग के अगले हिस्से में होता है।

टोरंटो विश्वविद्यालय की डा. प्रतिमा शम्मी ने १८ से ७० साल के बीच की उम्र के ३१ लोगों की जांच-पड़ताल की। उनके दिमाग के विभिन्न हिस्से, चोट या आपरेशन के कारण काट कर अलग कर दिए गए थे। जब ऐसे लोगों को चुटकुलों की प्रश्नोत्तरी दी गई तो उन्होंने हंसी पैदा करने वाली पंक्ति पर कोई प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की। ज्यादातर लोगों ने दूसरी साधारण पंक्ति ही पसंद की। और भी कई प्रयोगों से यह नतीजा निकाला गया कि दिमाग का दाहिना अगला हिस्सा हंसी और अन्य भावनाओं को नियंत्रित करता है।

खतरे में है छुटका चूहा : अमरीका का नन्हा चूहा अब खतरे में है। उनकी संख्या घटकर दो हजार रह गई है। खारे दलदल की खरपतवार (पिकल वीड) पर पलने वाला यह चूहा केवल नौ ग्राम वजन का होता है। लम्बाई होती है सात सेंटीमीटर।

आम तौर से यह नन्हा चूहा खरपतवार की जड़ों के आसपास छिपा रहता है। भोजन के लिए यह गूदेदार खरपतवार कुतरता है। यही उसके जीवन के खतरनाक क्षण होते हैं। शिकारी चिड़ियां उसे झपटकर ले जाती हैं। उधर, खारे दलदल का इलाका भी तेजी से सूख रहा है। इस कारण यह विशेष खरपतवार भी घटती जा रही है।

—बृजमोहन गुप्त



शीर्षक बताइए

परिणाम

एक से बढ़कर एक बढ़िया शीर्षक आए। 'नंदन' मई' ९९ अंक में छपे चित्र के लिए इन शीर्षकों को पुरस्कार दिए गए।

हम सातों जब सैर को जाएं, इंद्रधनुष भी शरमा जाए।
—रेशम बागड़िया, ए/एच-२७ शालीमार बाग दिल्ली।

चली नानी के गांव, देखो हमारी प्यारी नाव।
—अंकुरिका गोयल,११०/७, परस मोहल्ला, बड़ा बाजार, रोहतक।

लिए अपनी नाव पुरानी, बढ़ चले सात हिंदुस्तानी।
— ग्रेस सोरेंग, ई—७/७६६, अरेरा कालोनी, भोपाल।

जैसी कल-कल नदी की धारा,
वैसा चुलबुल बचपन प्यारा।
—अनु म. नं. १२९८ आडिट कालोनी, सैक्टर-४१ बी चंडीगढ़।

इनके शीर्षक भी सराहे गए—अंकित मेहरोत्रा, वाराणसी; नरेशकुमार वर्मा, कोटा (राज.); नूतन नवीन, पटना; स्नेह थापा, बलांगीर (उड़ीसा); विभोर गुप्ता, मुजफ्फरनगर।

आप कितने बुद्धिमान हैं : उत्तर

१. जूताघर की एक चिमनी बड़ी है।
२. छत पर बैठी चिड़िया बीच में आ गई है।
३. सीढ़ी छोटी हो गई है।
४. आसमान में उड़ती एक चिड़िया गायब है।
५. टंगे हुए कपड़ों में एक मोजा कम है।
६. कोने में बैठे लड़के की टी-शर्ट पर चित्र बना है।
७. बीच में खड़ी महिला के बालों का स्टाइल बदल गया है।
८. दरवाजे का डिजाइन बदल गया है।
९. कोने का पेड़ ज्यादा फैला हुआ है।
१०. टोपी पहने व्यक्ति की कमीज पर सफेद क्रास है।

पुरस्कृत कथाएं :

लो, मोर पंख

पंडित रामनाथ कोई काम-धंधा नहीं करता था। धीरे-धीरे उसकी आर्थिक स्थिति भी खराब होती जा रही थी। ज्यादा पढ़ा-लिखा तो था नहीं, अतः कहीं नौकरी भी नहीं मिलती थी। आखिर एक दिन रामनाथ एक-दूसरे शहर के लिए निकल पड़ा।

शहर के बाहर रामनाथ ने अपना डेरा जमाया। किसी को पता नहीं था कि वह कहां से आया है। वह ज्योतिषी बनकर लोगों का हाथ देखने का काम करने लगा। इसी से उसका गुजर-बसर चल जाता था। धीरे-धीरे उसकी ख्याति सारे शहर में फैल गई।

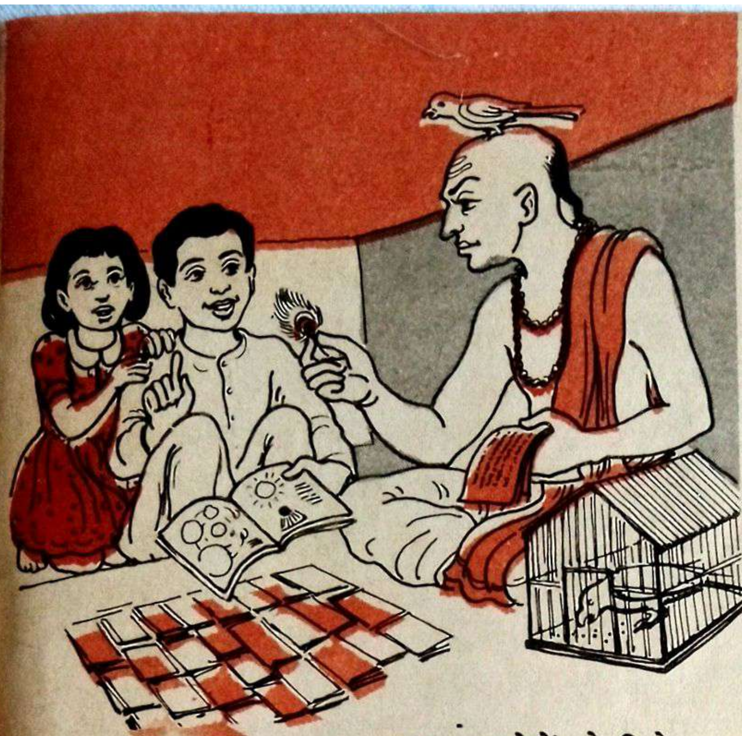
उसने एक तोता और बुलबुल पाली। लोग उससे अपना भविष्य पूछने आते। रामनाथ अपने तोते को पिंजरे से बाहर निकाल देता। तोता पास में रखे लिफाफों में से एक उठा लेता। उस लिफाफे में भविष्य फल होता था। लोग अपना भविष्य जानकर चले जाते। कभी-कभी उसकी बातें सच निकल आतीं। इससे लोगों का उस पर भरोसा बढ़ता गया।

उसी शहर में रहते थे—भोलू और मुनिया। दोनों स्कूल में पढ़ते थे। दोनों पढ़ने में कुछ कमजोर थे। उन्हें लगता-वे परीक्षा में फेल हो जाएंगे।

उन्होंने भी रामनाथ के विषय में सुना। बस फिर क्या था! दोनों ने निश्चय किया और स्कूल से भागकर रामनाथ के पास जा पहुंचे। वे सोच रहे थे, रामदास कुछ जादू कर देगा और वे अच्छे अंकों से परीक्षा में पास हो जाएंगे।

दोनों ने रामनाथ को अपनी समस्या बताई। सुनकर रामनाथ को बहुत दुःख हुआ। आज उसे पहली बार लगा कि वह गलत काम कर रहा है। रामनाथ को दोनों बच्चों पर दया आ गई। उसने बड़े प्यार से उन्हें बैठाया। अपनी झोली से एक मोर पंख निकाल, बच्चों को दिया। कहा—"यह मोर पंख श्रीकृष्ण भगवान के मुकुट में रहता है। उनका ध्यान करके खूब मेहनत से पढ़ाई करना। तुम्हें सफलता अवश्य मिलेगी।"

दोनों बच्चे घर लौटे। खूब मेहनत से पढ़ाई की।



कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया। दोनों को विशेष पुरस्कार दिया गया।

दोनों पुरस्कार लेकर सीधे रामनाथ के पास पहुंचे। उसे बताया। वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसे लगा—उसने पहली बार किसी को सही शिक्षा दी। उसने मन ही मन यह धंधा छोड़ने का निश्चय कर लिया। अब वह बहुत खुश था।

—आशि, होशंगाबाद (म. प्र.)

बाबा की बात

सुंदरपुर गांव एक पहाड़ी पर बसा था। उसी गांव में सोहन और गुड़िया रहते थे। दोनों भाई-बहन दूसरों के खेत में काम करते। अपना पेट पालते। उनके माता-पिता की बचपन में ही मृत्यु हो चुकी थी। लोग दोनों से नफरत करते। अपने घरों तक में न घुसने देते। सोहन इससे बहुत दुखी रहता था परंतु गुड़िया समझदार थी। वह उसे समझाती।

एक बार गांव में बाबा जी आए। वह लोगों का हाथ देखकर भविष्य बताते थे। गांव के लोग उनके पास जाते, अपना भविष्य जानते। बदले में खूब अनाज दे जाते।

एक बार सोहन भी उनके पास जा पहुंचा। साथ में गुड़िया भी थी। सोहन ने बाबा जी को हाथ दिखाया। बोला—"हमारे दुःख कब दूर होंगे बाबा?"

"हां, अब हम ऐसी जिंदगी जीते-जीते तंग आ गए हैं।"—कहते हुए गुड़िया फूट-फूटकर रो पड़ी।

बाबा ने दोनों बच्चों की ओर देखा। फिर बोले—"मैं तुम्हारा हाथ क्या देखूं। आज से तुम दोनों यहीं रहो। मैं तुम दोनों को शिक्षा दूंगा। तुम अवश्य ही एक दिन बड़े आदमी बनोगे।"

दोनों बच्चे बाबा जी के साथ दूसरे गांव में चले गए। आश्रम में रहने लगे। दोनों आश्रम की सफाई करते, खाना पकाते, फिर समय निकालकर पढ़ते। बाबा भी दोनों को खूब मेहनत से पढ़ाते।

एक दिन बाबा बोले—"बेटा सोहन! तुम अपने गांव जाओ। वहां के लोगों को तुम्हारी जरूरत है। सारी बात पता करके मुझे बताओ।"

सोहन, बाबा के कहे अनुसार अपने गांव पहुंचा। वहां के लोगों की स्थिति बहुत खराब थी। पूछने पर पता चला—गांव में एक राक्षस आता है। वह गांव के लोगों को पकड़कर मार डालता है। राजा ने घोषणा की है कि जो राक्षस को मार डालेगा, उसे विशेष इनाम दिया जाएगा।

सोहन बाबा जी के पास वापस पहुंचा। सारी बातें बताईं। बाबा जी गंभीर हो गए। फिर बोले—"बेटा, मैं इसी समय का इंतजार कर रहा था। यह लो दिव्यास्त्र। इससे राक्षस को मारकर लोगों का दुःख दूर करो।"

सोहन दिव्यास्त्र लेकर पहाड़ी पर जा पहुंचा। राक्षस ने उसे देखा तो चिल्लाता हुआ उसकी तरफ भागा। बाबा का नाम लेकर सोहन ने उस पर दिव्यास्त्र चलाया। लगते ही राक्षस वहीं ढेर हो गया। सारे गांव वाले खुशी से नाच उठे।

राजा ने विशेष समारोह में सोहन को पुरस्कार दिया। गांव वाले अब सोहन से प्यार करने लगे। यह देखकर गुड़िया भी बहुत प्रसन्न थी।

—दीपक कुमार, बांकीपुर, पटना

इनकी कहानियां भी पसंद की गईं : अजेता जौहरी, कानपुर; कुणालकुमार, समस्तीपुर; अंकिता शर्मा, हुगली (प. बं.); रवींद्रकुमार, मुजफ्फरपुर; भरतकुमार, शाहपुरा, भीलवाड़ा।

झील के किनारे

—कामाक्षी



प्रताप गढ़ के राजा विराजसिंह अपनी प्रजा के सुख के लिए हर सम्भव प्रयास करते थे। परंतु राजकुमार ऋषिराज सिंह बहुत ही उद्दंड था। नित्य नई शरारतें करके लोगों को सताना उसकी आदत बन चुकी थी।

एक दिन उसकी शिकायत लेकर पनिहारिनें महाराजा के पास आईं। राजकुमार ने उनके घड़े फोड़ डाले थे। महाराज ने तुरंत उनके लिए पीतल के कलश मंगवा दिए। राजकुमार ने जब चमचमाते कलश ले जाती पनिहारिनों को देखा तो उसने तेज बाणों के प्रहार से उनमें भी छेद कर दिए। पनिहारिनें फिर टूटे कलश लेकर राजकुमार की शिकायत करने राजदरबार में आ गईं। उस समय महाराज विराजसिंह किसी विदेशी दूत के साथ बातचीत में व्यस्त थे। ऐसे में राजकुमार की शिकायत सुन ,वह क्रोधित हुए। उन्होंने राजकुमार ऋषिराज को महल से निकल जाने का आदेश दिया।

जब राजकुमार ऋषिराज महल से जाने लगा, तो छोटा राजकुमार भी उसके साथ चल पड़ा। चलते-चलते रात होने लगी। वे दोनों जंगल में पहुंच गए थे। भूख-प्यास से दोनों का बुरा हाल था। साथ ही जंगल में आती जानवरों की आवाजों से उन्हें डर भी लग रहा था। अतः वे दोनों पेड़ पर चढ़कर बैठ गए और मन बहलाने के लिए बातें करने लगे। तभी जंगल में हंसी की आवाज गूंज गई।

उन्होंने आवाज की दिशा में देखने की कोशिश की। तब उन्हें जंगल के मध्य झील में क्रीड़ा करती सुंदर कन्याएं दिखाई दीं। दोनों राजकुमार चकित हो उन्हें देखते ही रह गए।

उन्होंने सोचा—'हम तो डर के कारण पेड़ों पर छिपे बैठे हैं और वे सुंदरियां आराम से खेल रही हैं।' अतः वे दोनों पेड़ से उतरकर उनके समीप जा पहुंचे। अपना नाम बताकर उन्होंने उनका परिचय पूछा।

पहले तो वे युवतियां एक-दूसरे को देखती रहीं। फिर उनमें से जो बड़ी थी, वह बोली—"हम तीनों जलपरियां हैं। मेरा नाम लालनदे है। यह मंझली हीरनदे है और यह सबसे छोटी फूलनदे है। हमें पानी से बाहर की दुनिया अच्छी लगती है। मनुष्य अच्छे लगते हैं पर हम कहीं आ-जा नहीं सकतीं। बस, एक पूर्णिमा की रात को हम जल से बाहर आती हैं।"

राजकुमार ऋषिपाल सिंह ने देखा, लालनदे जब हंसती थी तो उसके मुंह से लाल रत्न झर रहे थे। हीरनदे के मुंह से हीरे और फूलनदे के मुख से रंग-बिरंगे फूल झरते थे। राजकुमार हैरान था। तभी लालनदे ने उसे मुट्ठी भर लाल रत्न उठाकर दिए। परदेश से लौटकर आते समय फिर मिलने का आग्रह किया।

दोनों राजकुमार चलते-चलते दूसरे राज्य में पहुंचे। उन्हें तेज भूख लगी थी। एक हलवाई की दुकान पर जाकर उन्होंने भोजन मंगाया और खाने लगे। हलवाई ने पैसे मांगे, तो उन्होंने एक लाल रत्न निकाल कर दे दिया। हलवाई ने वह रत्न फेंककर सड़क पर दे मारा और नकद धन की मांग की।

उसी समय एक जौहरी वहां से गुजर रहा था। उसने धूप में किरणें बिखेरता रत्न देखा, तो वह उसका मूल्य जान गया। उसने रत्न उठाकर राजकुमार को दे

दिया तथा हलवाई को दाम चुकता कर दिया।

जौहरी उन दोनों राजकुमारों की वेशभूषा से समझ गया था कि वे किसी धनवान के पुत्र हैं। अतः उन्हें अपने साथ ले चला तथा अपनी हवेली में ठहरा लिया। राजकुमार ऋषिराज ने अपनी जेब से वे सारे लाल रत्न निकाल कर जौहरी को दिए। उससे अपनी दुकान पर कुछ काम सिखाने का आग्रह किया। इतने सारे रत्न देख, जौहरी की आंखें चौंधिया गईं। वह उनसे बोला—"इतने रत्नों का मोल तो हमारे राजा ही दे सकते हैं।"

फिर वह लाल रत्न राजा ने खरीद लिए। राजकुमार को खूब धन दिया और उन रत्नों का एक सुंदर हार अपनी बेटी के लिए बनवा दिया।

राजकुमारी हार पहनकर खेलने गई तो उसकी सखियां बोलीं—"हार जैसे ही कानों के बुंदे और नाक की नथ होती, तो कितना अच्छा लगता।"

महल में आकर राजकुमारी रूठ कर बैठ गई। सबने मनाया, सबने पूछा, पर कुछ न बोली। अंत में राजा मनाने आए, तो बोली—"ऐसे ही लाल रत्नों के बुंदे और नथ बनवाकर दीजिए नहीं तो मैं किसी से बात नहीं करूंगी।"

राजा ने जौहरी को बुलाकर कहा—"ऐसे ही और लाल रत्न लाकर दो, नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं।"

जौहरी ने राजकुमारों को धमकाया—"राजा जी कहते हैं, वैसे ही और लाल रत्न लाकर दो नहीं तो कैद कर लिए जाओगे। फिर मार दिए जाओगे।"

फिर उसने छोटे राजकुमार को अपने पास रोक लिया। ऋषिराज से कहा—"जब लाल रत्न ले आओगे, तभी तुम्हारे भाई को छोड़ा जाएगा।"

राजकुमार चलते-चलते जंगल में उसी झील के किनारे पर जाकर बैठ गया। पूर्णिमा की रात्रि में जब पूरा चांद आकाश में अपनी चांदनी बिखेरने लगा तो तीनों जलपरियां जल से निकल आईं। राजकुमार को देख वे प्रसन्न होकर कहने लगीं—"तुम्हें हमारी याद आई। तुम हमसे मिलने आए हो?"

राजकुमार उदास होकर बोला—"नहीं लालनदे, मैं तो अपने स्वार्थवश यहां आया हूं। उन लोगों ने मेरे भाई को बंदी बना लिया है।" और उसने पूरी बात कह सुनाई।

अब लालनदे गंभीर होकर बोली—"राजकुमार, तुम्हें अपने पिता की बात का बुरा मानकर अपना घर नहीं छोड़ना चाहिए था। तुमने देख लिया न, घर से बाहर कितनी परेशानियां आती हैं।जितनी सहनशीलता तुममें अब आ गई है, वैसी ही तब होती, तो तुम अपने पिता से क्षमा मांग सकते थे।"

राजकुमार शर्मिंदा हो गया। उसने लालनदे को वचन दिया—"मैं अपने भाई को छुड़ाकर लाने के बाद अपने पिता के पास जाकर क्षमायाचना करूंगा। एक परोपकारी, दयालु व आज्ञाकारी पुत्र के रूप में रहूंगा।"

यह सुनकर लालनदे प्रसन्न हो गईं। उसके होठों पर हंसी आ गई और लाल रत्न झरने लगे। राजकुमार ने उसकी आज्ञा लेकर कुछ लाल रत्न उठाए और धन्यवाद देकर चल पड़ा।

राजदरबार में जाकर राजकुमार ऋषिराज सिंह ने लाल रत्न महाराज के सामने रखे और अपने भाई को मुक्त करने को कहा। महाराज को तब तक छोटे राजकुमार द्वारा पता चल चुका था कि ये दोनों प्रतापगढ़ के राजा विराजसिंह के पुत्र हैं। अतः उन्होंने बड़े राजकुमार के साथ अपनी बेटी का विवाह कर दिया। ढेरों सामान देकर सुंदर घोड़ों वाली बग्घी में उन्हें विदा किया। सुरक्षा केलिए सैनिक भी भेजे।

बग्घी जब जंगल के बीच पहुंची, तो राजकुमार हैरान रह गए। जंगल में मंगल हो रहा था। वहां सफेद संगमरमर का बना महल खड़ा था। उन्होंने बग्घी रुकवाई। तभी महल के दरवाजे पर सुंदर वस्त्र पहने लालनदे, हीरनदे और फूलनदे हाथों में फूलों के हार लिए आ गईं।

ऋषिराज सिंह के लौटने की खबर सुनकर राज्य में उल्लास छा गया। दोनों राजकुमारों ने अपने पिता के चरण छूकर क्षमा मांगी। महाराज ने उन्हें गले से लगा लिया। ●

नई पुस्तकें

इक्कीसवीं सदी का भारत—लेखक : डा. अब्दुल कलाम, वाई. सुंदरराजन; प्रकाशक : राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, दिल्ली; मूल्य: दो सौ रुपए।

"मैं विकसित भारत में जीना चाहती हूं"— दस साल की एक लड़की ने डा. कलाम से कहा था। यह पुस्तक उसी बच्ची को समर्पित है। 'क्या भारत अगले बीस साल में पहली दुनिया का देश बन सकता है ?'—हां, भारत रत्न डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ऐसा मानते हैं। स्वाधीनता के पचास साल बाद भी देश में समस्याएं कम नहीं हैं—गरीबी, बेरोजगारी, शिक्षा की कमी आदि। सरल ढंग से लिखी गई यह पुस्तक आशा और विश्वास जगाती है। खेती, उद्योग, विज्ञान, स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में नया कुछ करने की प्रेरणा देती है। इसकी योजना रखती है। किशोरों-युवकों को अवश्य पढ़नी चाहिए।

पाताल की परी —लेखक : आर. पी. सिंह ; प्रकाशक : मेधा कंप्यूटर्स, नंद भवन, कावाखेड़ा पार्क, भीलवाड़ा (राज.) ; मूल्य : २५ रुपए।

राजू वैज्ञानिक बनना चाहता है। सपने में वह वैज्ञानिक बनकर पाताल लोक जा पहुंचता है। वह जलपरियों की रानी को हराकर उसका दिल जीत लेता है। बाल उपन्यास साधारण है और चित्र अच्छे नहीं हैं।

मानव धर्म के प्रेरक संत कबीर—लेखिका : हेम भटनागर ; प्रकाशक : संस्कार, १८, चित्र विहार, दिल्ली-९२ ; मूल्य:४० रुपए।

कबीर का जन्म कैसे हुआ, उनका बचपन कैसे बीता। कैसे साधु-संतों की संगत में वह बड़े हुए। किन-किन कष्टों को झेलकर वह अपने पथ पर आगे बढ़े—इनका पुस्तक में रोचक वर्णन है। पुस्तक पढ़कर बच्चे कबीर के जीवन को समझ सकते हैं। कबीर के कुछ दोहे अर्थ सहित दिए गए हैं।

सरस बाल कथाएं : लेखक : रमाकांत 'कांत' ; प्रकाशक :साहित्यागार ,धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर ; मूल्य : ८० रुपए।

पुस्तक में २१ कहानियां हैं। इनमें कुछ कहानियां 'नंदन' में छप चुकी हैं। कई कहानियां अच्छी हैं। जैसे 'नानी ने छुड़वाई चोरी', 'अणचू का हीनताबोध', 'जियारत की सच्चाई' आदि। नानी के घर एक चोर चोरी करने आया। नानी ने उसे खाना खिलाया। फिर खुद ही सारा धन निकालकर उसे दे दिया। चोर ने नानी की बात मानकर चोरी करना छोड़ दिया। कहानियों की भाषा सरल है। पुस्तक के चित्र साधारण हैं।

तालाब के पास

—अमर गोस्वामी

मनोहर के माता-पिता गरीब थे। उनके यहां दो वक्त का खाना भी मुश्किल से जुटता था। अपने परिवार की हालत देखकर मनोहर को लगता कि वह कुछ ऐसा करे जिससे गरीबी दूर हो सके।

गांव के दूसरे बच्चे अध्यापक नंदलाल से पढ़ने जाते थे। नंदलाल लालची किस्म का अध्यापक था। वह बच्चों से पढ़ाने के बदले अच्छी रकम लेता। उनके खेतों में जो कुछ शाक-भाजी व अन्न पैदा होता, वह भी मांगता।

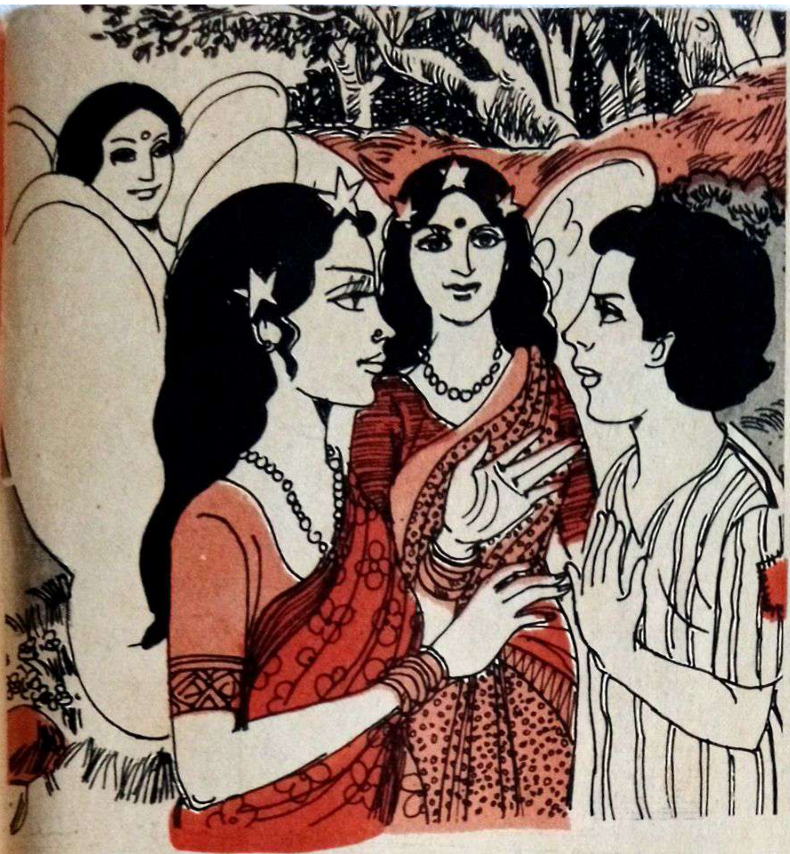
मनोहर अपने साथियों को पढ़ते देखता तो उसका भी मन पढ़ने को करता लेकिन अध्यापक की फीस और दूसरा सामान कहां से लाता ? कई दिन वह सोचता रहा। फिर एक दिन नंदलाल के पास जा पहुंचा। बोला —"दूसरे बच्चे पढ़-लिखकर आगे बढ़ जाएंगे। आप मुझे भी पढ़ाने की कृपा करें।"

नंदलाल ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा। फिर बोला —"बेटा, तुम्हें जरूर पढ़ाऊंगा। लेकिन देने के लिए कुछ दान-दक्षिणा लाए हो ?"

यह सुनकर मनोहर उदास हो गया। वह समझ नहीं पा रहा था कि कैसे अपने पढ़ने की इच्छा को पूरी करे।

गांव के बाहर एक पक्का तालाब था। उसे राजा का तालाब कहते थे। तालाब के दूसरी तरफ जंगल था। मनोहर अक्सर गांववालों के जानवर उधर ही चराने ले जाता। जंगल में पेड़ों के नीचे गिरी सूखी लकड़ियों को बटोर लाता। उन्हीं से चूल्हा जलता। आज उसने अपने जानवर दूसरे चरवाहों के साथ कर दिए थे। खुद नंदलाल से मिलने चला गया था। वहां से वह तालाब के किनारे आकर बैठ गया।

शाम हो चली थी। चरवाहे जानवरों के साथ लौट रहे थे। चारों ओर घंटियों की मधुर धुन सुनाई दे रही थी। धीरे-धीरे घंटियों की आवाज दूर होती चली गई। लेकिन मनोहर वहीं बैठा रहा। वह बहुत उदास



था ।

रात घिर आई । आसमान में चांद निकल आया । लेकिन मनोहर का अपने घर जाने को मन नहीं कर रहा था । तभी उसे किसी के गाने की आवाज सुनाई दी । वह ध्यान से देखने लगा । गाने की सुरीली आवाज अब भी आ रही थी मगर कोई दिखाई नहीं दिया ।

रात को कुछ परियां उस तालाब के किनारे उतरा करती थीं । वे किसी को दिखाई नहीं देती थीं । जब परियां वहां आईं तो उन्होंने एक बालक को वहां उदास बैठे देखा । वे गाना भूलकर, अपने असली रूप में मनोहर के सामने प्रकट हो गईं । पूछने लगीं कि इतनी रात गए वह वहां क्यों बैठा है ।

मनोहर ने परियों के बारे में सुना था कि वे मुसीबत में फंसे लोगों की मदद करती हैं लेकिन आज परियां उसके सामने ही खड़ी हैं, उसे विश्वास नहीं हुआ । वह चकित हो उन्हें देखता ही रह गया । परियों ने जब बार-बार पूछा तो उसने सारी बात बता दी ।

उसकी बात सुनकर एक परी बोली —"बस, इतनी-सी बात । तुम्हारी इच्छा पूरी होगी । अब तुम अपने घर जाओ । लेकिन हमसे मिलने की बात किसी को मत बताना । जल्दी ही सब ठीक हो जाएगा ।"

परियों से विदा लेकर मनोहर घर चला आया । माता-पिता को भी उसने कुछ नहीं बताया । बहुत देर तक उसे नींद नहीं आई ।

उसी रात नंदलाल को सपने में परियां दिखाई दीं । एक परी ने कहा —"लालची होकर जीवन बिता रहे हो । इसका फल बुरा होगा । मनोहर जैसे गरीब बच्चों की मदद करना तुम्हारा धर्म है । अगर ऐसा नहीं करोगे तो ठीक नहीं होगा ।"

नंदलाल की नींद टूट गई । वह घबरा गया । उसे जोरों की भूख भी लगी थी । वह रसोईघर में गया । वहां पत्नी ने खीर बना रखी थी । अंधेरे में नंदलाल को ठोकर लगी और बरतन धड़ाधड़ गिरने लगे । पत्नी को लगा कि रसोई में बिल्ली घुसी है । वह दौड़ी आई । नंदलाल को वहां देखकर चकित रह गई । लेकिन सारी खीर फैल गई थी । यह देखकर पत्नी उसे भला-बुरा कहने लगी । बोली —"इतनी मेहनत से खीर बनाई थी । बिना खाए ही फैल गई ।"

नंदलाल ने इसे अपशकुन समझा । सोचने लगा कि यदि परियों की बात नहीं मानी तो सचमुच कुछ बुरा हो जाएगा । बस, वह सुबह होने का इंतजार करने लगा ।

सुबह होते ही वह मनोहर के घर की तरफ चल पड़ा । वहां पहुंचा तो मनोहर के माता-पिता हाथ जोड़कर खड़े हो गए ।

नंदलाल ने कहा —"मनोहर कहां है ?"

मां ने बताया कि वह तो अभी सोकर नहीं उठा है ।

"उठ जाए तो उसे पढ़ने भेज देना । आज से उसका जानवर चराना बंद ।"— नंदलाल बोला ।

"मास्टर जी, आपकी दक्षिणा ।"— मनोहर के पिता ने पूछा ।

"मनोहर मेरे बेटे जैसा है । अपने बेटे से भी कोई दान-दक्षिणा लेता है ।"— कहता हुआ नंदलाल चला गया ।

मां ने मनोहर को उठाकर सारी बात बताई । वह मुसकरा दिया । उसने मन ही मन परियों को धन्यवाद दिया और पढ़ने जाने की तैयारी करने लगा । ●

पत्र - मित्र

सम्पादक, 'नंदन', नई दिल्ली-१

नाम —————————— आयु ———

पूरा पता ——————————

——————————

रुचि ——————————

पुस्तक पढ़ने और लेखन में रुचि :

१. हेमंत गोयल, १७ वर्ष, पवनकुमार, डा. के.पी. सिंगला स्ट्रीट, वाटर वर्क्स रोड, मनसा (पं.); २. सीमा सिन्हा, १२, मु.+पो. भोजपुर, वाया रोहिणी, देवघर; ३. राकेशकुमार राय, १५, टी-९८/१४, कमरा नं. ४, प्रथम मंजिल, चिराग दिल्ली, नई दिल्ली; ४. विजयप्रकाश दास, १६, मेवालाल साव की बाड़ी, ८२/एच/३१, इकबालपुर लेन, कलकत्ता; ५. मनोजकुमार 'छोटू', १७, ग्रा. जगासुर, पो. पाथूरिया, जि. बोकारो; ६. रामचंद्र तिवारी, १४, केशव तिवारी, राजस्थान गेस्ट हाउस, रामघाट, हरिद्वार; ७. अविनाशकुमार सैनी, १४, २२/८, गौतम नगर, नई दिल्ली; ८. श्रीधर भगत, १३, रामकृपाल भगत, १४५-बी., रास बिहारी एवेन्यू, गरियाहाट, कलकत्ता; ९. ओमवीर रस्तोगी, १५, श्री कामतलाल रस्तोगी, २४/८, डाकबंगला रोड, पटना; १०. राहुलकुमार मिश्र, १७, एस.पी. मिश्र, डाकपाल-करछना शाखा, ग्रा. मुंगारी, पो. करछना आर.एस., इलाहाबाद; ११. संतोषकुमार पाटीदार, १७, पाटीदार छात्रावास, आई.टी.आई. कालेज के पास, मेक्सी रोड, उज्जैन; १२. मानव तिवारी, १५, वन विभाग कालोनी, स्वर्ग मार्ग, मथुरा; १३. आसिफ सिद्दिकी, १२, वार्ड नं. २०/२७ सहरसा (बि.); १४. अनु, ८, रवींद्रकुमार, जयप्रकाश कालोनी, मधुबनी, जि. पूर्णिया; १५. सचिनकुमार साहा, १६, ग्रा.+पो. चितरडीह, थाना जमुआ, जि. गिरीडीह; १६. मनीषकुमार गुप्ता, १५, भरहापुर, खानपुर, छपरा (सारण); १७. अजय यादवेंद्रनाथ शर्मा, १७, पुरानी सब्जी मंडी, धमेटा रोड, जसूर, जि. कांगड़ा (हि.प्र.); १८. उत्पल कांत, १४, वीरेंद्रकुमार, लोकेश्वरी विद्यालय के पास, रेलवे हंटर रोड, प. लोहानीपुर, कदमकुआं, पटना; १९. आशीष मित्तल, १३, द्वारा किशन नारायण एंड संस, बड़ा बाजार, एटा (उ.प्र.); २०. मेराज अहमद, १२, शहाबुद्दीन, ३, आर.डी. पुल चौक, पो. वाल्मीकि नगर, जि. प. चम्पारण; २१. शहनवाज अनवर, १६, वाटिका शू, सब्जी बाजार, सहरसा; २२. रीटा सिन्हा, १५, म.नं. १०२, वार्ड नं. २४, विवेकानंद भवन, पंत नगर, नैनीताल; २३. अनिलकुमार, १४, डी. २८५, नेताजीनगर, बालाघाट, जबलपुर।



नंदन ज्ञान-पहेली : ३६५

परिणाम

इस बार पाठकों ने पहेली हल करने में खूब दिमाग लगाया। इतने सर्वशुद्ध हल आ गए कि विजेताओं के नाम तय करने के लिए लाटरी का सहारा लेना पड़ा। पुरस्कार की राशि इस प्रकार बांटी जा रही है—

सर्वशुद्ध : पचीस : प्रत्येक को साठ रुपए

१. श्यामसुंदर अग्रवाल, दुर्गापुर; २. विजयसिंह राणा, सुंदर नगर; ३. आयुषकुमार, दिल्ली; ४. भावेश पालीवाल, कपासन (चित्तौड़गढ़); ५. नीरजा सिंह, सहारनपुर; ६. अनामिका चौरसिया, सागर; ७. शिखा कटारिया, दिल्ली; ८. रुचि सिन्हा, पटना; ९. सोमा सिंह, बड़गांव (गोंडा); १०. अनिमेष घोष, सिहोरा; ११. शकुन जैन, दिल्ली; १२. पुनीतकुमार शर्मा, मेरठ; १३. प्रीति गुप्ता, दिल्ली; १४. रवींद्रकुमार, फैजाबाद; १५. पीयूष भार्गव, रेवाड़ी; १६. विधि जैन, इंदौर; १७. अमित कुमार जोशी, जोधपुर; १८. मनन शर्मा, करनाल; १९. आकांक्षा घाणेकर, झांसी; २०. विशाल बाथम, ग्वालियर; २१. मु. राशिद खां, बरेली; २२. रजनी कुमारी, गया; २३. अभिषेक नारायण वर्मा, बरहज (देवरिया); २४. शबाना आजमी, लाखेरी (बूंदी); २५. प्रजापति नीतू, अहमदाबाद।

दी हिन्दुस्तान टाइम्स लिमिटेड की ओर से राकेश शर्मा द्वारा हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस
१८/२०, कस्तूरबा गांधी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ में मुद्रित तथा प्रकाशित
कार्यकारी अध्यक्ष : दीपक शौरी



अंकल चिप्स अमेज़ोस
आओ मज़ा लो!
FREE AMAZZO
INSIDE EVERY PACK*
SUPER AMAZZO
MAGNETIC MAZZO
Uncle Chipps'

रजि. नं. डी. एल. –२७००५/९९ आर. एन. आई. नं. १०५२५/६४